परोपकाराय सताम् विभूतयः



श्रीमद्देवेन्द्रसूरिविरचितम्

चैत्यवंदनादि भाष्यत्रयम्.

स्वधर्मी भाइओ बहेनोने भणवा निमित्ते
छपावी प्रसिद्ध कर्यां.

श्री जैन श्रेयस्कर मंडल तरफथी
वेणीचंद सुरचंद शाह.—म्हेसाणा.

आवृत्ति बीजी   कीं. ०-६-०   प्रत १०००.

अमदावाद-श्री 'सत्यविजय' प्रिन्टिंग प्रेसमां
सा. सांकलचंद हरीलाले छाप्युं.
पांचकुवा-बहारदरवाजा.

संवत् १९६९. वीर संवत् २४३९. सने १९१३.

वांचो.

पुस्तकने जेम तेम ज्यां त्यां रखडतुं मूकवुं नहि.
अशुद्ध हाथे पुस्तकने अडकवुं नहि, तेमज
उघाडे मुखे पुस्तक वांचवुं नहि.

सर्वेऽपि सन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामयाः;
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चित्पापमाचरेत्. १

भावार्थः—सर्व कोइ प्राणी सुखी थाओ, सर्व जीवो निरोगी थाओ, सर्व प्राणीओ कल्याण पामो, कोइ पण जीव पापनुं आचरण न करे !

धर्मबिन्दु.

प्रस्तावना.

ए तो सर्व कोइने सुविदितज छे के जेम जेम जमानो बदलातो जाय छे तेम तेम भाषानो फेरफार काळ क्रमे थतो जाय छे, तेटला माटे चालु जमानानी भाषामां लखायेला ग्रंथो जनसमूहने विशेष उपयोगी थाय एटला माटे पूर्वाचार्य कृत ग्रंथो चालु जमानानी वसावली भाषामां लखायेला भाषांतरो साथे अथवा नवीन कोइपी विद्वान मुनि महाराज तथा श्रावक वर्गना लखेला ग्रन्थोने छपावी विना मूल्ये के अल्प मूल्ये आपवाना हेतुथी अमारो प्रयास आज केटलांक वर्ष थयां चालु छे. ज्ञान दान ए मोक्ष प्राप्तिनो सरळ मार्ग छे तेटला माटे सर्व कोइने ओछा खर्चथी वधारे लाभ आवा पुस्तको द्वारा मळे ए सबब प्रथम साचववानो अमारो खास उद्देश छे.

व्यावहारिक के धार्मिक कोइ पण जातनी क्रिया तेनो संपूर्ण हेतु स्वरूप, विधि, फळ वगेरे समज्या विना करवामां आवे तो तेथी जोइए तेटलो लाभ प्राप्त थतो नथी, तथा धर्म पामवाना पुष्टालंबनरूप देवगुरुनी भक्ति अने तपश्चर्या छे. तेथी तेनुं दरेक आवश्यकनुं हेतु साथेनुं ज्ञान बाळजीवोने सेहेलाइथी मळे तेटला माटे अमोए अमारी ग्रंथमाळाना २३ मा मणका तरिके श्री चैत्यवंदनादि भाष्यत्रयं अर्थ साथे प्रसिद्ध करेल छे.

आ ग्रंथना प्रणेता आश्री थोडुंक वर्णन अत्र आपवुं प्रासंगिक छे. श्री तपगच्छरूपी गंगा प्रवाहने हिमालय तुल्य श्रीमद् जगच्चंद्र सूरि के जेमने आर्यबिल तपना प्रभावथी चित्तोडना

राणाए घणा यइ ' तपा ' एवुं बिरुद आप्युं (जेथी तपागच्छ-नाम पड्युं) अने ते राणानी सभामां दिगंबराचार्यो साथे वाद करतां हिरा पेठे जे अभेद्य रह्या थी जेमने 'हिरला जगच्चंद्र सूरि' एवुं पण बिरुद राणाश्रीए आप्युं हतुं. तेमना शिष्य श्रीमद् देवेंद्र सूरिए त्रण भाष्यात्मक आ ग्रंथ रचेलो छे. उक्त महात्माए आ सिवाय १ वंदारुवृत्ति २ सारवृत्ति दशा ३ कर्मग्रंथ दीपाल्प-मोपहा ४ सिद्धपंचाशिका, ५ श्राद्धदिनकृत्यसूत्रवृत्ति ६ धर्म-रत्नवृत्ति ७ नविन कर्म ग्रंथ पांच वृत्ति सहित,८ सिद्ध दंडिका-स्तव ९. सुदर्शन चरित्र १० सिरिउसहवद्धमाण प्रमुख स्तवनो वगेरे ग्रंथो बनावी महदुपकार कर्यो छे. तेमने ' विद्यानंद ' अने 'धर्मकिर्त्ति' उपाध्याय नामना बे शिष्यो हता. धर्मकिर्त्तिने पाछळ-थी सूरिपद मळ्युं त्यारे तेमनुं ' धर्मघोषसूरि ' एवुं नाम पड्युं तेओ देवेंद्रसूरिनी पाटे आव्या. तेमणे पण शत्रुंजयादि तीर्थना कल्पो, चोविशजिननी स्तुति नंदिस्तुति वगेरे संस्कृत ग्रंथो तथा केटलाएक प्राकृत प्रकरणो अवचूरि साथेना बनावेला छे.

आ ग्रन्थमां चैत्यवंदन, गुरुवंदन अने पच्चक्खाण एम त्रण भाष्य अनुक्रमे मूळ अर्थ अने विवेचन साथे आपवामां आवेल छे.' चैत्यवंदन भाष्य' मां चैत्यवंदन करती वखत ध्यान राखवा योग्य बाबतोनुं २४ द्वार वडे वर्णन करेल छे, ते आ प्रमाणे—१ दश त्रिक, २ पांच अभिगम, ३ कइ दीशाए रही चैत्यवंदन करवुं, ४ त्रण प्रकारना अवग्रह; ५ त्रण प्रकारनी वंदना, ६ प्रणि-पात–पंचांग प्रणाम, ७ नमस्कार केटला करवा, ८ चैत्यवंदनमां

आवर्त्तो गुरुना अक्षरो, ९ पदो अने १० संपदा (विसामा) नी संख्या-मान, ११ पांच दंडक, १२ देववंदनना बार अधिकार, १३ चार वंदन करवा योग्य, १४ स्मरण करवा योग्य केटला?१५ चार प्रकारे जिन, १६ चार थोयना हेतु, १७ आठ निमित्त, १८ बार हेतु, १९ काउस्सग्गना १६ आगार, २० काउस्सग्गना १९ दोष, २१ काउस्सग्गनुं प्रमाण, २२ स्तोत्र-स्तवन केवां प्रकारनां पर्वा जोइए, २३ सात वखत चैत्यवंदन अने २४ त्याग करवा योग्य दश आशातना. ए प्रकारना वर्णनथी प्रथम भाष्य पूर्ण थाय छे. त्यार पछी 'गुरुवंदनभाष्य' शरु थाय छे. तेमां त्रण प्रकारनुं वंदन, तेमां थोभवंदन पैकी बे वखत पंचांग प्रणाम शा हेतुए करवो, द्वादशावर्त्तवंदन केवी रीते थाय, केवा प्रकारनुं वंदन कोने करवुं ? पांच प्रकारना वंदन कोने, कोणे, शामाटे, केटलीवार करवा ? वंदनना बावीश द्वार जेवां के-वांदणाना पांच नाम, पांच उदाहरण, पांच अवंदनीय, पांच वंदनीय, चार अदाता, चार वंदनना दाता, पांच स्थानके वंदननो निषेध, चार स्थानके वंदननी आज्ञा, आठ कारणे वांदणा देवा, पचीश आवश्यक, मुहपत्तिनी २५ पडिलेहणा, शरीरनी २५ पडिलेहणा, बत्रीश दोष रहित वंदन करवुं, वांदणाथी नियमना छ गुण, गुरु स्थापनानुं वर्णन, बे अवग्रह, वंदन सूत्रना २२६ अक्षर, २५ गुरु अक्षर, पद ५८, छ गुरु वचन, वर्जवा योग्य आशातना तेत्रीश,बे प्रकारनो संक्षिप्त प्रतिक्रमण विधि, एम बावीस द्वारनुं स्वरूप अनुक्रमे वर्णवीने गुरुवंदन-

भाष्य सम्पूर्ण थाय छे, त्यार बाद 'पच्चक्खाण भाष्य' शरु थाय छे. जेमां दश प्रकारनां पच्चक्खाण, पच्चक्खाणना चार विधि, आहारना प्रकार, बावीश आगार, दश विगइ, त्रीश निवियातां, बे प्रकारना भांगा, छ प्रकारनी शुद्धि, अने पच्चक्खाणनुं फळ, ए द्वारो अनुक्रमे वर्णवेला छे.

त्यार बाद अभ्यासीओने शब्द बोध साथे अर्थ शीघ्रता सुगम पडे माटे भाष्य पछी उपदेश रत्नकोश अने रत्नाकर पञ्चविंशतिका अर्थ साथे दाखल करेल छे. नीतिमय व्यवहार चलाववानुं इच्छता दरेक मध्यस्थ जनोने उपदेश रत्नकोशना दरेक हितवचन हृदयमां धारण करी तेने आचारमां लाववा जरुर छे.

ए रीते एकंदर अत्यंत उपयोगी आ विधि प्रतिपादक ग्रन्थ दरेक जिनआज्ञा रुचि भाइ बहेनोने खास भणवा योग्य छे, तेम छतां प्रमादवशात् अगर मति मंदताथी अभ्यास न करी शके तेवोओए पण खास करीने बे चार वखत पण आ ग्रन्थनुं वांचन मनन करवानी आवश्यकता छे.

आ विषयने उपयोगी श्रीमान हरिभद्र सुरिकृत पूजा पंचाशक, चैत्यवंदन पंचाशक अने दीक्षा पंचाशकना मुनिश्री 'कर्पूरविजयजी महाराजना लखेला' भाषांतरो अमारा तरफथी प्रगट थयेला भाष्यत्रयमूला गुजराती पुस्तकमां आपेलां छे, ते, तथा 'जैनहितबोध'मां विविध विषय संग्रहना हेडींग नीचे दशत्रिक, पांच अभिगम, ८४ आशातना, देव गुरुना अवग्रहनी मर्यादा, अष्ट प्रकारी पूजाना पवित्र हेतु वगेरे बाबतनो घणो

स्फूट सरळ उल्लेख उक्त मुनिश्रीए करेलो छे ते खास मनन करवा योग्य होवाथी तेने संपूर्ण वांचवा माटे खास भलामण करवामां आवे छे.

आ ग्रन्थनी पहेली आवृत्तिनी १२५० नकल 'श्रीमन्महोपाध्याय श्रीयशोविजयजी जैन संस्कृत पाठशाळा मेसाणा' तरफथी छपाइ हती पण ते घणी खुटी थइ रहेवाथी आ बीजी आवृत्ति अमोए छपावी छे.

श्रीमद्देवेन्द्रसूरि कृत भाष्य उपर ' श्री ज्ञानविमलसूरिए बनावेला 'टबा' अने 'सोमसुंदर सूरिकृत अवचूरिनी' जुनी प्रतोना आधारे आ आवृत्तिमां मूळ तेमज बाळावबोधमां केटलेक सुधारो कर्यो छे जेथी प्रथम आवृत्ति करतां आ आवृत्ति सर्वे कोइने विशेष आवकार दायक थइ पडशे.

आ ग्रन्थ छपाववामां श्री कच्छ–नळीआ निवासी शेठ हीरजी हंसराजना धर्मपत्नी बाइ हीराबाइ तरफथी रु. ५०) तथा श्री कोडाय निवासी शेठ जेचंद खीमचंद तरफथी रु.५०) मळी रु. १००) नी अमोने मदद मळी छे जेथी मुनिमहाराजाओने आ ग्रन्थ भेट दाखल आपी शकाशे.

छेवटे द्रव्य सहाय आपनारा सद् गृहस्थोनो अंतःकरणथी आभार मानी, ग्रन्थ छपाववामां मतिमंदताथी,के दृष्टि दोषथी जे भूलो रही होय तेने माटे त्रिविध मिच्छामि दुक्कडं आपी, विद्वानोने सुधारीने वांचवानी विनंति करी विरमीए छीए. इतिशम्.

ली० प्रसिद्ध कर्त्ता.



श्रीदेवेंद्रसूरिविरचितं चैत्रवंदनादिजाष्यत्रयम्

बालावबोधसहितं प्रारभ्यते.

तत्र प्रथमं

श्रीचैत्यवंदनजाष्यं प्रारंजोऽयं

ग्रंथकर्ता मंगलाचरण माटे गाथा कहे छे.

वंदित्तु वंदणिज्जे, सव्वे चिइवंदणाइ-सु-वियारं ॥ बहु-वित्ति-जास-चुण्णी-सुयाणुसारे-ण-वुछामि ॥ १ ॥

बालावबोध कर्तानुं मंगलाचरण कहे छे.

प्रणम्य प्रणतानंद-कारकं विघ्नवारकं ॥ श्रीमद्विजयदेवाहं, तत्सद्भावण्यधारकम् ॥ १ ॥–

के०) श्रुतने अनुसारे (वुच्छामि के०) कहीश. परंतु महारी मतिकल्पनाये नहीं कहीश. एटले धर्मरुचि जीवोने पंचांगी सम्मत चैत्यवंदनादिकनो विधि कहीश. कारण के समकितनुं बीज तो शुद्ध देव, शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्मनुं स्वरूप जाणवुं, अने सद्दहवुं ते छे. माटे प्रथम अढार दोष रहित, निष्कलंक एवा जे श्रीअरिहंत ते शुद्ध देव छे. तेना स्थापनादिक चारे निक्षेपा वांदवा योग्य छे, तो इहां चैत्यशब्दे श्रीअरिहंत तथा श्रीअरिहंतनी प्रतिमा जाणवी. तेनी जे वंदना करवी. ते विधि सहित करवी; ते विधि कहीश ॥ इति ॥ १ ॥

हवे ते चैत्यवंदननो विधि मूल तो चोवीश द्वारे समवाय छे, ते चोवीशना वली उत्तर भेद २०७४ थाय छे. माटे चोवीश द्वारनां नाम, प्रत्येक द्वारना उत्तर भेदनी संख्या सहित चार गाथाये करी कहे छे.

दहतिग अहिगम–पणगं, दुदिसि तिहु-

गह तिहा उ वंदणया ॥ पणिवाय–नमुकारा, वणा सोल–सय–सीयाला ॥ २ ॥ इगसीइ सयं तु पया, सगनउइ संपयाउ पणदंमा ॥ बार अहिगार चउवं,–दणिज्ज सरणिज्ज चउह जिणा ॥ ३ ॥ चउरो थुइ निमित्तठ, बारह हेऊ अ सोल आगारा ॥ गुणवीस दोस उस्सग्गमाण थुत्तं च सगवेला ॥ ४ ॥ दसआसा यणचाउ, सव्वे चिइवंदणाइ ठाणाइं ॥ चउवीस दुवारेहिं, दुसहस्सा हुंति चउसयरा ॥५॥ इति दारगाहा ॥

अर्थ–प्रथम देव वांदतां नैषेधिकी आदि (दहतिग के०) दश त्रिक साचववा जोइये, तेनुं द्वार कहीश, बीजुं (अहिगमपणगं के०) अभिगमपंचक एटले पांच अभिगमनुं द्वार कहीश, त्रीजुं देव वंदन करतां स्त्रीने कयी दिशाये अने पुरुषने कयी दिशाये उज्ञा रहेवुं जोइये, ते (दुदिसि के०) बिदिशि एटले बे दिशाउनुं द्वार कहीश, चोथुं जघन्य, मध्यम

अने उत्कृष्ट एवा (तिउग्गह के०) त्रण प्रकार ना अवग्रहनुं द्वार कहीश, पांचमुं (तिहा ठ वंदणया के०) त्रिधा तु वंदनया एटले त्रण प्रकारे वली चैत्यवंदना करवी. तेनुं द्वार कहीश, ठ्ठुं पंचांग एटले पांच अंगे (पणिवाय के०) प्रणि-पात करवो, तेनुं द्वार कहीश, सातमुं (नमु-क्कारा के०) नमस्कार करवानुं द्वार कहीश. आठमुं देववंदनना अधिकारे जे नवकार प्रमुख नव सूत्रो आवे ठे. तेना (वन्ना के०) वर्ण एटले अक्षर ते (सोलसयसीयाला के०) सोलसो ने सुम्मालीश थाय. तेने गणी देखाडवानुं द्वार कहीश ॥ २ ॥

नवमुं देववंदनना अधिकारे नवकार प्रमुख नव सूत्रोनां (इगसीइसयं के०) एकसोने ए क्यासी (तु के०) वली (पया के०) पदो थाय ठे ते देखाडवानुं द्वार कहीश, दशमुं एज नव सू-त्रोनां (सगनउइ के०) सप्तनवति एटले सत्ताणुं (संपयाउ के०) संपदाउ थाय ठे, ते देखाडवानुं

ओगणीस दोष उपजे तेनुं द्वार कहीश, एकवीसमुं (उस्सग्गमाण के०) काउस्सग्गना प्रमाणनुं द्वार कहीश. बावीसमुं श्रीवीतरागनुं (थुत्तं के०) स्तवन केवा प्रकारे करवुं? तेनुं द्वार कहीश, त्रेवीसमुं (श्र के०) वली दिन प्रत्ये चैत्यवंदन (सगवेला के०) सात वेला करवुं. तेनुं द्वार कहीश ॥ ४ ॥

चोवीसमुं देववंदन करतां देरासरमां तांबूल प्रमुख (दसआसायणचाउ के०) दश आशातनानो त्याग करवो. तेनुं द्वार कहीश, एम (सवे के०) सर्वे (चिइवंदणाइ ठाणाइं के०) चैत्यवंदननां स्थानक ते (चउवीसदुवारेहिं के०) चोवीश द्वारे करीने (दुसहस्सा के०) बे हजारनी उपर (चउसयरा के०) चुम्मोतेर (हुंति के०) थाय ॥ ५ ॥ (दारगाहा के०) ए द्वारनी गाथाउ चार जाणवी ॥

चोवीश द्वारनां उत्तरभेदसहित यंत्रनी स्थापना.
अंक.मूलद्वारनां नाम.उत्तरभेदनी संख्या. सरवाळो

द्वार कहीश, अगीआरमुं नमुत्थुणादिक (पणदंमा के०) पांच दंमकनुं द्वार कहीश, बारमुं चैत्यवंदनने विषे पांच दंमकमां (बार अहिगार के०) बार अधिकार आवे छे, तेनु द्वार कहीश, तेरमुं (चउ वंदणिज्ज के०) चार वांदवा योग्य तेनुं द्वार कहीश, चौदमुं उपद्रव टालवा निमित्ते एक (सरणिज्ज के०) स्मरण करवा योग्य जे सम्यग्दृष्टि देवो तेमनुं द्वार कहीश, पन्नरमुं नाम स्थापनादिक (चउह जिणा के०) चार प्रकारना जिननु द्वार कहीश ॥ ३ ॥

सोलमुं (चउरो थुइ के०) चार स्तुति कहेवानुं द्वार कहीश, सत्तरमुं देव वांदवामां पापखपणादिक (निमित्तठ के०) निमित्त आठ छे, तेनुं द्वार कहीश, अढारमुं फल साधवा निमित्ते (बारहेऊ के०) बार हेतुनुं द्वार कहीश, (अ के०) वली ठंगणीशमुं अपवादे काउस्सग्गना (सोलआगार के०) सोल आगारनुं द्वार कहीश, वीशमुं काउस्सग्गमां (गुणवीसदोस के०)

हवे ए चोवीश द्वारना उत्तर भेदनुं स्वरूप अनुक्रमे देखाडतो थको प्रथम दश त्रिकोनुं द्वार कहेतो छतो बे गाथाये करी दश त्रिकोना नाम कहे छे.

तिन्नि निसीही तिन्नि उ, पयाहिणा तिन्नि

जोवुं. अने शेष (तिदिसिनिरक्कणविरई के०) त्रण दिशिनी सन्मुख जोवानुं विरमण करवुं. सातमी (पयजूमिपमज्जणं के०) पग मूकवानी जूमिनुं प्रमार्ज्जन ते (च के०) वली (तिरकुत्तो के०) त्रण वार करवुं, आठमी (वन्नाईतियं के०) वर्णादिकना आलंबन त्रण कहेशे (च के०) वळी नवमी (मुद्दतियं के०) त्रण मुद्रा कहेशे, दशमी (तिविहं के०) त्रण प्रकारे (च के०) वळी (पणिहाणं के०) प्रणिधान कहेशे. जे त्रण बोलनो समुदाय तेने त्रिक कहीये, ए दश त्रिकनां नाम कह्यां ॥ ७ ॥

हवे प्रथम निसीहि त्रण कये कये स्थानके करवी ? ते कहे ठे.

घर-जिणहर-जिणपूया-वावारच्चायर्ड निसीहि-तिगं ॥ अग्गदारे मज्जे, तइया चिइवंदणा-समए ॥ ८ ॥

अर्थ-जे सावद्य व्यापारनो मन, वचन अने कायाये करी निषेध करवो, तेने निसीहि

चेव य पणामा ॥ तिविहा पूया य तहा, अव-
ह-तिय-भावणं चेव ॥ ६ ॥ तिदिसि-निरक्क-
ण-विरई, पयभूमि-पमज्जणं च तिक्खुत्तो ॥ व-
ाइ- तियं मुद्दा,-तियं च तिविहं च पणि-
हाणं ॥ ७ ॥

अर्थ-प्रथम देरासरे जातां (तिन्निनिसी-
ही के०) त्रणवार नैषेधिकी कहेवी. बीजी देरा-
सरे (तिन्नि उ के०) त्रण वली (पयाहिणा
के०) प्रदक्षिणा देवी. त्रीजी (तिन्नि के०)
त्रण वार (चेवय के०) ए निर्धार वाचक श-
ब्द छे (पणामा के०) प्रणाम करीये. चोथी
(तिविहा के०) त्रण प्रकारनी अंगपूजादिक
पूया के०) पूजा करवी. पांचमी (य के०)
वली (तहा के०) तथा प्रभुनी पिंडस्थावस्था-
दिक [अवछतियभावणं के०] अवस्थात्रयनुं
भाववुं (चेव के०) निश्चे जाणवुं. ॥

छठी चार दिशिमांथी मात्र भगवान् जे
दिशिये बेठेला होय, तेज एक दिशिनी सामुं

जोवुं, अने शेष (तिदिसिनिरक्खणविरई के०) त्रण दिशिनी सन्मुख जोवानुं विरमण करवुं, सातमी (पयजूमिपमज्जणं के०) पग मूकवानी जूमिनुं प्रमार्जन ते (च के०) वळी (तिक्खुत्तो के०) त्रण वार करवुं, आठमी (वन्नाईतियं के०) वर्णादिकना आलंबन त्रण कहेशे (च के०) वळी नवमी (मुद्दतियं के०) त्रण मुद्रा कहेशे, दशमी (तिविहं के०) त्रण प्रकारे (च के०) वळी (पणिहाणं के०) प्रणिधान कहेशे. जे त्रण बोलनो समुदाय तेने त्रिक कहीये, ए दश त्रिकनां नाम कह्यां ॥ ७ ॥

हवे प्रथम निसीहि त्रण कये कये स्थानके करवी ? ते कहे छे.

घर–जिणहर–जिणपूया–वावारचायउ निसीहितिगं ॥ अग्गद्दारे मज्झे, तइया चिइवंदणा-समए ॥ ८ ॥

अर्थ–जे सावद्य व्यापारनो मन, वचन अने कायाये करी निषेध करवो, तेने निसीहि,

कहीये, ते एक पोताना (घर के०)घरनां बीजी (जिणहर के०) जिनघर ते देरासरनां, त्रीजी (जिणपूआ के०) श्री जिनेश्वरनी पूजानां, जे (वावार के०) व्यापार एटले ए, त्रणनां जे व्यापार तेने (चायर्ड के०) त्यागवायकी नि-सीहितिगं के०) नैषेधिकीत्रिक थाय! तेमां प्र-थम निसीहि ते पोताना घर, हाट, परिवारा-दिक संबंधी जे सावद्य व्यापार ते सर्व निव-र्त्तावबा माटे श्री जिनमंदिरने (अग्गद्दारे के०) अग्रद्वारे कहे. एटले देरासरनां मूल बारणे दरवाजामां पेसतांज कहे,पण इहां श्रीजिनघरने पुंजवा समारवा संबंधि तथा पूजा संबंधि सर्व व्यापार आदरे.तथा बीजी निसीहि ते जिनघर संबंधी व्यापारथी निवर्त्तवा रूप देरासरनी (मज्जे के०) मध्य गजारामां पेसतां कहे, तिहां देरासर पम्या आखमयानी चिंतानो तथा देरासरमां पुंजवादिकनो त्याग करीने द्रव्य पूजादिकनो प्रारंज करे; एम सर्व प्रकारनी पूजा

त्रिधिसहित साचवी रहा पठी (तइया के०) त्रीजी निसीहि जे जिनपूजा संबंधि व्यापारना त्याग रूप छे, ते (चिइवंदणासमए के०) चैत्यवंदन करवाना अवसरे कहे. इहां द्रव्यपूजा व्यापार सर्व निवर्त्तावीने केवळ भावपूजारूप चैत्यवंदन स्तवनादिकनो एकाग्र चित्ते करी पाठ करे, ए रीते त्रण निसीहि साचवे.

अथवा मन, वचन अने कायाये करी घर संबंधी व्यापार निषेधवारूप त्रण निसीहि देरासरना अग्रद्वारमां कहेवी. अने तेज प्रमाणे मनादिक त्रणे योगे देरासर संबंधी व्यापार त्यागवा आश्रयी त्रण निसीहि गभारामां कहेवी; तथा वळी चैत्यवंदनादि कहेवाने अवसरे पण मन, वचन, कायाये करी जिनपूजा व्यापार त्यागरूप त्रण निसीहि कहेवी. ए रीते दरेक वखते मन, वचन अने कायाना योगे करी त्रण त्रण निसीहि कहेवी. अथवा दरेक वखते एकज निसीहि कहेवी. परंतु घर संबंधी. देरा संबंधी अने जिन

पूजा संबंधी व्यापार निषेध करीये छीये, एम समजीने देरासरमां पेसतांज त्रणे निसीहि कही देवी नहीं, ए तात्पर्य छे. पोषधमां दर्शन करवा जतां देहेरासरमां प्रवेश करतां अने चैत्यवंदन अवसरे एम बे निसीहि कहेवी, केमके द्रव्य पूजा करवानी नथी. ए प्रथम निसीहि त्रिक कह्युं. ॥ ८ ॥

हवे बीजुं प्रदक्षिणात्रिकनुं नाम प्रथम सामान्ये छठी गाथामां कहेलुं छे, तेनो प्रगट अर्थ छे, माटे जूदुं वखाण्युं नथी. तथापि चैत्यना दक्षिण भागथी त्रण प्रदक्षिणा देवी, एटले संसारना भवभ्रमण टाळवारूप भावनाये श्री प्रतिमाजी महाराजनी जमणी बाजुथी अनुक्रमे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी आराधनारूप त्रण फेरा फरवा, ए बीजुं प्रदक्षिणात्रिक जाणवु.

हवे त्रीजुं प्रणामत्रिक कहे छे.

अंजलि बद्धो अद्धो,-णओ अ पंचंगओ

तिपणामा ॥ सवछ वा तिवारं, सिराइनमणे पणाम-तियं ॥ ए ॥

अर्थ-श्रीजिन प्रतिमा देखी बे हाथ जोमी ललाटे लगामी प्रणाम करीये ते प्रथम (अंजलियद्धो के०) अंजलिबंध प्रणाम कहीये, तथा कटिदेशथी उपरलुं अर्धु शरीर तेने लगारेक नमामी प्रणाम करीये, अथवा ऊर्ध्वादि स्थानके रह्यां थकां कांइक शिर नमामीये, तथा शिर-करादिके करी नूमिका पादादिकनुं फरसवुं ते बीजो (अद्धोणर्ज के०) अर्द्धावनत प्रणाम कहीये, तथा (अ के०) वली बे जानु, बे कर अने पांचमुं उत्तमांग ते मस्तक, ए पांच अंग नमामी खमासमण आपीये, ते त्रीजुं (पंचंगर्ज के०) पंचांग प्रणाम जाणवो. ए (तिपणामा के०) त्रण प्रणाम जाणवा.

(वा के०) अथवा (सवछ के) सर्वत्र प्रणाम करवासमये (तिवारं के०) त्रण वार (सिराइनमणे के०) मस्तकादिक नमामवे करी

एटले शिर, कर अंजली प्रमुखे करी जे त्रण वार नमन आवर्त्त करवुं ते (पणामतियं के०) प्रणामत्रिक जाणवुं. ए त्रीजुं प्रणामत्रिक कह्युं.

हवे चोथुं पूजात्रिक कहे छे.

अंगग्गनावजेया, पुप्फाहार–थुइहिं पूय-तिगं ॥ पंचोवयारा अठो–वयार सव्वोवयारा वा ॥ १० ॥

अर्थ–(अंगग्ग के०) अंगने अग्र एटले पहेली अंगपूजा अने बीजी आगल ढोवारूप अग्रपूजा तथा त्रीजी चैत्यवंदनरूप(भाव के०) भावपूजा ए त्रण (भेया के०] भेदथकी अनुक्रमे (पुप्फाहारथुइहिं के०) पुप्पाहारस्तु-तिभिः एटले पहेली पुप्प केसरादिक अने बीजी आहार फलादि ढोकवे तथा त्रीजी स्तुति करवे करीने (पूयतिगं के०) पूजा त्रिक थाय छे.

तेमां प्रथम अंगपूजा ते श्रीवीतरागनी पूजा अवसरे मनःशुद्धि, वचनशुद्धि, कायशुद्धि, वस्त्रशुद्धि, नीतिनुं धन, पूजाना उपकरणनी

शुद्धि अने भूमिशुद्धि. ए सात वानां शुद्ध करी वस्त्र निर्मल सुपोत धोतीयां पुरुष पहेरे, अने जेनो आठपमो मुखकोश थाय, एहवुं एकसाडी उत्तरासंग धारण करे, एवी रीते पुरुषे पूजा अवसरे बे वस्त्र राखवां, अने स्त्रीने तो विशेष वस्त्रादिकनी शोजा जोइये, तथापि हमणा संप्रदाये त्रण वस्त्र पहेरी पूजा करे, ए रीते वस्त्र पहेरी आशातना टाळतो थको प्रथम मोरपींछीए करी श्रीजिनबिंबने पुंजे, पुंजवाथी मांमी न्हवण, अंगलूहणां धरतो, विलेपन, भूषण, अंगरचना करतो, पुष्प चमावतो, जिनहस्तमां नालिकेरादिक स्थापतो, धूपाक्षेप, सुगंधवासक्षेपणादिक करतो पूजा करे; ए सर्व अंगपूजा जाणवी.

बीजी अग्रपूजा; तेमां धूप, दीप, नैवद्यादि शब्दे आहार ढोकन, पुष्प प्रकर–गंथिम, वेढिम, पूरिम, संघातिमादि भेद, जल–लवणोत्तारण, आरती, मंगलदीपक, अष्टमंगलाजरण ए सर्व बीजी अग्रपूजा जाणवी.

त्रीजी भावपूजामध्ये—गीत, गान, नाटक, छत्र, चामर, विंजवादि तथा देवद्रव्य वधारवा प्रमुख सर्व भावपूजा जाणवी. ए पूजात्रिक कह्युं. अथवा करवा, करावका अने अनुमोदवारूप ए पण त्रिविध पूजा जाणवी.

अथवा एक विघ्नोपशामिनी, बीजी अभ्युदय साधिनी, त्रीजी निवृत्तिदायिनी, ए पूजात्रिक जाणवुं. यदुक्तं ॥ विग्घोवसामिगेगा, अब्भुदयसाहणि भवे बीया ॥ निव्वुइकरणी तइया, फलयाउ जहध नामेहिं ॥१॥ इत्यावश्यकनिर्युक्तिवचनात् ॥

(या के०) अथवा (पंचोवयारा के०) पंचोपचारा पूजा ते १ गंध, २ माल्य, ३ अधिवास, ४ धूप, ५ दीप. अथवा १ कुसुम, २ अक्षत, ३ गंध, ४ धूप, ५ दीप ए पांच प्रकारे पण प्रथम अंगपूजा जाणवी.

बीजी (अठोवयार के०) अष्टोपचार एटले १ कुसुम २ अक्षत ३ गंध ४ पईव, ५ धूव ६ नै-

वेज्जाः७ जल ७ फलेहिं पुणो ॥ अठविह कम्म-
महणी, अठुवयारा हवइ पूया ॥ १ ॥ इति आ-
वश्यकनिर्युक्तिवचनं, ए आठ प्रकारे पूजा जाणवी.

त्रीजी (सव्वोवयारा के०) सर्वोपचारा
एटले सर्वोपचारपणे पूजा ते प्रणाममात्रादिक
सर्व लोकोपचार विनय ते सर्व पूजा जाणवी.
अथवा जेटली वस्तु मळे तेणे करीने पूजा करवी,
ते सर्वोपचार पूजा जाणवी. तिहां १ न्हवण, २
विलेपन, ३ देवदुष्यवस्त्र, तथा चक्षुयुगल, ४ वास
पूजा, ५ फूलपगर, ६ फूलमाल, ७ छूटां फूल, ८
चूर्ण-घनसारादि, तथा आंगी रचनादि, ए ध्वजा-
रोपण, १० आभरण, ११ फूलघर, १२ फूलनो
मेघ, १३ अष्टमंगल रचना, १४ धूप दीप आरती
मंगल दीपादिक नैवेद्य ढोकन, १५ गीतगान, १६
नाटक, १७ वाजित्र. ए सत्तर प्रकारे पूजा, तथा
वळी २१ प्रकारे पूजा, तेनां नाम कहे छे. १ स्नात्र,
२ विलेपन, ३ चूपण, ४ फल, ५ वास, ६ धूप,
७ दीप, ८ फूल, ए तंडुल, १० पत्र, ११ पूगी;

करनारा पूजक पुरुषोये (जिणस्स के०) श्रीजिनेश्वरनी (छउमत्थ के०) छद्मस्थावस्थाने भाववी. ते छद्मस्थावस्थाना त्रण भेद छे, एक जन्मावस्था, बीजी राज्यावस्था अने त्रीजी श्रमणावस्था. तेमा प्रभुने न्हवण अर्चादिक प्रक्षालन करतां जन्मावस्था भाववी, अने मेरुपर्वतनी उपर जे जन्म महोत्सव भाववो ते पण जन्मावस्थाज जाणवी.

तथा मालाधारादि, पुष्प, केशर, चंदन अने अलंकारादि चडावतां राज्यावस्था भाववी. वळी भगवंतना शिरकेश, श्मश्रु कूर्च रहित एवा मस्तकमुखादिक देखीने श्रमणावस्थानी भावना भाववी. ए प्रथम छद्मस्थावस्था त्रण भेदे त्रिविधे कही.

तथा किंकिल्ली (अशोकवृक्ष), कुसुमवृष्टि अने देवध्वनि प्रमुख (पडिहारगेहिं के०) आठ महाप्रातिहार्यें करीने युक्त भगवानने देखीने बीजी पदस्थावस्था भावे (केवलियं के०) केवळीपणानी अवस्था भावीये.

तथा (पलियंक के०) पर्यंकासने करी स-हित एटले पलांठी वाळीने बेठा एवा (उस्सग्गेहिं के०) काउस्सग्गीयाने आकारे बिंब देखवे करीने (य के०) वली (जिणस्स के०) जिननी (सिद्धत्तं के०) सिद्धत्त्व एटले सिद्धपणानी अव-स्था अर्थात् रूपातीतपणानी अवस्था (भा-विज्ज के०) भाववी. केम के ? केटलाएक तीर्थं-करो पर्यंकासने काउस्सग्ग मुद्राये मुक्ति गया छे, माटे ज्योतिरूप अवगाहना भाववी. आ गाथामां भाविज्ज ए क्रियापद सर्वत्र संगत करवुं. ए पां-चमुं अवस्थात्रिक कह्युं ॥ १२ ॥

हवे छठुं त्रण दिशी जोवायी निवर्त्तवानुं त्रिक कहे छे.

उड्ढाहो तिरिआणं, तिदिसाण निरक्कणं चइज्जहवा ॥ पछिम दाहिण वामण, जिणमुह-न्नत्थ–दिठि–जुअ ॥ १३ ॥

अर्थ–श्रीजिनप्रतिमा जुहारतां प्रभु उपर एकांत ध्यान राखवा निमित्ते एक (उड्ढा के०)

ऊर्ध्वदिशि, वीजी (अहो के०) अधोदिशि अने त्रीजी (तिरिआणं के) तीर्छी दिशि ते आतुं अ वलुं, ए (तिदिसाण के०) त्रणदिशिनुं (निरक्खणं के०) जोवुं (चइज्ज के०) गंम्वुं एटले वर्जन करवुं. (अहवा के०) अथवा (पछिम के०) पाछली पूंठनी दिशिये (दाहिण के०)जमणी दिशिये तथा (वामण के०)मावी दिशिये एटले जे दिशाये श्रीजगवंतनी प्रतिमा होय, ते दिशि टालीने शेष पूंठनी बाजु तथा जमणी बाजु अने मावी बाजु, ए त्रण दिशाये जोवानुं वर्जन करवुं, मात्र (जिणमुह के०) श्री जिनेश्वरना मुखने विषे पोतानी (दिछि के०) दृष्टिने (नछ के०) न्यस्त एटले स्थापी राखेली होय तेणे करी (जुर्ड के०) युक्त एटले सहित एवो थको वंदन करे. एटले जिनप्रतिमा उपर पोतानां लोचन थापी एकाग्र मन करे, परंतु आतुं अवलुं अरहुं परहुं जुवे नहीं. ए उठुं त्रण दिशि निरीक्षण वर्जावानुं त्रिक कह्युं ॥ १३ ॥

हवे सातमुं पदजूमिप्रमार्जनत्रिक कहे ठे, ते आवी रीते के—श्रीजिनवंदनाये इरियावहि पडिक्कमतां तथा चैत्यवंदन करतां जीवयत्नाने अर्थे रूडे प्रकारे दृष्टिवडे जोइने पद स्थापवानी जूमि त्रण वार पुंजवी. तिहां गृहस्थ होय तो वस्त्रांचले करी पुंजे, अने साधु होय तो रजोहरणे करी पुंजे. ए सातमुं त्रिक थयुं.

हवे आठमुं आलंबनत्रिक अने नवमुं मुद्रात्रिकनुं स्वरूप कहे ठे.

वन्नतियं वन्नहा,—लंवणमालंवणं तु पडिमाई ॥ जोग जिण मुत्तसुत्ती, मुद्दाजेएण मुद्दतियं ॥ १४ ॥

अर्थ—(वन्नतियं के०) वर्णत्रिक कयुं ते कहे ठे. (वन्नछालंवणं के०) वर्णार्थालंवनं एटले एक वर्णालंबन, वीजुं अर्थालंबन, तिहां नमुत्थुणादिक सूत्र जणतां तेमां आवेला जे हस्वा जारे अक्षर ते न्यूनाधिकरहितपणे यथास्थित वोलवा, तथा संपदा प्रमुखनुं वरावर चिंतन राखवुं, ते प्रथम

वर्णालंबन जाणवुं, अने जे नमुत्थुणं प्रमुख सू-त्रो भणतां तेना अर्थ हृदयमां भाववा, ते बीजुं अर्थालंबन जाणवुं, तथा (आलंबणं तु के०) आलंबन ते वली (पडिमाई के०) प्रतिमादि एटले जिनप्रतिमा तथा आदि शब्द थकी भाव अरिहंतादिकनुं तथा स्थापनादिकनुं पण ग्रहण करवुं, तेनुं जे स्वरूप-आलंबन धारवुं, ते त्रीजुं प्रतिमालंबन जाणवुं. ए आठमुं आलंबनत्रिक कह्युं.

हवे नवमुं मुद्रात्रिक कहे छे. एक (जोग के०] योगमुद्रा, बीजी (जिण के०) जिनमुद्रा अने त्रीजी (मुत्तसुत्ती के०) मुक्ताशुक्ति मुद्रा, ए (मुद्दाभेएण के०) योग मुद्रादिकना भेदे करीने (मुद्दतियं के०) मुद्रात्रिक जाणवुं ॥ १४ ॥

हवे प्रथम योगमुद्रानुं स्वरूप कहे छेः

अन्नुन्नंतरिअंगुलि, कोसागारेहिं दोहिं हत्थेहिं ॥ पिट्टोवरि कुप्परि सं,-ठिएहिं तह जोगमुद्दत्ति ॥ १५ ॥

अर्थ-(अन्नुणंतरिअंगुलि के०)अन्योन्यांतरितांगुलि एटले बे हाथनी दशे अंगुलिने अन्योन्य ते मांहोमांहे अंतरित करी बे जिहां एवी अने (कोसागारेहिं के०) कमलना कोशाने आकारे जोमीने कीधा एवा (दोहिं हत्थेहिं के०) बे हाथे करीने, ते बेहु हाथ केहवा? तो के (पिट्टोवरि के०) पेट उपर (कुप्परि के०) कोणी ते (संठिएहिं के०) संस्थित एटले रही बे जेनी एवा प्रकारे रहेवे करी (जोगमुद्दत्ति के०) योगमुद्रा इति एटले योग मुद्रा एम होय. ए पहेली योगमुद्रानुं स्वरूप कह्युं ॥ १५ ॥

हवे बीजी जिनमुद्रानुं लक्षण कहे बे.

चत्तारि अंगुलाइं, पुरर्ज ऊणाइं जब पछिमर्ज ॥ पायाणं उस्सग्गो, एसा पुण होइ जिणमुद्दा ॥ १६ ॥

अर्थ-(जञ के०) यत्र एटले जिहां (पायाणंके०) पगनाजे (पुरर्ज के०) आगगु लनार्थं

लिनी वाजु तरफना पहोंचाने मांहोमाहे (चत्तारि अंगुलाइं के०) चार आंगुलनो आंतरो राख्यो होय, अने पगना (पछिमर्ज के०) पाछलनी पानीनी वाजुना ज्ञागमां मांहोमांहे चार आंगुलथी कांइक (ऊणाइं के०) ऊणो आंतरो राख्यो होय ए रीते पग राखीने (उस्सग्गो के०) काउस्सग्ग करीये (एसा के०) ए प्रकारे (पुण के०) वली (जिणमुद्दा के०) जिनमुद्रा (होइ के०) होय॥

हवे त्रीजी मुक्ताशुक्तिमुद्रा कहे छे.

मुत्तासुत्तीमुद्दा, जब समा दोवि गप्रिआ हत्था ॥ ते पुण निलाडदेसे, लग्गा अन्ने अलग्ग त्ति ॥ १७ ॥

अर्थः-(जब के०) जिहां (दोवि के०) बेहु पण (हत्था के०) हाथ ते (समा के०) सरखा बराबर (गप्रिआ के०) गर्ज्नितपणे राखी (ते के०) ते बे हस्त (पुण के०)वली (निलाडदेसे के०) ललाटना देश एटले ललाटनां मध्य ज्ञागने विषे (लग्गा के०) लगाड्या

होय, वली (अन्ने के०) अन्य एटले बीजा केटलाएक आचार्यो कहे ठे के (अलग्गत्ति के०) अलगाड्या होय एटले ललाटदेशथी दूर राख्या होय. इति एटले ए प्रकारे (मु-त्तासुत्तीमुद्दा के०) मुक्ताशुक्तिनामे मुड़ा क हीये. एमां अंगुलिना छिड़ विना जेम मोतीना छीपनो जोमो मलेलो होय, तेवा आकारे हाथ राखवा, ए मुड़ानुं ए लक्षण ठे ॥ १९ ॥

हवे ए त्रण मुड़ा मांहेली कइ मुड़ाये कइ क्रिया करवी ते कहे ठे.

पंचंगो पणिवाउ, थयपाढो होइ जोग-मुद्दाए ॥ वंदण जिणमुद्दाए पणिहाणं मु-त्तसुत्तीए ॥ १० ॥

अर्थ—एक इछामि खमासमणनो पाठ तेने (पंचंगो पणिवाउ के०) पंचांग प्रणिपात कही ये. बीजो (थयपाढो के०) स्तवपाठ ते श्रीजिने-श्वरना गुणनी स्तुति ते स्तवनादिनो पाठ करवो ते (जोगमुद्दाए के०) योगमुद्रायें करीने (होइ

के०) होय, तथा (वंदण के०) वांदणा देवां अने काउस्सग्ग जे अरिहंतचेइआणं इत्यादि मां (जिणमुद्दाए के०) जिनमुद्राये करीने थाय, त[illegible] जावंति चेइआइं. जावंत केवि साहू अने ज[illegible] [illegible] (पणिहाणं के०) प्रणिधान सं[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (मुत्तसुत्तीए के०) मुक्तासुक्ति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥

[illegible] [illegible] कहे छे.

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] ॥ ३ ॥

[illegible]

गाथा (चेइय के०) चैत्यवांदवा रूप ते प्रथम प्रणिधान जाणवुं. तथा जावंत केवि साहू ए गाथा (मुणिवंदण के०) मुनि वांदवा रूप, ते बीजुं प्रणिधान जाणवुं. तथा जयवीयराय आभवमखंमा पर्यंत ए गाथा (पञ्चणासरूवं के०) प्रार्थनास्वरूप ते त्रीजुं प्रणिधान जाणवुं. (वा के०) अथवा एक (मण के०) मननुं बीजुं (वय के०) वचननुं अने त्रीजुं (काय के०) कायानुं (एगत्त के०) एकत्व एटले एकाग्रपणुं ते पण प्रणिधानत्रिक कहीये. इहां शिष्य पूछे छे के चैत्यवंदनाये प्रणिधान आवे छे, अने बीजी शेष वंदना तो प्रणिधान विनाज थाय छे, तिहां ए बोल सचवाता नथी ते केम? तेने गुरु कहे छे के, तिहां मन, वचन अने कायानी एकाग्रता छे ए मुख्य प्रणिधान छे, ए दशमुं प्रणिधानत्रिक कह्युं.

हवे (सेस के०) शेष रह्या जे (तिय के०) त्रिक एटले अहीं गाथाये करी जेनुं स्वरूप नथी वखाण्युं एवुं बीजुं अने सातमुं त्रिक, तेनो (अ-

ष्टो के०) अर्थ ते (ज के०) वली (पयकुत्ति के०) प्रकट छे. माटे तेनुं स्वरूप मूल गाथामां लख्युं नथी, एम जाणवुं. तथापि बालावबोधकर्त्ताए ते त्रिकोना अनुक्रमे संक्षेप अर्थ ते ते स्थानके ल- ख्या छे, एटले दशत्रिकनुं ए मूलद्वार प्रथम थयुं अने उत्तर बोल त्रीश थया ॥ १ए ॥

हवे बीजुं पांच प्रकारना अभिगमनुं द्वार कहे छे.

सचित्तदवमुज्झण,–मचित्त–मणुज्झणं मणे- गत्तं ॥ इगसाडिउत्तरासं,–ग अंजलि सिरसि जिण दिट्ठे ॥ २0 ॥

अर्थ–चैत्यादिकने विषे प्रवेश करवानो वि धि तेने अभिगम कहीये. ते पांच प्रकारे छे. ति हां देहरे जातां (सचित्तदवं के०) सचित्तद्रव्य जे पोताना अंग आश्रित कुसुमादिक, फलादिक होय, तेनुं (उज्झणं के०) छांमवुं, ते प्रथम अ- भिगम, तथा (अचित्तं के०) अचित्त पदार्थ जे द्रव्यनाणादिक तथा आभरणादिक, वस्त्रादिक व- स्तु तेनुं (अणुज्झणं के०) अणछांमवुं एटले पो-

लानी पासे राखवानी अनुज्ञा ते बीजो अभि-गम. तथा (मणेगत्तं के०) मननुं एकाग्रपणुं करवुं, ते त्रीजो अभिगम. तथा (इगसाडि के०) एकपडुं वस्त्र ए वेहु छेडाये सहित होय तेनो (उत्तरासंग के०) उत्तरासंग करवो. ते चोथो अभिगम. तथा (जिणदिठे के०) श्री जिनेश्वरने दूर थकी नजरे दीठे थके (अंजलि के०) बे हाथ जोडीने (सिरसि के०) मस्त-कने विषे लगाडवा एटले अंजलिबद्ध प्रणाम करवो, ते पांचमो अभिगम जाणवो ॥ २० ॥

इय पंचविहाभिगमो, अहवा मुच्चंति राय-चिण्हाइं ॥ खग्गं छत्तोवाणह, मउडं चमरे अ पंचमए ॥ २१ ॥ दारं ॥ २ ॥

अर्थ–(इय के०) पूर्वली गाथामां कह्या जे (पंचविहाभिगमो के०) पांच प्रकारे अ-भिगम ते देव तथा गुरु पासे आवतां साचववा (अहवा के०) अथवा वंदना करनार श्रावक जो पोते राजादिक होय तो ते ए पांच अभि

गम साचवे, अने वली बीजां (रायचिण्हाइं के०) राजानां पांच चिह्न छे ते प्रत्ये (मुत्तंति के०) मूके एटले छांमे तेनां नाम कहे छे, एक (खग्गं के०) खड्ग, बीजुं (छत्त के०) छत्र त्रीजुं (उवाणह के०) उपानह एटले पगनी मोजमी, चोथो माथानो (मउडं के०) मुकुट अने (पंचमए के०) पांचमुं (चमरे अ के०) चामर, ए पण पांच अजिगम जाणवा ॥ २१ ॥ एटले पांच अजिगमनुं बीजुं द्वार पूर्ण थयुं, उत्तर बोल पांत्रीश थया.

हवे बे दिशिनुं त्रीजुं द्वार, तथा त्रण अवग्रहनुं चोथुं द्वार कहे छे ॥

वंदंति जिणे दाहिण,–दिसिठिया पुरिस वामदिसि नारी ॥ दारं ॥ ३ ॥ नवकर जहन्नु सहि,–कर जिट्ट मजुग्गहो सेसो ॥२२॥ दारं ॥४॥

अर्थ–(जिणे के०) श्रीजिनने (दाहिण-दिसिठिया के०) दक्षिणदिशिस्थिता एटले मूल नायकनी जमणी दिशाये रह्या थका (पु·

रिस के०) पुरुषो (वंदंति के०) वांदे एटले चैत्यवंदना करे, अने मूल नायकने (वामदिसि के०) मावे पासे रही थकी (नारी के०) स्त्री वांदे एटले चैत्यवंदना करे. इहां चैत्यवंदना पूजाना अधिकार माटे प्रसंगथी जमणी बाजु दीपक थापवो, अने डाबी बाजु धूपादिक, नाणुं, फलादिक, जिन आगले तथा हस्ते थापीये. ए बे दिशिनुं त्रीजुं द्वार थयुं अने उत्तर बोल साम्त्रीश थया.

हवे त्रण अवग्रहनुं चोथुं द्वार कहे छे. तिहां नगवंतथकी (नवकर के०) नव हाथ वेगला रहीने चैत्यवंदना करवी, ते प्रथम (जहन्नु के०) जघन्य अवग्रह जाणवो, तथा नगवंतथकी (सद्विकर के०) षष्टिकर एटले साठ हाथ वेगला रहीने चैत्यवंदना करवी. ते बीजो (जिठ के०) ज्येष्ठ एटले उत्कृष्ट अवग्रह जाणवो, अने (सेसो के०) शेष जे नव हाथथी उपर अने साठ हाथनी अंदर



एटली वेगलाईये रही चैत्यवंदना करवी, ते सर्व त्रीजुं (मझुग्गहो के०) मध्यम अवग्रह जाणवो. तथा केटलाएक आचार्य बार प्रकारना अवग्रह कहे छे के ॥ उक्कोस सठि पन्ना, चत्ता तीसा दसठ पणदसगं ॥ दस नव ति दु एगंह, जिणुग्गहं बारस वि नेयं ॥१॥ एटले ६०, ५०, ४०, ३०, १८, १५, १०, ९, ३, २, १, ०॥ ए बार अवग्रह थया एटले अर्धा हाथथी मांडीने साठ हाथ पर्यंत श्रीजिन गृहे तथा गृहचैत्यादिके आशातनादि आशातना वर्जवा निमित्ते ए अवग्रह जाणवां ॥ २२ ॥ ए चोथुं त्रण अवग्रहनुं द्वार कह्युं, इहां सुधी सर्व मली उत्तर भेद ४० थया ॥ २२ ॥

हवे त्रण प्रकारे चैत्यवंदना करवी, तेनुं पांचमुं द्वार कहे छे,

नमुक्कारेण जहन्ना, चिइवंदण मझ दंडथुइजुअला ॥ पण दंड थुइ—चउक्कग, थयपणिहाणेहिं उक्कोसा ॥ २३ ॥

अर्थ-(नमुक्कारेण के०) एक नमस्कार श्लोकादिक रूप तथा नमो अरिहंताणं कहीने अथवा हाथ जोडी मस्तक नमाववे करी अथवा नमो जिनाय कही नमवे करी अथवा एक श्लोकादि कहेवे करी अथवा इमणां देहरे चैत्यवंदन कहियें छैये, इत्यादि रूपे सर्व प्रथम(जहन्ना के०) जघन्य (चिइवंदण के०) चैत्यवंदन जाणवुं, तथा (दंमथुइजुअला के०) दंमकयुगल ते अरिहंत चेइयाणंनुं युगल तथा स्तुतियुगल ते चार थुइ एटले एक नमस्कार श्लोकादिरूप कही, शक्रस्तव कही, उना थइ, अरिहंत चेइयाणं कही काउस्सग्ग करी, थुइ कहेवी. ते बीजी (मद्य के०) मध्यम चैत्यवंदना जाणवी. तथा (पणदंम के०) पांच नमुथुणं रूप पांच दंमके करी अने (थुइचउक्कग के०) स्तुति चतुष्क एटले आठ थुइये करीने, (थय के०) स्तवने करीने तथा जावंति चेइआइं, जावंत केवि साहू अने जयवीयराय, ए त्रण (पणिहा-

अंग जिहां खमासमण आपतां जूमिये लागे, ते पंचांग प्रणिपात कहीये. एणे करी "इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिद्याए निसीहियाए मछएण वंदामि" ए पाठ कहे. ए ठवुं प्रणिपात द्वार कह्युं. उत्तर बोल चुम्मालीश थया. ॥

हवे सातमुं नमस्कार द्वार कहे छे (सु के०) जला एवा (महछ के०) अत्यंत महोटा गहन अर्थ छे जेहना एटले जक्ति, ज्ञान, वैराग्य द शाना दीपक एवा (नमुक्कारा के०) नमस्कार एटले प्रभुना गुणोत्कीर्त्तनरूप श्लोक. दि कहेवा ने (इग के०) एक तथा (ठुग के०) बे, तथा (तिगके०) त्रणथी मांडीने (जाव अठ्ठसय के०) यावत् एकसो ने आठ पर्यंत कहे. ए सातमुं नमस्कार द्वार कह्युं. उत्तर बोल पी स्तालीश थया. ॥

हवे देववंदनना अधिकारे जे नवकार प्र मुख नव सूत्रो आवे छे, तेमने एक वारनां उच्चर्या हलवां तथा जारे अर्गीने सर्व गणीये

तेवारे १६४७ अक्षर थाय अने १८१ पद थाय तथा ए७ संपदा थाय, ए अक्षर, पद तथा संपदा मली त्रणे द्वार एकठां कहे छे. तेनी साथे संपदानां नाम तथा अर्थ पण कहेशे. यद्यपि इच्छामि खमासमणो तथा जेअ अईयासिद्धा ए गाथा तथा तस्स उत्तरी, अन्नत्थ, इत्यादि अपर ग्रंथांतरे तो ए सूत्रमां संकलित नथी, तथापि भाष्यमांहेला देववंदनाधिकारे बोल्या छे, अन्यथा जे पूर्वे उत्तरद्वार कह्यां, ते पूर्ण न थाय, तेमाटे ते सर्व द्वार एकठां कहे छे.

अमसठि अठवीसा, नवनउयसयं च ऊसयसगनउया ॥ दोगुणतीस ऊसठा, ऊसोल अमनउयसय ऊवन्नसयं ॥ २६ ॥

अर्थ–१ प्रथम " पंचमंगलमहासुयकंध " एहवुं नाम नवकारनुं छे, तेनां अक्षर (अमसठि के०) अमसठ ते हवइ मंगलं एवो पाठ जणतां थाय, केम के श्रीमहानिशीथ सूत्रमध्ये प्रकटाक्षरे हवइ मंगलं एहवो पाठ छे॥—

यदुक्तं ॥ पंचपयाणं पणतिस, वणचूलाइ वन्न तित्तीसं ॥ एवं समे समप्पइ, फुम-मक्कर-मठसठीए ॥ इति ॥ १ ॥ ते माटे जो नमस्कारनो एक अक्षर ओछो करे, तो चोशठ विधाने नमस्कार साधवो ते न्यून थाय, तेथी ज्ञाननी आशातनानो अतिचार लागे, एवं श्री भद्रबाहुस्वामीये नमस्कारकल्पे प्रकाश्युं छे, माटे 'हवइ मंगलं' एवो पाठ कहेवो.

२ बीजुं "प्रणिपात" एवं नाम इच्छामि खमासमणनुं छे, ते थोभसूत्रमां गुरुवंदनाधिकारे वांदणामां आवशे, पण इहां चैत्यवंदन माटे जेलुं कह्युं छे. तेना अक्षर (अठवीसा के०) अठावीश छे.

३ त्रीजुं "पडिक्कमणा सुयरकंध" एवं नाम इरियावहियानुं छे, ते सूत्रना इच्छामि पडिक्कमिउं इहांथी मांडीने यावत् ठामि काउस्सग्गं लगे अक्षर (सयं च के०) एकशोने वली उपरे नवनउय के०) नवाणुं छे.

४ चोथुं "शक्रस्तव" एवुं नाम नमुत्थुणंनुं छे. तेना अक्षर (दुसयसगनउया के०) बशें ने सत्ताणुं जाणवा.

५ पांचमुं "चैत्यस्तव" एवुं नाम अरिहंत चेइयाणंनुं छे. तेना अक्षर (दोगुणतीस के०) बशें ने उंगणत्रीश छे.

६ छठुं "नामस्तव" एवुं नाम लोगस्सनुं छे, वर्त्तमान जिन चोवीशीना नामनुं गुणोत्कीर्त्तनरूप तेना अक्षर (दुसठ्ठ के०) बशें ने साठ छे.

७ सातमुं "श्रुतस्तव" एवुं नाम पुक्खरवरदीनुं छे तेना अक्षर (दुसोल के०)बशेंने सोल छे.

८ आठमुं "सिद्धस्तव" एवुं नाम सिद्धाणं बुद्धाणंनुं छे तेना अक्षर (अडनउयसय के०) एकसो ने अठाणुं छे.

ए नवमुं "प्रणिधानत्रिक" एवुं नाम जावंति चेइयाइं, जावंत केवि साहू अने सेवणा आत्रवमखंडा पर्यंत जयवीयराय ए त्रणेनुं छे.

गराणं, संतिगराणं, सम्मदिठिसमाहिगराणं लगें १९७, ए सर्व मली पांच दंकना १२०० अक्षर थया. तथा १५२ अक्षर जावंति चेइआई, जावंत केवि साहू अने जयवीयराय सेवणा आनवमखंका लगे ए त्रण (पणिहाणेसु के०) प्रणिधानने विषे जाणवा. ए रीते ए नव सूत्रोना अक्षरो एकठा करियें त्यारे (अडुरुत्त के०) अद्विरुक्त एटले बीजीवार अणउच्चरया एवा (वन्ना के०) वर्ण एटले अक्षर ते सर्व मली (सोलसयसीयाला के०) सोलशें ने सुम्तालीश थाय ॥ २३ ॥

हवे पदसंख्या कहे ठे.

नव वत्तीस तित्तीसा, तिचत्त अम्वीस सोल वीस पया ॥ मंगल–इरिया–सक,–त्थयाइसु इगसीइसयं ॥ २५ ॥

अर्थ–नवकारनां (नव के०) नव पद ठे, इरियावहिनां (वत्तीस के०) बत्रीश पद, नमुत्थुणंनां (तित्तीसा के०) तेत्रीश पद, अरिहंत-



संपदा. तथा इरियावहिनी (अठ के०) आठ संपदा. तथा नमुथ्थुणंनी (नव के०) नव संपदा, तथा अरिहंत चेइयाणंनी (अठ के०) आठ संपदा. (य के०) वली लोगस्सनी (अठवीस के०) अठावीश संपदा, तथा पुरकरवरदीनी (सोलस के०) सोल संपदा, (य के०) वली सिद्धाणंबुद्धाणंनी (वीस के०) वीश संपदा जाणवी. लगारेक रहेवानुं स्थान तथा अर्थनो (वीसामा के०) वीसामो लेवानुं स्थान तेने संपदा कहीये. ते (कमसो के०) अनुक्रमे (मंगल के०) नवकारने विषे, (इरिया के०) इरियावहिनेविषे अने (सक्कथयाईसु के०) शक्रस्तवादिक पांच दंमकने विषे ए सर्व मली सात सूत्रोने विषे सर्व संपदा (सगनउई के०) सत्तनवती एटले सत्ताणुं थाय ॥ २९ ॥

हवे नवकारना अक्षर तथा पद अने संपदा विवरी देखाडे छे.

वणट्ठसहि नव पय, नवकारे अठ संपया

संपदा तथा "एसो पंच नमुक्कारो, सवपावप्पणासणो" ए (दुपय के०) बे पदनी अने सोल अक्षरनी (छठी के०) छठी संपदा जाणवी॥३०॥

हवे प्रणिपात खमासमणना अक्षर तथा पद अने संपदा विवरी देखाडे छे.

पणिवाय अक्कराइं अठावीसं तहा य इरियाए ॥ नवनउअमक्खरसयं, दुतीस पय संपया अठ ॥ ३१ ॥

अर्थ-(पणिवाय के०) प्रणिपात दंडकने विषे (अठावीसं के०) अठावीश (अक्खराइं के०) अक्षर छे, (तहा य के०) तथा च एटले तेमज वली (इरियाए के०) इरियावहिने विषे (नवनउअमक्खरसयं के०) नवनवति अक्षरशतं एटले नवाणुये अधिक एकशो अक्षर जाणवा अर्थात् एकशोने नवाणु अक्षर जाणवा, तथा (दुतीस के०) बत्रीश (पय के०) पद जाणवां अने (संपया के०) संपदा (अठ के०) आठ जाणवी ॥ ३१ ॥

संपदा तथा "एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणा-सणो" ए (डुपय के०) बे पदनी अने सोल अक्षरनी (ठही के०) ठही संपदा जाणवी॥३०॥

हवे प्रणिपात खमासमणना अक्षर तथा पद अने संपदा विवरी देखामे ठे.

पणिवाय अकराइं अठावीसं तहा य इरियाए ॥ नवनउअमरकारसयं, डुत्तीस पय संपया अठ ॥ ३१ ॥

अर्थ—(पणिवाय के०) प्रणिपात दंडकने विषे (अठावीसं के०) अठ्ठावीश (अक्कराइं के०) अक्षर ठे, (तहा य के०) तथा च एटले तेमज वली (इरियाए के०) इरियावहिने विषे (नवनउअमरकरसयं के०) नवनवति अक्षरशतं एटले नवाणुये अधिक एकशो अक्षर जाणवा अर्थात् एकशोने नवाणु अक्षर जाणवा, तथा (डुत्तीस के०) बत्रीश (पय के०) पद जाणवां अने (संपया के०) संपदा (अठ के०) आठ जाणवी ॥ ३१ ॥

तह ॥ सग संपय पयतुल्ला, सतरक्कर अठमी डुपया ॥ ३० ॥ "नवक्कर अठमी डुपय ठी" इत्यन्ये

अर्थ–(नवकारे के०) नवकारने विषे (वन्नठसठि के०) अमशठ वर्ण होय, तथा नमोअरिहंताणं आदिक (पय के०) पद ते (नव के०) नव होय, अने (संपया के०) संपदा तो (अठ के०) आठ होय. (तह के०) तिहां ते आठ संपदामांहे प्रथमनी "सव्वपावप्पणासणो" सुधीनी जे (सगसंपय के०) सात संपदा ठे, ते तो (पयतुल्ला के०) पदने तुल्य जाणवी एटले जेटला पद तेटली संपदा पण जाणवी. तथा (अठमी के०) आठमी संपदा तो "मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं" ए बे पदने एकठां कहीये माटे ए (डुपया के०) बे पदनी जाणवी, तथा अन्य केटलाएक आचार्य एम कहे ठे, के "पढमं हवइ मंगलं" ए (नवक्करअठमी के०) नव अक्षरनी आठमी

संपदा तथा "एसो पंच नमुक्कारो, सबपावप्पणा-सणो" ए (डुपय के०) बे पदनी अने सोल अक्षरनी (ठठी के०) ठठी संपदा जाणवी॥३०॥

हवे प्रणिपात खमासमणना अक्षर तथा पद अने संपदा विवरी देखामे छे.

पणिवाय अक्खराइं अठावीसं तहा य इरियाए ॥ नवनउअमक्खरसयं, डुतीस पय संपया अठ ॥ ३१ ॥

अर्थ–(पणिवाय के०) प्रणिपात दंडकने विषे (अठावीसं के०) अठावीश (अक्खराइं के०) अक्षर छे, (तहा य के०) तथा च एटले नज वली (इरियाए के०) इरियावहिने विषे नवनउअमक्खरसयं के०) नवनवति अक्षरशतं टखे नवाणुवे अधिक एकशो अक्षर जाणवा र्थात् एकशोने नवाणु अक्षर जाणवा, तथा ड़ुतीस के०) बत्रीश (पय के०) पद जाणवां रे (संपया के०) संपदा (अठ के०) आठ णवी ॥ ३१ ॥

के०) गमणागमणे ए त्रीजी संपदानुं पहेलुं पद. (पाणा के०) पाणक्कमणे ए चोथी संपदानुं पहेलुं पद, (जे मे के०) जे मे जीवा विराहिया ए पांचमी संपदानुं पहेलुं पद, (एगिंदि के०) एगिंदिया ए छठी संपदानुं पहेलुं पद,(अभिके०) अभिहया ए सातमी संपदानुं पहेलुं पद, (तस्स के०)तस्स उत्तरीकरणेणं ए आठमी संपदानुं पहेलुं पद जाणवुं ॥३२॥ हवे ए इरियावहिनी आठ संपदानां नाम कहे छे.

अप्नुवगमो निमित्तं, ठहेअइहेउ–संगहे पंच ॥ जीवविराहण पमि–क्कमण जेयउ तिन्नि चूलाए ॥ ३३ ॥

अर्थ–अभ्युपगम एटले अंगीकार करवुं ते–अहीं पापना टालवानुं जे आलोचना लक्षण कार्य. तेनो अंगीकार करवो ते स्वरूप. एटला माटे इच्छामि पमिक्कमिउं ए बे पदनी प्रथम (अप्नुवगमो के०) अभ्युपगम संपदा जाणवी.

२ ते अंगीकारकृत वस्तुने उपजाववाना

कारणरूप इरियावहियाए, विराहणाए, ए बे पदनी बीजी (निमित्त के०) निमित्त संपदा जाणवी.

३ सामान्य प्रकारे प्रायश्चित उपजाववारूप गमणागमणे ए एक पदनी त्रीजी (उह के०) उघ एटले सामान्य हेतु संपदा जाणवी. ए जीव हिंसा उपजाववानो सामान्य हेतु गमनागमन छे.

४ जीवहिंसाना विशेष हेतुरूप एटले विशेषपणे प्राण बीजादिक आक्रमणरूप ते पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, उसाउत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कडासंताणासंकमणे, ए चार पदनी चोथी (इअरहेउ के०) इतरहेतु एटले विशेष हेतु संपदा जाणवी. जे सामान्यथी इतर ते विशेष होय; माटे विशेष हेतु एवुं नाम जाणवुं.

५ समस्त जीवना परितापरूप जीवविराधना संग्रहरूप ते 'जे मे जीवा विराहिया' ए एकपदनी (पंच के०) पांचमी [संगहे के०) संग्रह संपदा जाणवी.

६ एकेंद्रियादिक पांच प्रकारना जीवने देखाडवारूप, जीवन्नेद ५६३ प्रमुख कथनरूप एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, ए पांच पदनी उठी (जीव के०) जीव संपदा जाणवी.

७ ते जीवादिक न्नेदने परितापना-विराधनारूप ते अन्निहयाथी मांडीने तस्स मिछामि डुक्कडं पर्यंत अगीयार पदनी सातमी (विराहण के०) विराधना संपदा जाणवी.

८ प्रायश्चितविशोधनकरणरूप ते तस्स उत्तरीकरणेणंथी मांडीने ठामि काउस्सग्गं लगें ठ पदनी आठमी (पडिक्कमण के०) प्रतिक्रमण संपदा जाणवी.

(न्नेयउ के०) ए न्नेदथकी. ए मांहे प्रथमनी पांच संपदा ते इरियावहिनी मूल संपदा जाणवी, अने पाउलनी (तिन्नि के०) त्रण संपदा ते इरियावहिनी (चूलाए के०) चूलिकारूप जाणवी ॥३३॥

कारणरूप इरियावहियाए, विराहणाए, ए बे पदनी बीजी (निमित्तं के०) निमित्त संपदा जाणवी.

३ सामान्य प्रकारे प्रायश्चित उपजाववारूप गमणागमणे ए एक पदनी त्रीजी (उह के०) उघ एटले सामान्य हेतु संपदा जाणवी. ए जीव हिंसा उपजाववानो सामान्य हेतु गमनागमन छे.

४ जीवहिंसाना विशेष हेतुरूप एटले विशेषपणे प्राण बीजादिक आक्रमणरूप ते पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, उसाउत्तिंग पणगदगमट्टीमक्कडासंताणासंकमणे, ए चार पदनी चोथी (इअरहेउ के०) इतरहेतु एटले विशेष हेतु संपदा जाणवी. जे सामान्यथी इतर ते विशेष होय; माटे विशेष हेतु एवुं नाम जाणवुं.

५ समस्त जीवना परितापरूप जीवविराधना संग्रहरूप ते 'जे मे जीवा विराहिया' ए एकपदनी (पंच के०) पांचमी [संगहे के०] संग्रह संपदा जाणवी.

६ एकेंद्रियादिक पांच प्रकारना जीवने देखाडवारूप, जीवनेद ५६३ प्रमुख कथनरूप एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया. ए पांच पदनी छठी (जीव के०) जीव संपदा जाणवी.

७ ते जीवादिक नेदने परितापना-विराधनारूप ते अभिहयाथी मांमीने तस्स मिछामि डुक्कमं पर्यंत अगीयार पदनी सातमी (विराहण के०) विराधना संपदा जाणवी.

८ प्रायश्चित्तविशोधनकरणरूप ते तस्स उत्तरीकरणेणंथी मांमीने ठामि काउस्सग्गं सुधी ठ पदनी आठमी (पमिक्कमण के०) प्रतिक्रमण संपदा जाणवी.

(नेयठ के०) ए नेदयकी. ए मांहे प्रथमनी पांच संपदा ते इरियावहिनी मूल संपदा जाणवी, अने पाठलनी (तिन्नि के०) त्रण संपदा ते इरियावहिनी (चूलाए के०) चूलिकारूप जाणवी ॥२३॥

हवे नमुत्थुणंनी प्रत्येक संपदाना पदनी संख्या तथा आदिपद कहे छे.

दु-ति-चउ-पण-पण-पण-दु-च,-उ-तिपय सक्कथय-संपयाइपया ॥ नमु आइग पुरिसो लो,-ग अजय धम्मप्प जिण सव्वं ॥ ३४ ॥

अर्थ–पहेली (दु के०) बे पदनी, बीजी (ति के०) त्रण पदनी, त्रीजी (चउ के०)चार पदनी, चोथी (पण के०) पांच पदनी, पांचमी (पण के०) पांच पदनी, छठी (पण के)पांच पदनी, सातमी (दु के०) बे पदनी, आठमी (चउ के०) चार पदनी अने नवमी (तिपय के०) त्रण पदनी, ए (सक्कथय के०) नमुत्थुणंने विषे संपदानां पद कह्यां, ते सर्व मली तेत्रीश जाणवां.

हवे नमुथ्थुणंनी (संपया के०) संपदाना (आइपया के०) आदिना एटले पहेला (धुरियां) पद कहे छे. (नमु के०) नमुथ्थुणं ए पहेली संपदानुं प्रथम पद जाणवुं, (आइग के०) आइगराणं ए बीजी संपदानुं प्रथम पद, (पुरिसो

आइगराणंथी मांमीने सयंसंबुद्धाणं लगें त्रण पदनी बीजी (उह के०) उंघ एटले सामान्य हेतु संपदा जाणवी. पठी ए बीजी संपदाना अर्थने विशेपे दीपावे तेमाटे सामान्यहेतुथी (इयरहेऊ के०) इतरहेतु ते विशेष हेतुरूप त्रीजं संपदा जाणवी, पठी आद्य संपदाना अर्थने विशेपे दीपावे एटले सामान्य स्तवनानो उपयोग तेनुं कहेवुं ते चोथी (उवर्उग के०) उपयोग संपदा जाणवी. पठी ए उपयोग संपदानाज अर्थने हेतु सद्भावे करी दीपावे ते पांचमी (तद्धेऊ के०) तत् हेतु संपदा जाणवी, अथवा उपयोग हेतु संपदा जाणवी, पठी एज उपयोग हेतु संपदाना अर्थ गुण दीपाववा निमित्ते अर्थ विशेपे जणावे एटले कारण सहित स्तववा योग्यनुं स्वरूप कहेवुं ते छठी (सविसेसुवर्उग के०) सविशेष उपयोग हेतु संपदा जाणवी, पठी यथार्थ पोताना स्वरूपनुं हेतु प्रकटार्थ देखाडवा रूप सातमी (सरूवहेउ

के०) स्वरूप हेतु संपदा जाणवी, तथा पोताने समान फलदायक प्रकटार्थ रूप एटले स्तवना करनारने आपतुल्य करे एवा परम फलदायक एटले पोतानी समान करने फलनुं करण एट-ला माटे आठमी (नियसमफलय के०) निज समफलदनामे संपदा जाणवी, तथा मोक्ष स्वरूप प्रकटार्थ रूप मोक्षपदनुं स्वरूप प्रगट छे एटला माटे नवमी (मुक्के के०) मोक्ष संपदा जाण-वी. जे माटे कह्युं छे के " सव्वन्नूआई पढमो, बीओ सिवमयलमाइ आलावो ॥ तइओ नमो जिणाणं, जियन्नयाणं तन्निदिट्ठो ॥ १ ॥ इ-त्यावश्यके ॥ ३५ ॥

हवे नमुथ्थुणंना अक्षरादिकनी एकंदर सरवाले संख्या कहे छे.

दोसगनउआ वण्णा, नवसंपय पयतित्तीस सक्कथए ॥ चेइयथयढ संपय, तिचत्त पय वण्ण दुसयगुणतीसा ॥ ३६ ॥

अर्थ-(सक्कथए के०) शक्रस्तव जे नमुथ्थुणं

तेने विषे सर्व मळीने (दोसगनउत्र्या के०) वर्शंने सत्ताणुं (वणा के०) वर्ण जाणवा अने (नवसंपय के०) नव संपदा जाणवी, तथा (पयतित्तीस के०) पद तेत्रीश जाणवां.

हवे (चेइयथय के०) चैत्यस्तव एटले अरिहंतचेइयाणंने विषे सर्व मळी (अठसंपय के०) आठ संपदा जाणवी अने (तिचत्तपय के०) तेंतालीश पद जाणवां, तथा (वस के०) वर्ण एटले अक्षर ते (डुसयगुणतीसा के०) वर्शे ने उंगणत्रीश जाणवां. ॥ ३६ ॥

हवे चैत्यस्तव जे अरिहंतचेइयाणं तेनी प्रत्येक संपदाना पदनुं मान तथा प्रत्येक संपदाना आदिपद कहे छे.

डु छ सग नव तिय छ चउ, छप्पय चिइ संपया पया पढमा ॥ अरिहं वंदण सद्धा, अन्न सुहुम एव जा ताव ॥ ३७ ॥

अर्थ—पहेली (डु के०) बे पदनी बीजी (. . .) छ पदनी, त्रीजी (सग के०) सात

पदनी, चोथी (नव के०) नव पदनी, पांचमी (तिय के०) त्रण पदनी, छठी [छ के०) छ पदनी. सातमी (चउ के.०) चार पदनी, आठमी (छप्पय के०) छ पदनी जाणवी.

हवे ए (पिढ़ के.०) चैत्यस्तवनी प्रत्येक (संपया के०) संपदानां (पढमा के०) प्रथमना एटले आदिनां (पया के०) पद कहे छे. तिहां (अरिहं के०) अरिहंतचेइयाणं ए पहेली संपदानुं प्रथम पद (वंदण के०) वंदण-वत्तियाए ए बीजी संपदानुं प्रथम पद (सद्धाए के.०) सद्धाए ए त्रीजी संपदानुं प्रथम पद, (अन्न के०) अन्नत्थ ऊससिएणं ए चोथी संपदानुं प्रथम पद, (सुहुम के०) सुहुमेहिं अंगसंचा-लेहिं ए पांचमी संपदानुं प्रथम पद, (एव के०) एवमाइएहिं आगारेहिं ए छठी संपदानुं प्रथम पद, (जा के०) जाव अरिहंताणं ए सातमी संपदानुं प्रथम पद, (ताव के.०) तावकायं ए आठमी संपदानुं प्रथम पद ॥ ३७ ॥

तेने विषे सर्व मलीने (दोसगनउआ के०) वर्णोने सत्ताणुं (वणा के०) वर्ण जाणवा अने (नवसंपय के०) नव संपदा जाणवी, तथा (पयतित्तीस के०) पद तेत्रीश जाणवां.

हवे (चेइयथय के०) चैत्यस्तव एटले अरिहंतचेइयाणंने विषे सर्व मली (अठसंपय के०) आठ संपदा जाणवी अने (तिचत्तपय के०) तेंतालीश पद जाणवां, तथा (वम् के०) वर्ण एटले अक्षर ते (डुसयगुणतीसा के०) वर्णो ने उंगणत्रीश जाणवां. ॥ ३६ ॥

हवे चैत्यस्तव जे अरिहंतचेइयाणं तेनी प्रत्येक संपदाना पदनुं मान तथा प्रत्येक संपदानो आदिपद कहे छे.

डु छ सग नव तिय छ चउ, छप्पय चिइ संपया पया पढमा ॥ अरिहं वंदण सद्धा, अन्न सुहुम एव जा ताव ॥ ३७ ॥

अर्थ–पहेली (डु के०) बे पदनी बीजी (छ के०) छ पदनी, त्रीजी (सग के०) सात

मात्र आदिके करी पांचमी (बहुवयंत आगारा के०) बहुवचनांत आगार संपदा जाणवी. इहां आगारा पद बेहुने जोमवुं, तथा एक सदृश बीजो अल्पबाहुल्य एटले एवमाइएहिं पणे करी अग्निस्पर्श, पंचेंद्रिय छेदन, चौरादिनय, सर्पादि कदाचित् आवी मले तो इत्यादि आगार कह्यां, माटे बहु हेतु आगंतुक नावरूप अथवा अग्न्यादिक उपघातरूप छही (आगंतुग आगारा के०) आगंतुगागार संपदा जाणवी. तथा जाव अरिहंताणं इत्यादिक काउस्सग्गनो अवधि मर्यादारूप जे संपदा, ते सातमी (उस्सग्गावहि के०) कायोत्सर्गावधि संपदा जाणवी, तथा कायोत्सर्गनुं यथावस्थारूप स्वरूप ते आठमी (सरूव के०) स्वरूप संपदा जाणवी. ए (अठ के०) आठ संपदानां नाम कह्यां ॥ हवे नामस्तव एटले लोगस्सादिकने विषे पद आदिकनी संख्यादिक कहे छे.

नामथयाइसु संपय, पयसम अमवीस सो

हवे ए चेत्यस्तवनी संपदाउंना नाम कहे ठे.

अप्नुवगमो निमित्तं, हेउ इग-बहु-वयंत आगारा ॥ आगंतुग आगारा, उस्सग्गावहि सरूवठ ॥ ३७ ॥

अर्थ–जे अंगीकार करवुं तेने अभ्युपगम कहीये माटे इहां अरिहंत वांदवाना अंगीकार रूप प्रथम (अप्नुवगमो के०) अभ्युपगम संपदा जाणवी, तथा काउस्सग्ग कया निमित्ते करी करीये ? ते बीजी (निमित्तं के०) निमित्त संपदा जाणवी. तथा श्रद्धादिक हेतु वधते वधते करी करिये, केमके श्रद्धादिक कारण विना निष्फल थाय माटे त्रीजी (हेउ के०) हेतु संपदा जाणवी. तथा आगार राख्या विना निरतिचारपणे काउस्सग्ग न थाय, एटला माटे आगार राखवानी अन्नत्थ ऊससिएणं इत्यादि उच्छ्वासादिकने कहवे करी चोथी (इगवयंत के०) एकवचनांत आगार संपदा जाणवी. तथा " सुहुमेहिं अंग संचालेहिं " एटले सूक्ष्म नेत्रादिक फरकवादि

पटले अक्षर जाणवा. तथा पुक्खरवरदीना 'सुअस्स भगवओ' पर्यंत (दुसयसोल के०) बसें ने सोल अक्षर जाणवा, अने सिद्धाणंबुद्धाणंना करेमि काउस्सग्गं पर्यंत (अठनउअसयं के०) एकशो ने अठाणुं अक्षर जाणवा ॥ ३९ ॥

पणिहाण दुवन्नसयं, कमेण सग ति चउवीस तित्तीसा ॥ गुणतीस अठवीसा, चउतीसिगतीस बार गुरु वण्णा ॥४०॥ दारं ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ १० ॥

अर्थ—हवे जावंतिचेइयाइं तथा जावंत केवि साहू अने सेवणा आभवमखंडा लगें जयवीयराय ए त्रण (पणिहाण के०) प्रणिधान सूत्र छे, तेने विषे (दुवन्नसयं के०) एकशो ने बावन अक्षर जाणवा.

हवे (कमेण के०) अनुक्रमे संयोगीया गुरु पटले भारे अक्षर सर्व सूत्रोनां कहे छे. तिहां प्रथम नवकारने विषे क्का, प्रा, व, क्का, द्व, प्प, वे (सग के०) सात अक्षर गुरु पटले

वीस-कमा ॥ अडुरुत्त-वत्त दोसठ, डुसय-सोल-छनउअसयं ॥ ३९ ॥

अर्थ—(नामथयाइसु के०) नामस्तवादिकने विषे एटले नामस्तव ते लोगस्स तथा आदिशब्दथकी पुस्करवरदी ते श्रुतस्तव जाणवुं-अने सिद्धस्तव ते सिद्धाणं बुद्धाणं जाणवुं, ए त्रण सूत्रने विषे (पयसम के०) पद समान (संपय के०) संपदा जाणवी. एटले जेटलां ए सूत्रोनां पद छे, तेटलां विसामानां स्थानक जाणवां, तिहां लोगस्सनां पद (अडवीस के०) अहावीश अने संपदा पण अहावीश जाणवी. अने पुस्करवरदीनां पद (सोल के०) सोल अने संपदा पण सोल जाणवी. तथा सिद्धाणं बुद्धाणंना पद (वीस के०) वीश अने संपदा पण वीश जाणवी. ए (कमा के०) अनुक्रमे संपदा तथा पद कहेवां, तथा लोगस्सने विषे (अडुरुत्त के०) वीजी वार अणउच्चर्या एवा, (दोसठ के०) बसें ने साठ (वत्त के०) वर्ण

स्स, ज्जि, क्का, स्स, म्म, क्क, ट्टिं, ठ, त्ता, ठ, द्यी, ठ, ठि, ठा, ठा, ठिं, च, म्म, द्दि, ठि, स्स, ग्गं; ए (इगतीस के०) एकत्रीश अक्षर गुरु छे.

तथा प्रणिधान त्रिकने विषे छे, द्वा, ष्ठ, वे, वे, ग्गा, ट्ठ, ठि, द्ध, त्ता ष्ठ, व, ए (चार गुरुवन्ना के०) चार गुरुवर्ण एटले जारे अक्षर जाणवा॥

ए प्रमाणे वर्ण संख्या, पद संख्या अने संपदा मली त्रण द्वार कह्यां, तेनी साथे पूर्वे कहेलां सात द्वार मेलवतां मूल दश द्वार कहे-वाणां, अने उत्तर जेद १०७० थया. ए सूत्रोना अर्थ सर्व श्री आवश्यक निर्युक्तिनी वृत्तिथी जाणजो. इहां घणो ग्रंथ वधे माटे अर्थ ल-रूयो नथी ॥ ४० ॥



सूत्र.	सूत्रोनां नाम.	पदसंख्या.	संपदा	सर्वाक्षर.	गुरु	लघु
नवकार.	पंचमंगलसुअ०	९	८	६८	७	६१
इच्छामिखमासम०	प्रणिपातश्रेजसूत्र		०	२८	३	२५
इरियावहि	पडिक्कमणासूत्र.	३२	८	१९९	२४	१७५
नमुत्थुणं.	शक्रस्तव.	३३	९	२९७	३३	२६४
अरिहंतचेइयाणं.	चैत्यस्तवाध्ययन.	४३	८	२२९	२९	२००
लोगस्स.	नामस्तव.	२८	२८	२६०	२८	२३२
पुक्खरवरदीवड्ढे.	श्रुतस्तव.	१६	१६	२१६	२४	१९२
सिद्धाणंबुद्धाणं.	सिद्धस्तव.	२०	२०	१९८	३१	१६७
जावंतिचेइयाइं. जावंतकेविसाहू. जयवीयराय.	प्रणिधानत्रिक.	अनुक्रमे.	अनु०	१५२	१२	१४०
सर्वमळी सरवाळे		१८१	९७	१६४७	२०१	१४४६

इरियावहिनी संपदा.	पद संख्या. धुरिया पद.
१ अभ्युपगमसंपदा.	२ इछामि.
२ निमित्तसंपदा.	२ इरियावहियाए.
३ उंघसंपदा.	१ गमणागमणे.
४ इतरहेतुसंपदा.	४ पाणक्कमणे.
५ संग्रहसंपदा.	१ जे मे जीवा विराहिया.
६ जीवसंपदा.	५ एगिंदिया.
७ विराधनासंपदा.	११ अभिहया.
८ पमिक्कमणसंपदा.	६ तस्स उत्तरिकरणेणं.
चैत्यस्तवनीसंपदा.	पद संख्या. धुरिया पद.
१ अभ्युपगमसंपदा.	२ अरिहंतचेइयाणं.
२ निमित्तसंपदा.	६ वंदणवत्तिआए.
३ हेतुसंपदा.	७ सद्धाए.
४ एकवचनांतसंपदा.	ए अन्नष्ठ ऊससिएणं.
५ बहुवचनांतसंपदा.	३ सुहुमेहिं ...
६ आगंतुगागारसंपदा.	६ एवमाइएहिं आगारेहिं
७ कायोत्सर्गावधिसंपदा.	४ जाव अरिहंताणं.
८ स्वरूपसंपदा.	६ तावकायं.

शक्रस्तवनी संपदा.	पद संख्या, धुरिया पद.
१ स्तोतव्य संपदा.	२नमुथ्थुणं अरिहंताणं
२ उंघसंपदा.	३ आइगराणं.
३ इतरहेतुसंपदा.	४ पुरिसुत्तमाणं.
४ उपयोगसंपदा.	५ लोगुत्तमाणं.
५ तद्धेतुसंपदा.	५ अनयदयाणं.
६ सविशेषोपयोगसंपदा.	५ धम्मदेसयाणं.
७ स्वरूपहेतुसंपदा.	२ अप्पडिहयवर०
८ निजसमफलदसंपदा.	४ जिणाणं जावयाणं.
ए मोक्षसंपदा.	३ सवन्नूणं०

हवे अगीआरमुं पांच दंमकनुं द्वार अने बारमुं पांच दंमकने विषे देव वांदवाना जे बार अधिकार ठे, तेनुं द्वार कहे ठे.

पणदंमा सक्कथ्थय, चेइय्य नाम सुअ सिद्ध-थ्थय इछ ॥ दारं ॥ ११ ॥ दो इग दो दो पंच य, अहिगारा बारस कमेण ॥ ४१ ॥

अर्थ–पणदंमा के०) पांच दंमकनां नाम कहे ठे. तेमां पहेलुं नमुथ्थुणंने (सक्कथ्थय के०)

इरियावहिनी संपदा.	पद संख्या. धुरिया पद.
१ अभ्युपगमसंपदा.	२ इछामि.
२ निमित्तसंपदा.	२ इरियावहियाए.
३ उंघसंपदा.	१ गमणागमणे.
४ इतरहेतुसंपदा.	४ पाणक्कमणे.
५ संग्रहसंपदा.	१ जे मे जीवा विराहिय
६ जीवसंपदा.	५ एगिंदिया.
७ विराधनासंपदा.	११ अभिहया.
८ पमिक्कमणसंपदा.	६ तस्स उत्तरिकरणेणं

चैत्यस्तवनीसंपदा.	पद संख्या. धुरिया पद
१ अभ्युपगमसंपदा.	२ अरिहंतचेइयाणं.
२ निमित्तसंपदा.	६ वंदणवत्तिआए.
३ हेतुसंपदा.	७ सद्धाए.
४ एकवचनांतसंपदा.	ए अन्नछ उससिएणं.
५ बहुवचनांतसंपदा.	३ सुहुमेहिं
६ आगंतुगागारसंपदा.	६ एवमाइएहिं आगार
७ कायोत्सर्गविधिसंपदा.	४ जाव अरिहंताणं.
८ स्वरूपसंपदा.	६ तावकायं.

चैत्यवंदनने विषे (वारस अहिगारा के०) बार अधिकारो ठे ॥ ४१ ॥

हवे ए वार अधिकारनां धुरियां पद एटले आद्यनां पद कहे छे.

नमु जेइअ अरिहं लो,-ग सब पुरक तम सिद्ध जो देवा ॥ उज्जि चत्ता वेआ,-वग अहिगार पढम पया ॥ ४२ ॥

अर्थ-(नमु के०) नमुठुणं ए पहेला अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (जेइअ के०) जेअअईआ सिद्धा ए बीजा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, तथा (अरिहं के०) अरिहंत चेइयाणं ए त्रीजा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (लोग के०) लोगस्स उज्जोअगरे ए चोथा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (सब के०) सबलोए अरिहंतचेइयाणं ए पांचमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (पुरक के०) पुरकरवरदीवढ्ढे ए ठठा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं,

शक्रस्तव दंमक कहिये. बीजुं अरिहंत चेश्याणंने (चेइअ के०) चैत्यस्तव दंमक कहिये. त्रीजुं लोगस्सने (नाम के०) नामस्तव दंमक कहिये. चोथुं पुरकरवरदीने (सुअ के०) श्रुतस्तव दंमक कहिये. पांचमुं सिद्धाणंबुद्धाणंने (सिद्धथय के०) सिद्धस्तव दंडक कहिये. ए पांच दंमकना नामनुं अगीयारमुं द्वार कह्युं; सर्व मली उत्तर बोल १०७५ थया ॥ हवे (इक्क के०) ए पांच दंडकने विषे देव वांदवाना बार अधिकार छे, तेमनुं बारमुं द्वार कहे छे.

तिहां प्रथम शक्रस्तव मध्ये (दो के०) बे अधिकार छे, तथा बीजा अरिहंतचेश्याणंरूप चैत्यस्तवमध्ये (इग के०) एक अधिकार छे, तथा त्रीजा नामस्तव एटले लोगस्सने विषे (दो के०) बे अधिकार छे, तथा चोथा श्रुतस्तव मध्ये (दोके०) बे अधिकार छे, अने पांचमा सिद्धस्तव मध्ये (पंच य के०) पांच अधिकार छे. ए (कमेण के०) अनुक्रमे कहेवा. सर्व मली

अर्थ—नमुत्थुणंथी मांमीने जियन्नयाणं पर्यंत(पढमअहिगारे के०)पहेला अधिकारने विषे जे तीर्थंकर थया, केवलज्ञान पाम्या छे; एवा (भावजिणे के०) भावजिनने एटले भावतीर्थंकरने(वंदे के०)हुं वांडुं छुं, तथा जे अ अईथा सिद्धा ए गाथायें(बीयए उ के०)बीजो अधिकार छे, तेने विषे वली जे आगल थाशे एवा (दव्व जिणे के०) ड्रव्यजिनने हुं वांडुं छुं. ए बे अधिकार नमुथ्थुणंना जाणवा. तथा (तइय के०) त्रीजा अधिकारे (इगचेइयठवणजिणे के०) एक चैत्यना स्थापनाजिनने हुं वांडुं छुं, एटले एक देरासरमांहेली सर्व प्रतिमाउने वंदन करवुं ए अरिहंत चेइयाणंने पाठे जाणवो. ए सूत्रोमां एकज अधिकार छे. तथा लोगस्स उज्जोअगरे रूप (चउथ्थंमि के०) चोथा अधिकारने विषे (नामजिणे के) श्रीरुषजादिक नामजिनने हुं वांडुं छुं. ॥ ४२ ॥

तिहुअण–ठवणजिणे पुण, पंचमए विह-

(तम के०) तमतिमिरपमलविकंसणस्स ए सातमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (सिद्ध के०) सिद्धाणं बुद्धाणं ए आठमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (जो देवा के०) जो देवाण वि देवो ए नवमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं,(उर्जि के०) उर्जिंतसेलसिहरे ए दशमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं (चत्ता के०) चत्तारि अट्ठ दस दो य, ए अगीयारमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (वेआवच्चग के०) वेआवच्चगराणं ए बारमा अधिक.रनुं प्रथम पद जाणवुं, ए बार (अहिगार के०) अधिकारोना (पढमपया के०) पहेलां पद एटले आदिनां पद (धुरियां) जाणवां ॥ ४२ ॥

ए बार अधिकार मांहेलां कया अधिकारे कोने वांदवा ? ते कहे छे.

पढम-अहिगारे वंदे, जावजिणे बीयए उ दवजिणे ॥ इगचेइय-ठवणजिणे, तइय च-उत्थंमि नामजिणे ॥ ४३ ॥

अर्थ—नमुत्थुणंथी मांमीने जियनयाणं पर्यंत(पढमअहिगारे के०)पहेला अधिकारने विषे जे तीर्थंकर थया, केवलज्ञान पाम्या वे; एवा (जावजिणे के०) जावजिनने एटले जावतीर्थंकरने(वंदे के०)हुं वांडुं बुं, तथा जे अ अईआ सिद्धा ए गाथायें (बीयए उ के०)बीजो अधिकार वे, तेने विषे वली जे आगल थाशे एवा (दव जिणे के०) द्रव्यजिनने हुं वांडुं छुं. ए बे अधिकार नमुथ्थुणंना जाणवा. तथा (तइय के०) त्रीजा अधिकारे (इगचेइयठवणजिणे के०) एक चैत्यना स्थापनाजिनने हुं वांडुं छुं, एटले एक देरासरमांहेली सर्व प्रतिमाउने वंदन करवुं ए अरिहंत चेइयाणंने पाठे जाणवो. ए सूत्रोमां एकज अधिकार वे. तथा लोगस्स उज्जोअगरे रूप (चनुथ्थंमि के०) चोथा अधिकारने विषे (नामजिणे के) श्रीऋषनादिक नामजिनने हुं वांडुं छुं. ॥ ४२ ॥

तिहुअण—ठवणजिणे पुण, पंचमए विह-

रमाण-जिण वंदे ॥ सत्तमएं सुयनाणं, अठमए सव्वसिद्ध-थुई ॥ ४४ ॥

अर्थ-(पुण के०) वली सव्वलोए अरिहंतचेइयाणंरूप (पंचमए के०) पांचमा अधिकारने विषे स्वर्ग, मृत्यु अने पाताल रूप (तिहुअण के०) त्रण जुवनने विषे जे शाश्वता अने अशाश्वता एवा (ठवणजिणे के०) स्थापना जिन ठे ते प्रत्ये हुं वांडुं. तथा पुरकरवरदीवढेनी पहेली गाथा रूप (वंदे के०) वठा अधिकारने विषे अढीद्वीपमध्ये श्रीसीमंधर स्वाम्यादि (विहरमाणजिण के०) विचरता जाव जिनप्रत्ये वांडुं ठुं. तथा तमतिमिरपमल इहांथी मांमीने सुयस्स जगवर्ड पर्यंत (सत्तमए के०) सातमा अधिकारने विषे (सुयनाणं के०) श्रीश्रुतज्ञानप्रत्ये हुं वांडुं. तथा सिद्धाणं बुद्धाणं ए गाथा रूप (अठमए के०) आठमा अधिकारने विषे तीर्थ अतीर्थादिक पन्नर जेद

स्तुति जाणवी. तथा वेयावच्चगराणं ए गाथारूप (चरिमे के०) छेला वारमा अधिकारने विषे (सुदिट्ठि के०) सम्यग्दृष्टि (सुर के०) देवताने (समरणा के०) स्मरवारूप स्तुति जाणवी. ॥ ४५ ॥

आ ठेकाणे अगीयारमा अधिकारने विषे चत्तारि अठ दस इत्यादि गाथामां घणा प्रकारे देव वांद्या छे ते मांहेला केटला एक इहां लखीये छीए. संभवादिक चार जिन दक्षिण दिशे, तथा सुपार्श्वादिक आठ जिन पश्चिमदिशे, तथा धर्मादि दश जिन उत्तरदिशे, तथा श्रीऋषभ अने अजित ए बे जिन पूर्वदिशे. एवं चोवीश जिनने अष्टापदे वांद्या छे, तथा बीजे अर्थे प्रथमना चारने आठ गुणा करीये तेवारे बत्रीश थाय, अने वचला दशने बे गुणा करिये, त्यारे वीश थाय. ए बे आंक मेलवीये तेवारे बावन चैत्य, नंदीश्वरद्वीपे छे, तेने वांद्या छे.

तथा त्रीजे अर्थे (चत्त के०) छांड्या छे

(अरि के०) वैरी जेणे एवा अहदस एटले अढार अने बे पाछला मेळवीये त्यारे वीश तीर्थं-
कर थाय ते श्रीसमेतशिखरे सिद्ध थया तेने वांद्या, अथवा विचरता जिन उत्कृष्टे काळे एक समये जन्मथी वीश होय तेमने वांद्या.

तथा चोथे अर्थे आठने दश अढार थाय तेनी साथे वीशनो चोथो जाग पांच थाय, ते मेळवीये, तेवारे त्रेवीश थया. ते एक श्रीनेमी-
श्वर विना त्रेवीश जिन श्रीशत्रुंजये समवसर्या
छे, माटे तेने वांद्या.

पांचमे अर्थे दशने आठ गुणा करीये ते
एंशी थाय, तेने बमणा करतां एकशो ने
साठ थाय, ते उत्कृष्टकाळे पांच महाविदेहे
विचरे, तेने वांद्या.

छठे अर्थे आठ अने दश मळी अढार
थाय, तेने चार गुणा करतां बहोंतेर थाय. ए
अतीतादिक त्रण चोवीशी जरतादिक क्षेत्रनी वांदी.
सातमे अर्थे चारने आठ गुण करीये, ते

चारे धार थाय तेने दश गुणा करीये. तेवारे [illegible] चालीश थाय. तेने बमणा करतां [illegible] [illegible] थाय ते जरतादिक दश क्षेत्रनी [illegible] [illegible] जाणवी.

[illegible] मुख्य चार छे, तथा वली [illegible] [illegible] गुणा करतां सोशठ थाय. तथा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] थाय. तेनी [illegible] [illegible] [illegible] १७० जिन थाय. ते [illegible] [illegible] [illegible] जिनने वांदवा.

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible], विमानवासी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] प्रतिमा, [illegible]
[illegible] [illegible] वांदवां. [illegible] [illegible] [illegible] गाथा [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे. [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ४५ ॥

नव अहिगारा इह ललि,–अविछरा–वि-
-त्तिआइ अणुसारा ॥ तिणि सुयपरंपरया, बीयन
-दसमो इगारसमो ॥ ४६ ॥

अर्थ–(इह के०) ए बार अधिकारमांथी
पहेलो, त्रीजो, चोथो, पांचमो, छठो, सातमो,
आठमो, नवमो, अने बारमो, ए (नव अहि-
गारा के०) नव अधिकार ते (ललिअविछरा
०) ललितविस्तरा नामे भाष्यनी (वित्ति-
आइ के०) वृत्ति आदिकना (अणुसारा के०)
अनुसारथकी जाणवा. अने (बीयन के०)
बीजो अधिकार, जे अ अईंआ सिद्धा तथा
(दसमो के०) दशमो अधिकार उर्ज्जितसेल
ए गाथोक्त तथा (इगारसमो के०) अगी-
यारमो अधिकार चत्तारि अठ दस ए गाथोक्त
एटले जे अ अईंआ, उर्ज्जित अने चत्तारि, ए
(तिणि के०) त्रण अधिकार, ते (सुयपरंपरया
के०) श्रुतनी परंपराथी एटले जेन सिद्धांतनुं
व्याख्यान छे, तेम तथा गीतार्थ संप्रदायथी
जाणवा ॥ ४६ ॥

आवस्सय–चुणीए, जं जणियं सेसया ज-हिछाए ॥ तेणं उज्जिंताइवि, अहिगारा सुयमया चेव ॥ ४७ ॥

अर्थ–(जं के०) जेम (आवस्सयचुणी-ए के०) आवश्यक सूत्रनी चूर्णिने विषे तथा प्रतिक्रमण चूर्णीमध्ये (जणियं के०) कह्युं छे. जे उज्जितादिक (सेसया के०) शेष अधिकार ते (जहिछाए के०) यथेछायें जाणवा. (तेणं के०) ते कारण माटे ए (उज्जिताइवि के०) उज्जितसेलसिहरे इत्यादिक गाथाये पण जे (अहिगारा के०) अधिकारो ते सर्व (सुयम-या के०) श्रुतमय जाणवा. (चेव के०) च-कार पादपूर्णार्थं छे अने एव शब्द निश्चयवा-चक छे ॥ ४७ ॥

बीओ सुयत्थयाई, अत्थओ वन्निओ तहिं चेव॥ सक्कत्थयंते पढिओ, दव्वरिहवसरि पयडत्थो ॥४८॥

अर्थ–अने " जे अ अईया सिद्धा जे अ भ-विस्संति " इत्यादि गाथाये जे द्रव्यजिन वं-

दन रुप (बीओ के०) बीजो अधिकार ते पण (सुपत्थयाइ के०) श्रुतस्तवादि एटले श्रुतस्तवनी आदिमां आवेली पुरकरवरदी नामनी गाथाने विषे ठे ते (अब्रो के०) अर्थथकी तो (तहिं के०) श्रीआवश्यक चूर्णिने विषे ते श्रुतस्तव मांहेज (चेव के०) निश्चे (वन्निओ के०) वर्णितो एटले वर्णव्यो ठे. जेमके 'उक्कोसपएणं सत्तरिणं जिणवरसयं जहन्नपएणं वीसं तिह्नयराए, एताय एगकालेणं नवंति अईया अणागया अणंता ते तिह्नयरा नमंसामित्ति॥ ए पाठ ठे. अहीं कोइ शंका करे, के त्यां नखे तेम नणो, परंतु आंही लखेला पाठे करीने शुं ? तो त्यां कहे ठे, के (सक्कन्नयंते के०) शक्रस्तवना अंतने विषे जे (पढिओ के०) पठितः ए-

---

१ उत्कृष्टपदे एकसोसित्तेर जिनेश्वर जघन्यपदे वीश तीर्थंकर एटला एक काळे (साथे) होय छे. अतित काळे अनंता थया, अनागत काळे अनंता थशे; ते तीर्थंकरो (द्रव्यजिनो) ने नमुं छुं, ए प्रकारे.

धारी नहीं होय (इति के०) एम (मयन्ना के०) मध्यस्थ राग द्वेष रहित (असढाइन्न के०) अशठ पंम्ति, गीतार्थ पुरुषो तेणे जे आचर्यां होय, तो तेवा गीतार्थनी करेली जे (आयरणावि के०) आचरणा ते पण (हु के०) निश्चें श्रीजगवंतनी (आण के०) आज्ञाज कहीये (इति वयणर्ज के०) एवुं वचन छे, ते माटे (सु के०) सुष्टु एटले जला अथवा सुविहित अशठ गीतार्थनी करेली आचरणाने पण (वहुमन्नंति के०) बहुमानपूर्वक माने छे. ॥ ४ए ॥

ए चार अधिकारनुं बारमुं द्वार कह्युं, इहां सुधी उत्तर बोल १७७३ थया ॥

हवे चार वांदवा योग्यनुं तेरमुं आदे देइने बीजां पण द्वार कहे छे.

चन वंदणिज्ज जिण मुणि, सुय सिद्धा ॥ दारं ॥ १३ ॥ इह सुराइ सरणिज्जा ॥

॥ १४ ॥ चउह जिणा नाम ठवण. दव भाव जिणभेएणं ॥ ५० ॥

अर्थ-(चउवंदणिज्जा के०) चार वंदनीय एटले चार वांदवा योग्य कह्या छे. ते कया कया? तेनां नाम कहे छे. एक (जिण के०) जिन तीर्थंकर अरिहंत, बीजा (मुणि के०) मुनिराज साधु. त्रीजो (सुय के०) श्रुत-सिद्धांत-प्रवचन अने चोथा (सिद्धा के०) सिद्ध भगवान् जे मोक्ष प्राप्त थया ते जाणवा. ए चार वंदनीकनुं तेरमुं द्वार कह्युं. [illegible] ॥ १३ ॥

हवे एक [illegible] वांदवानुं चौदमुं द्वार कहे छे (इह के०) ए श्रीजिनशासनमांहे [illegible] (सुराइ के०) देव [illegible] (सरणिज्जा के०) स्मरणीय छे एटले [illegible] जाणवा. ए [illegible] वांदवानुं चौदमुं द्वार कह्युं. [illegible] ॥१४॥ हवे चार प्रकारना जिननुं पन्नरमुं द्वार कहे छे.

(चउहजिणा के०) चार प्रकारना जिन कह्या छे ते कहे छे. एक (नाम के०) नामजिन, बीजा (ठवण के०) स्थापना जिन, त्रीजा (दव्व के०) द्रव्यजिन, चोथा (भाव के०) भावजिन ए चार (जिणभेएणं के०) जिनना भेदे करीने चार जिन जाणवा ॥ ५० ॥

हवे ए चार प्रकारना जिननुं स्वरूप चार निक्षेपे कहे छे.

नामजिणा जिणनामा, ठवणजिणा पुण जिणंदपडिमाउ ॥ दवजिणा जिणजीवा, भावजिणा समवसरणत्था ॥ ५१ ॥ दारं ॥१५॥

अर्थ–प्रथम (जिणनामा के०) श्रीरुषभादिक जिननां जे नाम छे तेमने ते ते नामे बोलावीये छैये तेने (नामजिणा के०) नाम थकी जिन कहीये, (पुण के०) वली बीजा (जिणंद पडिमाउ के०) श्रीजिनेंद्रनी जे शाश्वती अशाश्वती प्रतिमाउ छे तथा पगलां छे ते सर्वने (ठवणजिणा के०) स्थापना जिन क-

हीये, त्रीजा जेणे तीर्थंकर नामकर्म वांध्युं छे एवा श्रीकृष्ण, श्रेणिकादिक ए सर्व तथा जे तेज जवमां तीर्थंकर पदवी पामशे पण दीक्षा लइने ज्यां सुधी केवल ज्ञान नथी पाम्या, त्यांसुधी तेपण (जिणजीवा के०) जिनना जीव कहेवाय, तेने (दवजिणा के०) ड्रव्यथकी जिन कहिये. जे तीर्थंकरो सिद्धि पदने वर्या छे ते पण ड्रव्य अरिहंत कहेवाय. चोथा जे केवलज्ञान पामीने (समवसरणत्था के०) श्रीसमवसरणने विषे स्थित थया, बेठा थका धर्मोपदेश आपे तेने (जावजिणा के०) जावथकी जिन जाणवा ॥ ५१ ॥ (दारं के०) ए चार प्रकारे जिनना नामनुं पन्नरमुं ध्वार कह्युं. उत्तर बोल १७७६ थया ॥

हवे चार थोयोनुं शोलमुं ध्वार कहे छे.

अहिगय–जिण–पढमथुई, बीया सव्वाण तइअ नाणस्स ॥ वेयावच्चगराण उ, उवओगत्थं चउत्थथुई ॥ ५२ ॥ दारं ॥ १६ ॥

अर्थ–जेनी आगल देव वांदीये एवी जे नामे मूलनायकनी प्रतिमा होय एटले प्रस्तुत अंगीकर्यो जे चोवीश जिन मांहेलो कोइ श्रीऋषजादिक एक जिन तेनं (अहिगयजिण के०) अधिकृत जिन कहीये तेनी (पढमथुई के०) प्रथम स्तुति ते अमुक जिननीज जाणवी. तथा (बीया के०) बीजी स्तुति तो (सवाण के०) सर्व तीर्थंकरोनी साधारण नक्तिरूप जाणवी. तथा (तइअ के०) त्रीजी स्तुति ते (नाणस्स के०) ज्ञाननी एटले श्रुत सिद्धांत प्रवचननी जाणवी. तथा श्रीजिनशासनना रखवाला (वेयावच्चगराण के०) वैयावृत्त्यना करनार एवा सम्यग्दृष्टि देवताउंनी (उ के०) वली (उवउगत्थं के०) उपयोग मनःस्मरणने अर्थे (चउत्थथुई के०) चोथी स्तुति जाणवी ॥ ५२ ॥ ए चार थुइनुं सोलमुं द्वार कह्युं ॥ त्तेत्तर बोल २००० थया ॥

हवे आठ निमित्तनुं सत्तरमुं द्वार कहे छे.

वारसगं ॥ ५१ ॥ दारं ॥ १० ॥

अर्थ—तिहां प्रथम देव वांदतां पाप टा ठे (तस्स के०) ते पाप टालवाना (उत्तरी करण के०) उत्तरीकरण (पमुह के०) प्रमुख (चउ के०) चार हेतु ठे, ते कहे ठे. एक तस्स उत्तरीकरणेणं एटले पापने आलोववं करी अर्थात् पापकर्म शोधी दूर करवे करी, बीजो पायछित्तकरणेणं एटले अतिहया पदथी उपन्न जे प्रायश्चित्त ते लेवे करी, त्रीजो विसोहिकर णेणं एटले राग द्वेषनुं टालवुं—अतिचार टाल वानी विशुद्धि करवे करी, चोथो विसल्लीकर णेणं एटले माया मात्सर्यादि वर्जवे करी मन वचन कायानी निःशल्यत्व, त्रिकाल अतीत अनागत वर्त्तमानने विषे अरिहंतादिक पद पद साथे पापकर्म टालवे काउस्सग्गनुं फल आपे; ए चार उत्तरीकरणादि हेतु कह्यां. तथा (सद्धाइआ के०) श्रद्धादिक (य के०) वली (पणहेउ के०) पांच हेतु ठे तेना नाम

थयुं अने उत्तर बोल २०२० थया ॥ ५४ ॥
हवे सोल आगारनुं उंगणीशमुं द्वार कहे छे.

अन्नडयाइ बारस, आगारा एवमाइया च-
उरो ॥ अगणि पणिंदिछिंदण, बोहीखोजाइ
म्कोय ॥ ५५ ॥ दारं ॥ १ए ॥

अर्थ-(अन्नडयाइ बारस आगारा के०)
अन्नडादि बार आगार एटले अन्नडऊससिए-
णंथी मांमीने सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं पर्यंत
बार आगार जाणवां. तेनां नाम कहे छे. प-
हेलो उंचो श्वास लेवे, बीजुं नीचो श्वास लेवे,
त्रीजुं खांसी-कफस आवे, चोथुं छींक आवे,
पांचमुं बगासुं आवे, छठुं उंकार ते ऊर्ध्ववात
आवे, सातमुं अधोवात (वाछूट) आवे, आठमुं
ज्रमरि आवे, नवमुं वमन पित्त मूर्छा आवे, दशमुं
सूक्ष्म अंगस्फुरकणथी, अगीयारसुं सूक्ष्म खेल-
सिंघाण नामक मेल संचारथी, बारमुं दृष्टि
प्रमुख संचारथी काउस्सग्ग न ज्ञांगे.

तेना जयथी अलगुं जवुं पडे, तेथी काउस्सग जंग न थाय, ए सोल आगारनुं उंगणीशमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल २०३६ थया ॥ ५५ ॥

हवे काउस्सग्गना उंगणीश दोष त्यागवा. तेना नामनुं वीशमुं द्वार कहे ले.

घोमग लय खंजाई, माळु-ड्डी नियल सबरि खलिण बहू ॥ लंबुत्तर थण संजइ, जमु हंगुलि वायस कविठ्ठे ॥ ५६ ॥

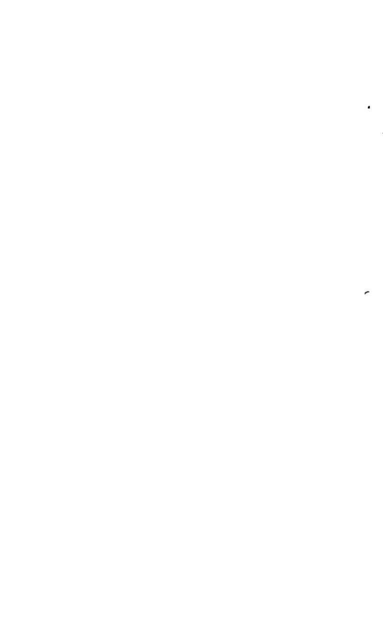
अर्थ–प्रथम घोमानी पेठे एक पग उंचो राखे, वांको पग राखे, ते (घोमग के०) घोटक दोष, बीजो जेम वायराथी वेलडी कंपे तेम शरीरने धूणावे, ते (लय के०) लता दोष, त्रीजो थांना प्रमुखने उठिंगण रहे, ते (खंजाई के०) स्तंनादि दोष, चोथो मेमें डारनें माथे माथुं लगावी रहे ते (माल के०) माल दोष, पांचमो गामानी उधनी पेरे शंकुला तथा पानी मेळवी पग राखे ते (उद्धी के०) उधि दोष, लठो नेगळमां पग नाखना-

वाने अर्थे संख्या करवाने अंगुली तथा पांपणना चाळा करे, ते (अमुहंगुली के०) अमुहंगुली दोष. नवमो वायस-कागडानी पेरे आंखना डोळा फेरवे, ते (वायस के०) वायस दोष. दशमो पहेरेलां वस्त्रने जुका तथा प्रस्वेदे करी मलिन थवाना भयथी गोपवी कोठनी पेरे गोपवी राखे, ते (कविट्ठ के०) कविट्ठ दोष ॥ ५९ ॥

सिरकंप मूअ वारुणि, पेहत्ति चइज्ज दोस गुणवीसं ॥ लंबुत्तर थण संजइ, न दोस समणीण सवहु सड्ढीण ॥ ६० ॥ द्वारं ॥

अर्थ-[illegible] यक्षाधिष्ठितनी पेरे माथुं धुणावे, ते (सिरकंप के०) सिरकंप दोष. [illegible] मूंगानी पेरे हुं हुं करे, ते (मूअ के०) मूअ दोष. [illegible] आलावा गणतां [illegible] [illegible] बुडबुड करे, ते (वारुणि के०) [illegible] दोष. [illegible] वानरनी पेरे [illegible] [illegible] डोळा फेरवे, ते (पेह के०) [illegible] ([illegible] के०) ए प्रमाणे ए ओगणीस

दोष ते (उस्सग्गे के०) काउस्सग्गने विषे जाणवा. तेने (चइऊण के०) छांडी, ए उगणीश दोषमां केटलाएक लम्ब अने अंगुली ए बेउ दोष भळे छे, तेथी वीश थाय, तथा एक (लंबुत्तर के०) लंबुत्तर, बीजो (थण के०) स्तन अने त्रीजो (संजइ के०) संयति ए त्रण (दोस के०) दोष ते (समणीण के०) श्रमणी-साध्वीने (न के०) न होय, केमके एनुं वस्त्रावृत शरीर होय, पण एटलुं विशेष जे साध्वी प्रतिक्रमणादि क्रिया करते मस्तक उघाडुं राखे एटले सोल दोष साध्वीने लागे, अने ए त्रण दोषने (वहु के०) वधू दोषे करी (स के०) सहित करिये तेवारे लंबुत्तरादि चार दोष थाय. ते (सड्ढीणं के०) श्राविकाने न होय, शेष पंदर दोष श्राविकाने लागे; ए सर्व दोष टाळीने काउस्सग्ग करवो एटले काउस्सग्गना दोषनुं वीशमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल २०५५ थया ॥ ५७ ॥



मधुरां वेद भंभोर अने (महुरसरं के०) मधुर शब्द छे जिहां अने वळी (गइछगुणं के०) महा अर्थयुक्त भक्ति, ज्ञान, वैराग्य अने आश्चर्यादिरसायुक्त एवुं श्रीवीतरागनुं (थुत्तं के०) स्तुति मुखे स्तवन (इच्छ के०) होय, ए स्तवन भणवानुं चाळीशमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल २०५३ थया ॥ ५८ ॥

हवे चैत्यवंदन एक दिवसमां केटलीवार करवुं ? तेनुं एकवीशमुं द्वार कहे छे.

पडिक्कमणे चेइय जिमण, चरिम पडिक्कमण सुयण पडिबोहे ॥ चिइवंदण इय जइणो, सत्त वेला अहोरत्ते ॥ ५९ ॥

अर्थ–एक (पडिक्कमणे के०) प्रभातने पडिक्कमणे पच्चख्खाण करतां देव वांदवाने विषे विशाललोचन रुप चैत्यवंदन करे, बीजुं (चेइय के०) चैत्यगृहमां भगवंत आगले चैत्यवंदन करे, त्रीजुं (जिमण के०) जमती वखत पच्चख्खाण पारे, तेवारे चैत्यवंदन करे,

पमिकमिउ गिहिणोवि हु, सगवेला पंच-
वेल इअरस्स ॥ पूआसु तिसंझासु अ, होइ
ति–वेला जहन्नेणं ॥ ६० ॥

अर्थ–एक प्रभाते अने बीजुं सांजे, ए
बेवार (पमिक्कमिउ के०) पडिक्कमणुं करता
एवा (गिहिणोवि के०) गृहस्थने पण (हु
के०) निश्चे यतिनी पेरे (सगवेला के०)
सात वार चैत्यवंदन थाय. तथा जे एक वार
पमिक्कमणुं करता होय एवा गृहस्थने (पंच-
वेल के०) पांच वार चैत्यवंदन थाय, तेमां एक
संथारा पोरिसि सांजलतां, एक प्रतिक्रमणनी
क्रिया करतां अने त्रणवार देव वांदता मली पांच
थाय. अने तेथी (इअरस्स के०) इतर एटले जे
पमिक्कमणुं नथी करता एवा गृहस्थने तो प्रभात,
सांज अने मध्यान्हे ए (तिसंझासु अ के) त्रण
संध्याये (पूआसु के०) पूजाने विषे (जह-
न्नेणं के०) ए जघन्यथी पण गृहस्थने माटे
(तिवेला के०) त्रणवार चैत्यवंदना (होइ के०

उपर पग चकावीने बेसे, ३५ छाणां थापे, ३६ वस्त्र सुकवे, ३७ दाल ढंढणीयादिक उगवे, ३८ पापड शालेवां करे, ३९ वडीआदि देइ कचर चीभडी प्रमुख सर्व शाक जाति उगवे, ४० राजादिकना भयथी देरासर मध्ये नासीने छुपी रहे, ४१ शोकादिके रुदन आक्रंद करे ४२ स्त्री, भक्त, राज्य, देशादिकनी विकथा करे, ४३ शर–चाप, तथा बीजा पण अधिकरण शस्त्र घडे, ४४ गाय, बलद प्रमुख थापे, ४५ टाढे पीड्यो अग्नि सेवे, ४६ अन्नादिकनुं रांधवुं करे, ४७ नाणादिक पारखे, ४८ अविधिये निसीहि कह्या विना प्रवेश करे, ४९ छत्र, ५० उपानह, ५१ शस्त्र, ५२ चामर न मूके. एटले ए चार वानां साथे लइ प्रवेश करे, ५३ मननी एकाग्रता न करे, ५४ अभ्यंग एटले शरीरे तेलादिक चोपडे, ५५ सचित पुष्पफलादिक न मूके, ५६ अजीव वस्तु जे हार मुद्रादिक वस्त्रादिक ते बाहेर मूकी कुशोभावंत थइ देरासरमां प्रवेश

पे, ८४ वर्षाकालादिकने विषे प्रणालीथी पाणी संघरे, अंघोल स्नान करे, तथा पाणी पीवाना भाजन मूके, ए उत्कृष्टथी चोराशी आशातना जिनभुवनमां वर्जवी.

हवे मध्यम बहेंतालीश आशातना वर्जवी तेनां नाम कहे छे.१ मूत्र,२ पुरीष,(विष्टा),३ पाणी, ४ उपानह्, ५ शयन, ६ अशन, ७ स्त्री प्रसंग, ८ तंबोल, ९ थुंकवुं, १० जूवटुं रमवुं, ११ जूवटादिकनुं जोवुं, १२ पलांठी वालवी, १३ पग पसारवा, १४ परस्पर विवाद, १५ परिहास, १६ मत्सर, १७ सिंहासन परिभोग, १८ केश शरीर विभूषा, १९ छत्र, २० खड्ग, २१ मुकुट, २२ चामरनुं राखवुं, २३ धरणुं करवुं, २४ हास्यादि विलास परिहास, २५ विटसाथे प्रसंग करवो, २६ मुखकोश न करवो, २७ मलिन शरीर राखे, २८ मलिन वस्त्र पहेरे, २९ अविधिये पूजा करे, ३० मननुं एकाग्रपणुं न करे, ३१ सचित्त द्रव्य बाहिर न मूकी आवे, ३२ उत्तरासंग न



(अरिहंत के०) अरिहंत चेइयाणं कही काउ-स्सग्ग करी एक तीर्थंकरनी (थुई के०) स्तुति कहे. पठी (लोग के०) लोगस्स कहीये पठी (सबथुइ के०) सबलोए अरिहंत चेइयाणं कही काउस्सग्ग करी सर्व तीर्थंकरनो बीजी स्तुति कहिये,पठी(पुक्ख के०)पुक्खरवरदी कही काउस्स-ग्ग करी श्री सिद्धांतनी त्रीजी (थुइ के०) स्तुति कहेवी पठी (सिद्धा के०) सिद्धाणं बु-द्धाणं (वेश्रा के०) वेयावच्चगराणं इत्यादिक कही काउस्सग्ग करी अधिष्ठायिक देवोनी चोथी (थुइ के०) स्तुति कही पछी नीचे बे-सीने (नमुथु के०) नमुथुणं संपूर्ण कहीने (जावंति के०) जावंति चेइश्राइं, जावंत केवि साहू कही नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुभ्यः कही (थय के०) स्तवन कहीने, सं-पूर्ण (जयवी के०) जयवीयराय कहीये, ए देव वांदवानो विधि कह्यो ॥ ६१ ॥

हवे यद्यपि कोइ प्राणी एटला बोल तथा

मुक्त कहीये ॥ २ ॥

सव्वोवाहि-विसुद्धं, एवं जो वंदए सया देवे ॥
देविंदविंद-महियं, परमपयं पावइ लहुसो ॥६३॥

अर्थ-एम (सव्वोवाहिविसुद्धं के०) सर्वोपाधि विशुद्ध जेम होय तेम (एवं के०) एम एटले सर्व श्रीजिनधर्म संबंधिनी चिंता तेणे करी निर्दोष प्रकारे शुद्ध श्रद्धाये करी (जो के०) जे जव्य प्राणी (देवे के०) श्रीदेवाधि-देवने (सया के०) सदा सर्वदा (वंदए के०) वांदे, ते जव्य प्राणी जवजयरूप पद जिहां नथी एवो (परमपयं के०) परमपद एटले मोक्षरूप पद ते प्रत्ये (लहुसो के०) शीघ्र उतावलो (पावइ के०) पामे. ते परम पद केहेवुं? तो के (देविंद के०) देवना इंद्र तेमना जे (विंद के०) समूह एटले इंद्रोना समूहे जेने (महियं के०) आंचितं एटले पूज्युं एवुं वे. एमा ग्रंथकर्त्ता श्रीदेवेंद्रसूरिये पोतानुं नाम पण सूचव्युं वे. ए श्रीचैत्यवंदनजाप्यनुं वार्त्तिक

संक्षेपथी कह्युं, अने विस्तारथी तो श्रीआव-
श्यकनिर्युक्ति तथा प्रवचनसारोद्धारनी वृत्या-
दिकथी जाणवुं. इति श्रेयः
एवं श्रीजिनवंदन विधि कृतपुण्यादवाप्त जयः।
भवतु भुवि भविकलोकः स ज्ञानाद्विमल हृदयोऽरे
॥ इति श्रीदेववंदनभाष्यं बालावबोधस-
हित संपूर्णम् ॥ ६३ ॥
हवे ए श्रीदेवाधिदेवने विधियी वांदवाना
फलना कहेनावाळा ते श्रीगुरु छे माटे तेमने
पण नमि. विनये करी विधि पूर्वक वंदना क-
रवा थकी सकल आगमनां रहस्य पामीये. ए
श्रीगुरुने वांदवानां पण घणां फल आगममांहे
कह्यां छे ॥ यदुक्तं ॥ वंदणएणं भंते जीवे किं
जणेइ गोयमा! वंदणएणं जीवे नीयागोयं खवेइ,
उच्चागोयं निबंधइ. सोहग्गंचणं अपडिहयं
आणाफलं निवत्तेइ दाहिण भावं च जण
इति ॥ ते माटे देववंदनानंतर गुरुवंदनाधिका
रने कहे छे.



श्रीगुरुवंदन भाष्य प्रारंभः

गुरुवंदण–मह तिविहं, तं फिट्टा छोभ बार-
सावत्तं, सिरनमणाइसु पढमं, पुन्न–खमासमण–
ाग बीअं ॥ १ ॥

अर्थ–(अह के०) अथ शब्द ते मंगल
धिकारे छे, तथा प्रथम प्रारंजने कारणे अ
शब्दे करी चैत्यवंदन नाष्य कह्या, पछी ह
गुरुवंदन भाष्य कहीये छेये. (तं के०)
(गुरुवंदणं के०) गुरुवंदन (तिविहं के०
त्रण प्रकारे छे. तेमां पहेलुं (फिट्टा के०) फेट
वंदन, बीजुं (छोभ के०) थोजवंदन, त्री
(बारसावत्त के०) द्वादशावर्त्त वंदन, तिह
(सिरनमणाइसु के०) मस्तक नमाडवादिक
विषे, आदि शब्द थकी अंजलिकरण ते हा

जीरूयादिक जाणवा. ते (पढमं के०) पहेलुं फेटा वंदन जाणवुं. तथा (पूण—खमासमण-दुगि के०) पूर्ण पंचांग बे खमासमण देवे करीने एटले बे हाथ, बे गोठण अने एक मस्तक ए पांच अंग नमाववा रूप ते (बीयं के०) बीजुं थोत्रवंदन जाणवुं ॥ २ ॥

इहां शिष्य पूछे छे के थोत्रवंदने तथा द्वादशावर्त्त वंदने प्रथम एक वार वांदीने फरी बीजी वार शे हेतुये वांदीये छैये ? त्यां आचार्य उत्तर आपे छे.

जह दूत्रो रायाणं, नमिउं कज्जं निवेइउं पच्छा ॥ वीसज्जिओवि वंदिय, गच्छइ एमेव इत्थ दुगं ॥ ३ ॥

अर्थ (जह दूत्रो के०) जेम दूत पुरुष ... राजाने (नमिउं के०) ... (निवेइउं के०) कार्य निवेद...) पाछो राजाये (वी... ... थको पण (वंदि...

के०) वांदीने (गच्छइ के०) जाय (एमेव के०) एनी पेरे (इत्थ के०) इहां गुरुवंदनने विषे पण वंदननुं (दुगं के०) द्विक जाणवुं. अने द्वादशावर्त्त वंदने सो बेहु वांदणे मलीने आवश्यक आवर्त्तादि बोल नीपजे छे. ते माटे बेहु वांदणानी जोमीये एकज वंदन कहेवाय छे ॥ ५ ॥

हवे वांदणां देवानुं कारण शुं ? ते कहे छे.

आयारस्सउ मूलं, विणउ सो गुणवउ अ पडिवत्ती ॥ सा य विहि-वंदणाउ, विही इमो बारसावत्ते ॥ ६ ॥

अर्थ-जे माटे श्रीसर्वज्ञप्रणीत जे (आयारस्स के०) आचार तेनो (उ के०) वली (मूलं के०) मूल जे छे, ते (विणउ के०) विनय छे (सो के०) ते विनय केवी रीते होय ? ते कहे छे. (गुणवउ के०) गुणवंत गुरुनी (अ के०) वली (पडिवत्ती के०) प्रतिपत्ति एटले सेवा करवी, ते जाणवो (सा

(विहिवंद- के०) ने भक्ति (य के०) वली (विहिवंद-णाउ के०) विधिये करीने वांदवाथकी थाय ने (विही के०) विधि (इमो के०) आ ने (बारसावत्त के०) द्वादशावर्त्त वंदनने आगल विधि कहेशे ॥ ३ ॥

हवे ए त्रीजुं द्वादशावर्त्त वंदन केम होय ?

ते कहे छे.

तइयं तु छंदण–दुगे, तत्थ मिहो आइमं सयलसंघे ॥ बीयं तु दंसणीण य, पयट्ठि- आण च तइयं तु ॥ [illegible] ॥

अर्थ (तइयं के०) त्रीजुं द्वादशावर्त्त वं- दन ते (तु के०) वली (छंदणदुगे के०) बे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] एटले बे वांदणां दे- [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] शब्द वंदनवाचक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पूर्वोक्त त्रण वांदणां [illegible] ([illegible] के०) [illegible] आदिम एटले पहेलुं फेटा- (आइमं के०) [illegible] [illegible] [illegible] साधु [illegible] [illegible] श्रावक अने श्रावि- [illegible] चतुर्विध (सयलसंघे के०) समस्त

वली (मिट्टा वे०) मित्र: एटले मांहोमांहे परस्पर तेवा तेवा प्रकारने विषे करवुं होय त्यारे थाय. त्रीजुं (बीयं वे०) बीजुं जे थोभ-वंदन छे. ते (तु वे०) निश्चे वली मुणागु-णा (दंसणीम वे०) दर्शनीयने अर्थे होय. एटले एक. गच्छगत. बीजो अनुयोगी. त्रीजो स्थविरत्नाधी. चोथो गुरुभेदी. पांचमो आतुर. ए पंचमहाव्रतमां सावधान एवा मुनिवंत यतिने ए. थोडुं देवाय. तथा (च वे०) चकारथी, तथा विधिविदित कार्यने विषे लिंगमात्रधारी पण जो सम्यक्दर्शनवंत होय, तो ते पण थोभवंदने वंदनीय होय. तथा (तइयं वे०) त्रीजुं द्वादशावर्तवंदन जे छे ते (तु वे०) वली आचार्य, उपाध्याय, गुणवंत योगाधिक एवा (पयठिआणं वे०) पदप्रतिष्ठित जे होय तेमने (च वे०) निश्चे होय.

एवं ए वांदणांनां पांच नाम छे, ते कहे छे.

वंदण-चिइ-किइ-कम्मं, पूआकम्मं च वि-

एयकम्मं च ॥ कायव्वं कस्स व केण वावि काहेव कइ खुत्तो ॥ ५ ॥

अर्थ–एक (वंदण के०) वंदन कर्म ते अभिवादन स्तुतिरूप, अर्द्धावनत काय करवी, ते शरीर मस्तकादिके अवनत तथा कर्मपकी जसां कर्म बंधाय एटला माटे बीजुं (चिइ के०) चितिकर्म, त्रीजुं (किइकम्मं के०) कृतिकर्म वांदणुं, (च के०) वली जसां मन, वचन अने कायानी चेष्टानुं जे कर्म करवुं, ते माटे चोथुं (पुआकम्मं के०) पूजाकर्म कहिये, तथा विनयनुं करवुं ते माटे पांचमुं (विणयकम्मं के०) विनयकर्म कहीये, ए पांच प्रकारे वंदन (च के०) वली (कायव्वं के०) करवुं एटले पांच प्रकारे वांदणां देवां ते (कस्स के०) केने अर्थे देवां ? (व के०) वली (केणवावि के०) कोणे वांदणां देवां ? अपि शब्द निश्चयार्थमां छे. (काहेव के०) क्यारे वांदणां देवां. (कइखुत्तो के०) केटलीवार वांदणां

आपीयें ? ॥ ५ ॥

कइउणयं कइसिरं, कइहिं व आवस्सएहिं परिसुद्धं ॥ कइदोसविप्पमुक्कं, किइकम्मं कीस किरइ वा ॥ ६ ॥

अर्थ–वांदणाने विषे (कइउणयं के०) केटला अवनमन करवां, (कइसिरं के०) केटलीवार मस्तक नमाम्वुं, (कइहिं के०) केटला (व के०) वली (आवस्सएहिं के०) आवश्यके करीने (परिसुद्धं के०) परिशुद्ध थाय तथा (कइदोसविप्पमुक्कं के०) केटला दोषे करी विप्रमुक्त एटले रहित थके (कीस के०) शामाटे (किइकम्मं के०) कृतिकर्म (किरई के०) करवुं, वांदणां दीजे ? वा शब्द पुनर्वाचक छे ॥ ६ ॥ ए पांचमी अने छठी बे गाथा आवश्यक निर्युक्तिमां कही छे ते इहां कही ॥

हवे त्रण गाथाये करी वंदनानां बावीश द्वार कहे छे.

मूलद्वार गाहा ॥ पणनाम पणाहरणा,

आपीये ? ॥ ५ ॥

कइउंणयं कइसिरं, कइहिं व आवस्सएर्हि परिसुद्धं ॥ कइदोसविप्पमुक्कं, किइकम्मं कीस किरई वा ॥ ६ ॥

अर्थ—वांदणाने विषे (कइउंणयं के०) केटला अवनत करवा, (कइसिरं के०) केटलीवार मस्तक नमाम्वुं, (कइहिं के०) केटला (व के०) वली (आवस्सएर्हि के०) आवश्यके करीने (परिसुद्धं के०) परिशुद्ध थको तथा (कइदोसविप्पमुक्कं के०) केटला दोषे करी विप्रमुक्त एटले रहित थके (कीस के०) शामाटे (किइकम्मं के०) कृतिकर्म (किरई के०) करवुं. वांदणां दीजे ? वा शब्द पुनर्वाचक ठे ॥ ६ ॥ ए पांचमी अने उन्नी वे गाथा आवश्यक निर्युक्तिमां कही ठे ते इहां कही ॥

हवे त्रण गाथाये करी वंदनानां बावीश द्वार कहे छे.

मूलदार गाहा ॥ पणनाम पणाहरणा,



चारने वांदणां देवरावीये नहीं (चउअदाय पे०) चार वांदणांना दातार कहेशे. सातमुं (पण-निसेह पे०) पांच स्थानके वांदणानो निषेध करवो एटले वांदणां न देवां ते कहेशे, आठमुं (चउअनिसेह पे०) चार स्थानके वांदणानो अनिषेध करवो एटले चार स्थानके वांदणां देवां ते कहेशे. नवमुं वांदणां देवानां (अठ्ठ-कारणया पे०) आठ कारण कहेशे ॥ ३ ॥

दशमुं वांदणाने विषे (आवस्सय पे०) आवश्यक साचववां. अग्यारमुं (मुहणंतय पे०) मुहपत्तिनी पडिलेहणा करवी, बारमुं (तणुपेह पे०) शरीरनी पडि-लेहणा करवी. ए त्रणे थानां (पणीस पे०) पचीस पचीस करवां ते कहेशे, पणीस शब्द सर्वने जोडवो. तेरमुं वांदणा देतां (दोसब-त्तीसा पे०) बत्रीश दोष टाळवा ते कहेशे, चौदमुं वांदणां देतां (छ गुण पे०) छ गुण उपजे ते कहेशे, पन्नरमुं वांदणां देवामां साक्षात

चाले वांदणां देवरावीये एवा (चउदाय के०)
चार वांदणाना दातार कहेवा, पांचमुं (पंच-
निसेहा के०) पांच स्थानके वांदणानो निषेध
करवो एटले वांदणां न देवां ते कहेवां, छठुं
(चउअनिसेह के.) चार स्थानके वांदणानो
अनिषेध करवो एटले चार स्थानके वांदणां
देवां ते कहेवां. सातमुं वांदणां देवानां (अठ-
कारणया के०) आठ कारण कहेवां ॥ ७ ॥

दसमुं वांदणाने विषे (आवस्सय के०)
आवश्यक साचववां. अग्यारमुं (मुहणंतय
के०) मुहणंतक एटले मुहपत्तिनी पडिलेहणा
करवी, बारमुं (तणुपेह के०) शरीरनी पडि-
लेहणा करवी. ए प्रमाणे पानां (पणीस के०)
पचीस पचीस करवां ते कहेवां, पचीस शब्द
सर्वने जोडवो. तेरमुं वांदणां देतां (दोसब-
त्तीसा के०) बत्रीस दोष टाळवा ते कहेवा,
चौदमुं वांदणां देतां (छ गुण के०) छ गुण
उपजे ते कहेवा, पनरमुं वांदणां देवामां साक्षात

अजुग्गपण जुग्गपण चउअदाया ॥ चउदाय पणनिसेहा, चउअणिसेह–ठकारणया ॥ ७ ॥ आवस्सय–मुहणंतय,–तणुपेह–पणीस दोस ब-त्तीसा ॥ ठ गुण गुरुठवण डुग्गह, डुबत्तीसक्खर गुरु पणीसा ॥ ८ ॥ पय अम्वत्र ठठाणा, ठ गुरुवयणा आसायणतित्तीसं ॥ डुविही डुवी-सदारे,–हिं चउसयाबाणुइ ठाणा ॥ ए ॥

अर्थ–(मूलदारगाहा के०) मूलद्वारनी गाथाउं जाणवी. पहेलुं वांदणांनां (पणनाम के०) पांच नाम कहेशे, बीजुं वांदणांनां (प-णाहरणा के०) पांच आहरण एटले वांदणांनां पांच उदाहरण दृष्टांत ड्रव्य अने ज्ञावथी क-हेशे; त्रीजुं वांदणां देवाने (अजुग्गपण के०) अयोग्य एवा पांच पासज्ञादिक कहेशे, चोथुं वांदणां देवाने (जुग्गपण के०) योग्य एवा आचार्यादिक पांच कहेशे, पांचमुं जेनी पासे ... न देवरावीये एवा (चउअदाया के०) ...र जण वांदणांना अदाता कहेशे, छठुं जेनी

अने वांदणां देवायोग्य गुरु (चउदाय के०) चार वांदणांना दातार कहेछे, सातमुं (पण-निसेहा के०) पांच स्थानके वांदणानो निषेध करवो एटले वांदणां न देवां ते कहेछे, आठमुं (चउअनिसेह के०) चार स्थानके वांदणानो अनिषेध करवो एटले चार स्थानके वांदणां देवां ते कहेछे. नवमुं वांदणां देवानां (अठ्ठ-कारणया के०) आठ कारण कहेछे ॥ ३ ॥

दशमुं वांदणाने विषे (आवस्सय के०) आवश्यक आचरवां, अग्यारमुं (मुहणंतय के०) मुहणंतक एटले मुहपत्तिनी पडिलेहणा करवी, बारमुं (तणुपेह के०) शरीरनी पडि-लेहणा करवी. ए त्रणे वानां (पणीस के०) पचीस पचीस करवां ते कहेछे, पचीस शब्द सर्वने जोडवो. तेरमुं वांदणा देतां (दोसब-त्तीसा के०) बत्रीस दोष टालवा ते कहेछे, चौदमुं वांदणां देतां (छ गुण के०) छ गुण उपजे ते कहेछे, पन्नरमुं वांदणां देवामां साक्षात

अजुग्गपण जुग्गपण चउअदाया ॥ चउदाय पणनिसेहा, चउअणिसेह–ढकारणया ॥ ७ ॥ आवस्सय–मुहणंतय,–तणुपेह–पणीस दोस ब-त्तीसा ॥ ठ गुण गुरुठवण डुग्गह, डुवीसक्खर गुरु पणीसा ॥ ७ ॥ पय अम्वन्न ठठाणा, ठ गुरुवयणा आसायणतित्तीसं ॥ डुविही डुवी-सदारे,–हिं चउसयाबाणुइ ठाणा ॥ ए ॥

अर्थ–(मूलदारगाहा के०) मूलद्वारनी गाथाउं जाणवी. पहेलुं वांदणांनां (पणनाम के०) पांच नाम कहेशे, बीजुं वांदणांनां (प-णाहरणा के०) पांच आहरण एटले वांदणांनां पांच उदाहरण दृष्टांत ड्व्य अने नावथी क-हेशे; त्रीजुं वांदणां देवाने (अजुग्गपण के०) अयोग्य एवा पांच पासञादिक कहेशे, चोथुं वांदणां देवाने (जुग्गपण के०) योग्य एवा आचार्यादिक पांच कहेशे, पांचमुं जेनी पासे वांदणां न देवरावीये एवा (चउअदाया के०) चार जण वांदणांना अदाता कहेशे, छठुं जेनी

पासे वांदणां देवरावीये एवा (चउदाय के०) चार वांदणांना दातार कहेशे, सातमुं (पण- निसेहा के०) पांच स्थानके वांदणानो निषेध करवो एटले वांदणां न देवां ते कहेशे, आठमुं (चउअणिसेह के) चार स्थानके वांदणानो अनिषेध करवो एटले चार स्थानके वांदणां देवां ते कहेशे, नवमुं वांदणां देवानां (अह- कारणया के०) आठ कारण कहेशे ॥ ३ ॥

दशमुं वांदणाने विषे (आवस्सय के०) आवश्यक साचववां, अग्यारमुं (मुहणंतय के०) मुखनंतक एटले मुहपत्तिनी पडिलेहणा करवी, बारमुं (तणुपेह के०) शरीरनी पडि- लेहणा करवी, ए बन्ने बानां (पणीस के०) पचीस पचीस करवां ते कहेशे, पणीस शब्द सर्वने जोडवो. तेरमुं वांदणा देतां (दोसब- त्तीसा के०) बत्रीश दोष टालवा ते कहेशे, चौदमुं वांदणां देतां (ब गुण के०) ब गुण उपजे ते कहेशे, पन्नरमुं वांदणां देवामां साक्षात

अजुग्गपण जुग्गपण चउअदाया ॥ चउदाय पणनिसेहा, चउअणिसेह–छकारणया ॥ ७ ॥ आवस्सय–मुहणंतय,–तणुपेह–पणीस दोस ब-त्तीसा ॥ ७ गुण गुरुठवण डुग्गह, डुवीसक्कर गुरु पणीसा ॥ ८ ॥ पय अम्कत्र ठगणा, ठ गुरुवयणा आसायणतित्तीसं ॥ डुविहो डुवी-सदारे,–हिं चउसयाबाणुइ ठाणा ॥ ९ ॥

अर्थ–(मूलदारगाहा के०) मूलद्वारनी गाथाउं जाणवी. पहेलुं वांदणांनां (पणनाम के०) पांच नाम कहेशे, बीजुं वांदणांनां (प-णाहरणा के०) पांच आहरण एटले वांदणांनां पांच उदाहरण दृष्टांत द्रव्य अने भावथी क-हेशे; त्रीजुं वांदणां देवाने (अजुग्गपण के०) अयोग्य एवा पांच पासडादिक कहेशे, चोथुं वांदणां देवाने (जुग्गपण के०) योग्य एवा आचार्यादिक पांच कहेशे, पांचमुं जेनी पासे वांदणां न देवरावीये एवा (चउअदाया के०) चार जण वांदणांना अदाता कहेशे, छठुं जेनी

पासे वांदणां देवरावीये एवा (चउदाय के०) चार वांदणांना दातार कहेशे, सातमुं (पण-निसेहा के०) पांच स्थानके वांदणानो निषेध करवो एटले वांदणां न देवां ते कहेशे, आठमुं (चउअणिसेह के) चार स्थानके वांदणानो अनिषेध करवो एटले चार स्थानके वांदणां देवां ते कहेशे, नवमुं वांदणां देवानां (अठ-कारणया के०) आठ कारण कहेशे ॥ ३ ॥

दशमुं वांदणाने विषे (आवस्सय के०) आवश्यक साचववां, अग्यारमुं (मुहणंतय के०) मुखनंतक एटले मुहपत्तिनी पडिलेहणा करवी, बारमुं (तणुपेह के०) शरीरनी पडि-लेहणा करवी, ए त्रणे बानां (पणीस के०) पचीश पचीश करवां ते कहेशे, पणीस शब्द सर्वने जोमवो. तेरमुं वांदणा देतां (दोसब-त्तीसा के०) बत्रीश दोष टालवा ते कहेशे, चौदमुं वांदणां देतां (ठ गुण के०) ठ गुण उपजे ते कहेशे, पन्नरमुं वांदणां देवामां साक्षात्

रीने सर्व मली (चउसयाबाणुइ गणा के०)
ारशेने थाणुं स्थानक थाय ॥ ए ॥

ंक.	मूलद्वारनां नाम.	उत्तर जेद.	सरवालो.
१	वंदननाम.	५	५
२	दृष्टांत.	५	१०
३	वांदवाने अयोग्य.	५	१५
४	वांदवाने योग्य.	५	२०
५	वांदणांना अदाता.	४	२४
६	वांदणांना दाता.	४	२८
७	निषेधनां स्थानक.	५	३३
८	अनिषेधनां स्थानक.	४	३७
ए	वांदणांना कारण.	८	४५
१०	आवश्यक.	२५	७०
११	मुहपत्ति पडिलेहण.	२५	ए५
१२	शरीर पडिलेहण.	२५	१२०
१३	वांदणांना दोष.	३२	१५२
१४	वांदणांना गुण.	६	१५८
१५	गुरु स्थापना.	१	१५ए

१६	अवग्रह.	२	१६१
१७	अक्षरनी संख्या.	२२६	३८७
१८	पदनी संख्या.	५८	४४५
१९	स्थानक.	६	४५१
२०	वांदणांमां गुरुवचन.	६	४५७
२१	गुरुनी अशातना,	३३	४९०
२२	विधि.	२	४९२

हवे पूर्वोक्त बावीश द्वारमां पहेलुं पांच नामनुं द्वार कहे छे.

पडिदार गाहा ॥ वंदणयं चिइकम्मं, किइकम्मं विणयकम्म पुत्रकम्मं ॥ गुरुवंदण पणनामा, दवे जावे उहोहेण ॥१०॥ दारं ॥१॥

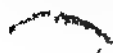
अर्थ-(पडिदारगाहा के०) प्रतिद्वारनी गाथा कहे छे. प्रथम (वंदणयं के०) वंदनकर्म ते अभिवादन स्तुति रूप जाणवुं. बीजुं (चिइकम्मं के०) चितिकर्म ते रजोहरणादि उपकरण विधि सहितपणे कुशलकर्मनुं करवुं, आदि

हुं. त्रीजुं (किइकम्मं के०) कृतिकर्म ते शरीर मस्तकादिके अवनमन करवुं. चोथुं (पुष्पकम्मं के०) पूजाकर्म ते प्रशस्त मन, वचन अने काय चेष्टा रूप जाणवुं. पांचमुं (विणयकम्म के०) विनयकर्म ते पूर्वोक्त चार प्रकारे विशेष उपमपणुं जाणवुं. ए (गुरुवंदण के०) गुरु वांदणांनां (पणनामा के०) पांच नाम ते वंदनानां पर्याय जाणवा. ए (दवे नावे के०) एक द्रव्यथकी वांदणां अने बीजां नावथकी वांदणां एम (डुह के०) बे प्रकारे (उंहेण के०) उंघेन एटले सामान्यप्रकारे जाणवां ॥ १० ॥

हवे पांच दृष्टांतोनुं बीजुं द्वार कहे ठे.

सीयलय खुड्डए वी-र कन्ह सेवग-डु पालए संबे ॥ पंचे ए दिठंता, किइकम्मे दव-नावेहिं ॥ ११ दारं ॥ २ ॥

अर्थ-प्रथम वंदनकर्मउपर द्रव्यवंदन अने नाववंदन आश्रयी (सीयलय के०) शीतलाचार्यनो दृष्टांत, बीजा चितिकर्म उपर,



१६	अवग्रह.	२	१६१
१७	अक्षरनी संख्या.	२२६	३७७
१८	पदनी संख्या.	५८	४४५
१९	स्थानक.	६	४५१
२०	वांदणांमां गुरुवचन.	६	४५७
२१	गुरुनी अशातना,	३३	४९०
२२	विधि.	२	४९२

हवे पूर्वोक्त बावीश द्वारमां पहेलुं पांच नामनुं द्वार कहे वे.

पमिदार गाहा ॥ वंदणयं चिइकम्मं, किइकम्मं विणयकम्म पुश्राकम्मं ॥ गुरुवंदणपणनामा, दवे नावे उहोहेण ॥१०॥ दारं ॥१॥

अर्थ-(पमिदारगाहा के०) प्रतिद्वारनी गाथा कहे वे. प्रथम (वंदणयं के०) वंदनकर्म ने अनिवादन स्तुति रूप जाणवुं, बीजुं (चिइकम्मं के०) चितिकर्म ते रजोहरणादि उपकरण विधि सहितपणे कुशलकर्मनुं करवुं, त्रा-

थुं. त्रीजुं (किइकम्मं के०) कृतिकर्म ते शरीर मस्तकादिके अवनमन करवुं. चोथुं (पुअकम्मं के०) पूजाकर्म ते प्रशस्त मन, वचन अने काय चेष्टा रूप जाणवुं. पांचमुं (विणयकम्म के०) विनयकर्म ते पूर्वोक्त चार प्रकारे विशेष उद्यमपणुं जाणवुं. ए (गुरुवंदण के०) गुरु वांदणांनां (पणनामा के०) पांच नाम ते वंदनानां पर्याय जाणवा. ए (दवे जावे के०) एक डव्यथकी वांदणां अने बीजां ज्ञावथकी वांदणां एम (डुह के०) बे प्रकारे (उहेण के०) उघेन एटले सामान्यप्रकारे जाणवां ॥ १० ॥

हवे पांच दृष्टांतोनुं बीजुं द्वार कहे छे.

सीयलय खुड्डए वी-र कन्ह सेवग-डु पालए संबे ॥ पंचे ए दिठंता, किइकम्मे दव-जावेहिं ॥ ११ दारं ॥ २ ॥

अर्थ-प्रथम वंदनकर्मउपर डव्यवंदन अने ज्ञाववंदन आश्रयी (सीयलय के०) शीतलाचार्यनो दृष्टांत, बीजा चितिकर्म उप

१६	अवग्रह.	२	२६१
१७	अक्षरनी संख्या.	२२६	३०७
१८	पदनी संख्या.	५८	४४५
१९	स्थानक	६	४५१
२०	[illegible]	६	४५७
२१	[illegible]	३३	४९०
२२	[illegible]	२	४९२

[illegible]

तुं. त्रीजुं (किइकम्मं के०) कृतिकर्म ते शरीर मस्तकादिके अवनमन करवुं. चोथुं (पुअकम्मं के०) पूजाकर्म ते प्रशस्त मन, वचन अने काय चेष्टा रूप जाणवुं. पांचमुं (विणयकम्म के०) विनयकर्म ते पूर्वोक्त चार प्रकारे विशेष उद्यमपणुं जाणवुं. ए (गुरुवंदण के०) गुरु वांदणांनां (पणनामा के०) पांच नाम ते वंदनानां पर्याय जाणवा. ए (दव्वे भावे के०) एक द्रव्यथकी वांदणां अने बीजां भावथकी वांदणां एम (दुह के०) बे प्रकारे (उहेण के०) उघेन एटले सामान्यप्रकारे जाणवां ॥ १० ॥

हवे पांच दृष्टांतोनुं बीजुं द्वार कहे छे.

सीयलय खुड्डए वी,-र कन्ह सेवग-दु पालए संबे ॥ पंचे ए दिठ्ठंता, किइकम्मे दव्व-भावेहिं ॥ ११ दारं ॥ २ ॥

अर्थ-प्रथम वंदनकर्मउपर द्रव्यवंदन अने भाववंदन आश्रयी (सीयलय के०) शीतलाचार्यनो दृष्टांत, बीजा चितिकर्म उपर

आचार्यपद पाम्या. हवे तेनी भगिनीने चार
पुत्र सकलकलामां निपुण थया जाणी, तेमनी
माता निरंतर पोताना पुत्र आगल भाइनी प्र-
शंसा करे अने कहे के धन्य कृतपुण्य पृथिवी-
मांहे एक तमारो मातुल छे, के जेणे राजभार
छांमी दीक्षा लीधी! एवी प्रशंसा सांभली ते
चारे पुत्र संवेगपणुं पाम्या. पछी स्थविरपासे
दीक्षा लइ बहुश्रुत थइ गुरुने पूछी पोताना
मामा शीतलाचार्यने एक पुरे आव्या सांभली
तेने वांदवाने अर्थे गया. तिहां जातां विकाल
वेलाये गाम बाहेर एक देवलमां रह्या. मांहे
पेसतां एक श्रावकने जणाव्युं के अमारा मा-
तुलने कहेजो जे भाणेज साधु आव्या छे. हवे
ते चारे भाणेजने राते शुक्लध्यानथी केवलज्ञान
उपज्युं. प्रभाते तेमनुं अनागमन जाणी मातुल
आव्या, तेहने अनादर करता जाणी कषाय
दंडकमां आवते दंडक थापी इरियापथिका
प्रतिक्रमी द्रव्यथी वंदन कीधुं; ते वारे ते बोल्या

तथा एक देशथी बीजो सर्वथी मली (डुग के०) बे नेद उस्सन्नाना, तथा ज्ञानकुशील, दर्शनकुशील अने चारित्रकुशील मली (ति के०) त्रण नेद कुशीलीयाना, तथा संक्लिष्टचित्त अने असंक्लिष्ट चित्त मली (डुग के०) बे नेद संसक्तना, तथा (अणेगविहा के०) अनेक प्रकार, अहाछंदाना जाणवा, एटले यथाछंदा अनेक नेदना थाय ठे. ए पासत्थादिक पांच जे कह्या ते (जिणमयंमि के०) श्रीजिनमतने विषे (अवंदणिज्जा के०) अवंदनीय जाणवा॥१२॥

हवे ए पांचनुं कांइक विशेष स्वरूप लखीये ठैये. तिहां मिथ्यात्वादिक बंध हेतुरूप पाश तेने विषे जे रहे, तेने पासत्थो कहीये. अथवा ज्ञानादिकने पोतानी पासे करी मिथ्यात्वादिक पाशमां रहे एटले ज्ञानादिकने पासे राखे पण सेवे नहि अथवा पाशनी पेरे पोतानुं पासुं मलिन राखे ते पासत्थो कहीये तेना बे नेद ठेः—एक देश पासत्थो अने बीजं

आहारनो लालचे मुखे कहे. तिहां निमित्त दोष न होय, सूजतो होय ते माटे. तथा सूर्य आथमता उगताथी मांडी जमे, मांडलीये आहार न करे, सन्निधि राखे, पोतानो निश्राये ओपधादिक अलगु गृहस्थने घरे मुकावे, ड्रव्यादिक सहित विचरे, तथा ज्ञान ड्रव्यादिक मिषे करी स्वनिश्राये ज्ञानादि नंमारनां नाम लेई पुस्तकादि संग्रहे, ड्रव्यादि सहित विचरे, मुखे कहे अमे निर्ग्रंथ छैये, पूर्व साधु समान गर्व राखे. इत्यादिक अनेक प्रकारे साधु लक्षणथी विपरीत होय ते देश पासत्थो जाणवो.

तथा जे सर्वथा ज्ञान, दर्शन अने चारित्रथी अलगो रहे, केवल लिंगधारी, वेषविडंबक, गृहस्थाचारधारी होय, ते सर्वथी पासत्थो जाणवो.

बीजो जे क्रियामार्गने विषे शिथिलता करे, अथवा खेद पामे तेने उसन्नो कहीये; तेना वे नेद छे. एक देशथी अवसन्नो अने

बीजो सर्वथी अवसन्नो. तिहां जे आवश्यक, प्रतिक्रमण, देववंदनादि, सज्झाय ते पठन पाठनादि पडिलेहण, मुखवस्त्रिका, वस्त्रपात्रादि, भिक्षा ते गोचरी कालादि, ध्यान ते धर्मध्यानादि, आहार [illegible] ने तप नियम अभिग्रहादि, आगमन ते बाहेरथी उपाश्रयमां प्रवेश [illegible], [illegible] ते पग पुंजवादि, निर्गमन ते प्रवे[illegible] [illegible] उपाश्रयथी बाहेर निकलतां [illegible] [illegible] कायोत्सर्गादि, निषीदन ते बेसवुं, [illegible] ने त्वग्वर्तन पडखुं बदलवुं इत्यादि, [illegible] साधु समाचारी, तथा [illegible] [illegible] समाचारी प्रमुख विधि संयुक्त [illegible] अथवा हीनो अधिको करे अथवा [illegible] [illegible] करे अथवा [illegible] [illegible] करे तथा गुर्वादिकना वचन [illegible] वचन [illegible] करे, [illegible] [illegible] इत्यादिक [illegible] करी [illegible] [illegible] [illegible]

एने संबंधी अतिचारो ते चोमासा विना शेषकाळे पाट, पाटला, निष्कारण संथारे, सूवे, स्थापनाचार्य जमे, संथारो पाथरी राखे, प्राभृतिकादि दोष लगे. इत्यादिक लक्षणे सर्व अतिचारो जाणवो.

बीजो जेनुं कुत्सित, निंदनीय मातुं शील एटले आचार होय, तेने कुशील कहीये. तेना त्रण भेद छे. ज्ञानकुशील, दर्शनकुशील अने चारित्रकुशील, तिहां ज्ञानकुशील ते अकाल, अविनय, अबहुमान, गुरुनिन्हवता, योग उपधानहीन सूत्र, अर्थ अने तदुभय हीन, इत्यादिक आशातना युक्त थको ज्ञान भणे तथा आजीविकाहेते पठन पाठन संभळाववुं, लखवुं, लखाववुं, भंडार कराववा. नंदी समारचादि स्थापना उपदेश देवा, तथा आजीविका हेते धर्मकथा कहे, भणे, घर घर धर्म संभळाववा जाय, पोताना यशने हेते श्रावकादिकने जणावे, अनेरा ज्ञानना भंडार ठेलवे, ज्ञानने

वता धरे, निष्कारण अपवाद पद सद्रूपए मार्ग प्रकाशे, तथा सेवे, इत्यादिक लक्षणे चारित्र-कुशील जाणवो.

चोथो संसक्त, ते पासत्था अथवा संवि-ग्नादिक जन जेयानी साथे मले त्यां तेवो थइ प्रवर्त्ते, अथवा मूलोत्तर गुण दोष सर्व एकठा प्रवर्त्तावे, जेम गायनी आगल सुंकडो मूक्यो होय तेमां सरस, नीरस, कपाशिया, खोल, घृत, दुग्धादिक एकठुं मेलव्युं होय तो ते सर्व-ने एकठांज खाइ जाय पण तेनुं विवेचन न करे; तेम ए पण गुण अने दोष सर्वने एकठा प्रवर्त्तावी देखाडे तेने संसक्तो कहीये. ते एक संक्लिष्टचित्त संसक्तो अने बीजो असंक्लिष्ट चि-त्तसंसक्तो एवा बे भेदे जाणवो.

तिहां जे प्राणातिपातादिक पांच आश्रवनो सेवनार, रुद्धिगारव, रसगारव अने शातागारव ए त्रण गारवे करी सहित, स्त्रीरद्वादिक सेव-नने विषे प्रसक्त, अपध्यानशील, परगुणमत्सरी,

वांदणां देवरावबानुं (न कारिज्ज के०) न क-रावे. ए विधि साधुने जाणवो, अने गृहस्थ पासे तो वंदन देवरावे. ए पांचमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल चोवीश थया ॥

तथा (चउसमणाई के०) चार श्रमणा-दिक एटले साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका ए चार जण ते कृतिकर्मने (पुणो के०) वली (कुणंति के०) करे एटले ए चार जन वांदणां आपे. ए छठुं वांदणां देवा योग्य चार जण तेनुं द्वार थयुं. उत्तर बोल अठावीश थया ॥

हवे पांच स्थानके वांदणां न देवां. तेनुं सातमुं द्वार कहे छे.

वक्खित्त पराहुत्ते, पमत्ते मा कयाइ वंदि-ज्जा ॥ आहारं नीहारं, कुणमाणे काउ कामे अ ॥ १९ ॥ दारं ॥ ७ ॥

अर्थ–एक (वखित्त के०) व्याक्षिप्त गु-रुयके एटले ज्यारे धर्मकथा करवामां व्यग्र . होय, बीजो कार्यादिके करीने (पराहुत्ते

के०) पराङ् मुख होय एटले सन्मुख बेठा न होय पण उपरांठा बेठा होय, त्रीजुं (पमत्ते के०) प्रमादी थका होय एटले क्रोधादिके अथवा संथारादिके प्रमाद सेवता होय, निद्रालु थका होय, चोथुं (आहारं के०) आहार पांचमुं (नीहारं के०) नीहार एटले लघुनीति अथवा वडीनीति प्रत्ये (कुणमाणे के०) करता होय, अथवा (काउ के०) करवानी (कामे के०) कामना एटले वांछना करता होय (अ के०) वली करवा जता होय एटले स्थानके (कयाइ के०) केवारे पण गुरुने (मा वंदिज्जा के०) वांदवा नही. अहीं माशब्द निषेधवाचक छे ॥ १५ ॥ ए सातमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल तेत्रीश थया ॥ ३३ ॥

हवे चार स्थानके वांदणां देवां, तेनुं

आठमुं द्वार कहे छे.

पसंते आसणत्थे अ, उवसंते उवट्ठिए ॥

वांदणां देवराववानुं (न कारिज्जा के०) न करावे. ए विधि साधुने जाणवो, अने गृहस्थ पासे तो वंदन देवरावे. ए पांचमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल चोवीश थया ॥

तथा (चउसमणाई के०) चार श्रमणादिक एटले साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका ए चार जण ते कृतिकर्मने (पुणो के०) वली (कुणंति के०) करे एटले ए चार जन वांदणां आपे. ए छठुं वांदणां देवा योग्य चार जण तेनुं द्वार थयुं. उत्तर बोल अट्ठावीश थया ॥

हवे पांच स्थानके वांदणां न देवां, तेनुं सातमुं द्वार कहे छे.

वक्खित्त पराहुत्ते, पमत्ते मा कयाइ वंदिज्जा ॥ आहारं नीहारं, कुणमाणे काउ कामे अ ॥ १९ ॥ द्वारं ॥ ७ ॥

अर्थ—एक (वक्खित्त के०) व्याक्षिप्त पुरुषके एटले ज्यारे धर्मकथा करवामां व्यग्रचित्त होय, बीजो कार्यादिके करीने (पराहुत्ते

हवे आठ कारणे वांदणां देवां, तेनुं नवमुं द्वार कहे छे.

पडिक्कमणे सज्झाए, काउस्सग्गा-वराह पाहुणए ॥ आलोयणसंवरणे, उत्तमट्ठे य वंदणयं ॥ १३ ॥ दारं ॥ ९ ॥

अर्थ-एक (पडिक्कमणे के०) प्रतिक्रमणने विषे सामान्य प्रकारे वांदणां देवाय, बीजा (सज्झाए के०) स्वाध्याय-वाचनादिलक्षण तथा सज्झाय पठावयाने विषे विधि वांदणां देवाय, त्रीजा (काउस्सग्ग के०) पच्चख्खाण करवाना कायोत्सर्गने विषे एटले आचाम्लादि योगादि पारखे परिमित विगय विसर्जामणी विगयपरिभोगनी आज्ञा रूपे वांदणां देवाय, चोथा (अवराह के०) अपराध एटले गुरुनो विनय उल्लंघवा रूप पोतानो अपराध खमावतां वांदणां देवाय, पांचमा (पाहुणए के०) प्राहुणो महोटो यति आवे तेवारे तेमने वां ..., एटले महोटाना समागमे ...गाय.

आगुत्ति तु मेहावी. किइकम्मं पउंजई ॥१६॥
॥ दारं ॥ ८ ॥

अर्थ–एक (पसंते के०) प्रशांतचित्त एटले व्याक्षेपरहित गुरु होय. बीजुं (आसणत्थे के०) आसनस्थ एटले पोताने आसने बेठा होय. (अ के०) वली त्रीजुं (उवसंते के०) उपशांतचित्त एटले क्रोधादिके रहित होय. चोथुं (उवहिए के०) उपस्थित होय एटले [illegible] कहेतां [illegible] थया होय [illegible] गुरु [illegible] त्यारे (अणुन्नवित्तु के०) अनुज्ञा मागीने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करे [illegible] ॥

एवे पांच कारणे वांदणां देवां, तेनुं नवमुं
द्वार कहे छे.

पडिकमणे सज्झाए, काउस्सग्गा-वराह
पाहुणए ॥ आलोयणसंवरणे, उत्तमट्ठे य
वंदणयं ॥ १७ ॥ द्वारं ॥ ए ॥

अर्थ–एक (पडिक्कमणे के०) प्रतिक्रमणने विषे सामान्य प्रकारे वांदणां देवाय, बीजा (सज्झाए के०) स्वाध्याय–वाचनादिलक्षण तथा सज्झाय पठाववाने विषे विधि वांदणां देवाय. त्रीजा (काउस्सग्ग के०) पच्चरकाण करवाना कायोत्सर्गने विषे एटले आचाम्लादि योगादि पारणे परिमित विगय विसर्जनमगी विगयपरिनोगनी आज्ञा रूपे वांदणां देवाय, चोथा (अवराह के०) अपराध एटले गुरुनो विनय उलंघवा रूप पोतानो अपराध खमावतां वांदणां देवाय, पांचमा (पाहुणए के०) प्राहुणो मदोटो यति आवे तेवारे तेमने वांदणां देवाय एटले मदोटाना समागमे वांदणां देवाय.

गाने विषे जाणवां एटले वे चार उपरितन शरीर जाग नमाम्वो. तिहां एक तो जेवारे " इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए " एम कहीने नमे तेवारे छंदेण-नो अणुजाणह एटले आज्ञा मागतो शरीरनो उपरितन जाग नमामे त्यारे गुरु छंदेण कहे. ए एक अवनत थयुं, एम बीजी वार वांदणां देतां बीजुं अवनत थाय. ए बे अवनत रूप बे आवश्यक थयां.

तथा (अहाजाय के०) एक यथाजात एटले जे रूपे दीक्षानो जन्म थयो हतो अर्थात् रजोहरण, मुहपत्ति चोलपट्टमात्रपणे श्रमण थयो हतो तेवीज मुद्राए होय जोमे अ-थवा योनिथी बालक निकलते जेम रचितकर-संपुट होय तेम करसंपुट करया हाथ जोडेलानें ललाटे लगामे ते यथाजात कहीये, एम बे अ-वनत अने त्रीजुं यथाजात मली त्रण आव-श्यक थयां.

ठठा गुरुनी पासे (आलोयण के०) आलोचना लेवाने अर्थे एटले आलोचना विहारादि समाचारी पद जिन्न हुंते थके वांदणां देवाय, सातमा पच्चरकाण करतां अथवा मासखमणादिक विशेष तपरूप (संवरणे के०) संवरने विषे वांदणां देवाय, आठमा (उत्तमठे के०) उत्तमार्थे एटले अंतसमये अनशन करवाने विषे संलेषणाने विषे (य के०) वली वांदणां देवाय, अथवा वांदवुं थाय. ए आठ कारणे (वंदणयं के०) वांदणां देवाय, तेनुं नवमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल पिस्तालीश थया ॥१७॥

हवे अवश्य साचववा माटे आवश्यक कहीये, ते वांदणां देतां पच्चीश आवश्यक सचवाय, तेनुं दशमुं द्वार कहे छे.

दोवणय–महाजाय, आवत्ता बार चउसिर तिगुत्तं ॥ डुपवेसिग निक्कमणं, पणवीसावसय किइकम्मे ॥ १८ ॥

अर्थ–(दोवणयं के०) बे अवनत वांद-

णाने विषे जाणवां एटले बे वार उपरितन शरीर भाग नमाडवो. तिहां एक तो जेवारे "इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए" एम कहीने नमे तेवारे छंदेण- नो अणुजाणह एटले आज्ञा मागतो शरीरनो उपरितन भाग नमाडे त्यारे गुरु छंदेण कहे. ए एक अवनत थयुं, एम बीजी वार वांदणां देतां बीजुं अवनत थाय. ए बे अवनत रूप बे आवश्यक थयां.

तथा (अहाजाय के०) एक यथाजात एटले जे रूपे दीक्षानो जन्म थयो हतो अर्थात् रजोहरण, मुहपत्ति चोलपट्टमात्रपणे श्रमण थयो हतो तेवीज मुद्राए हाथ जोडे अ- थवा योनिथी बालक निकलते जेम रचितकर- संपुट होय तेम करसंपुट करवा हाथ जोडेलाने ललाटे लगाडे ते यथाजात कहीये, एम बे अ- वनत अने त्रीजुं यथाजात मली त्रण आव- श्यक थयां.

नमाडे. ए रीते ए प्रथम वांदणे ३ आवर्त्त थयां तेम वली बीजे वांदणे पण एज रीते ठ आवर्त्त थाय, बे वार मली बार आवर्त्तरूप बार आवश्यक थाय. सर्व मली पंदर थयां. अहीं बबे अक्षरना आवर्तमां पहेलो अक्षर अनुदात्त अने बीजो अक्षर उदात्त बोलवानो ठे अने त्रण अक्षरना आवर्तमां पहेलो अक्षर अनुदात्त बीजो स्वरित अने त्रीजो उदात्त बोलवानो ठे.

तथा (चउसिर के०) चतुःशिरः एटले चार वार शिर नमाडवुं. तिहां पहेले वांदणे बे-वार मस्तक नमाडवुं अने बीजे वांदणे पण बे वार मस्तक नमाडवुं, मली चार वार शिर न-मन थाय, एवं ठंगणीश आवश्यक थयां.

तथा (तिगुत्तं के०)त्रण गुप्ति ते मन, व-चन अने काया ए त्रणने अन्य व्यापारथी गोपवी राखे, ए त्रणने ऊव्यथी तथा जावथी अयत्नाये न प्रवर्त्तावे, एवं बावीश आवश्यक थयां.

तथा (ऽुपवेस के०) ऽिप्रवेश एटले बे वार

आवश्यके बे वार गुरुनी आज्ञा मागी अवग्रह मांहे प्रवेश करवा रूप बे आवश्यक अने (इग निरकमणं के०) एक वार अवग्रहथी वाहेर निकले एटले पहेले वांदणे आज्ञा मागी निसीहि कहेतो पग पुंजतो थको एकवार अवग्रह मांहे प्रवेश करे अने पठी आवस्सियाए कहेतो पावल पुंजतो एकवार पहेले वांदणे अवग्रहथी बाहेर निकले, अने बीजा वांदणामां प्रवेश करे पण फरी पाठो बाहेर निकले नहि, माटे बे वार पेसवुं अने एकवार निकलवुं मली त्रण आवश्यक थयां. ते पूर्वोक्त बावीश साथे मेलवतां (पणवीसा के०) पचीश (आवसय के०) आवश्यक ते (किइकम्मे के०) कृतिकर्म एटले वांदणांने विषे थाय ॥ १७ ॥

किइकम्मंपि कुणंतो, न होइ किइकम्म-निजराभागी ॥ पणवीसामन्नयरं, साहू ठाणं विराहंतो ॥१ए॥दारं॥१०॥

अर्थ—हवे ए (पणवीसां के०) पचीश

आवश्यक: जे छे, तेमां (आसयरं के०) अनेरुं पण (ठाणं के०) स्थानक प्रत्ये (विराहंतो के०) विराधतो थको जे (साहू के०) साधु तेमज साध्वी श्रावक, श्राविका होय, ते (किइकम्मंपि कुणंतो के०) कृतिकर्मने करतो थको पण एटले वांदणां देतो छतो पण (किइकम्म के०) कृति कर्म थकी जे कर्मपरिशाटनरूप (निज्जरा के०) निर्जरा थाय तेनो (भागी के०) संविभागी (न होइ के०) न थाय एटले ते वांदणांनुं जे निर्जरा रूप फळ, ते न पामे ॥ १९ ॥ ए दशमुं द्वार थयुं उत्तर बोल सिनेर थया ॥

यंत्र स्थापना.

अवनत मयतुं	यथाजात मुद्रा	आवर्त.	शिरो नमन.	गुप्ति.	प्रवेश	निष्क्रमणुं.
२	१	१२	४	३	२	१

हवे मुहपत्तिनी पचीश पडिलेहणानुं
अगीयारमुं द्वार कहे छे.

दिठि–पडिलेह एगा, छ उड्ढपप्फोड ति

आवश्यक जे छे, तेमां (आवस्सए के०) आवश्यक पण (ठाणे के०) स्थानक प्रत्ये (विरा- हंतो के०) विराधतो थको जे (साहू के०) साधु तेमज साध्वी श्रावक, श्राविका होय, ते (किइकम्मंपि कुणंतो के०) कृतिकर्मने करतो थको पण एटले वांदणां देतो छतो पण (किइ- कम्म के०) कृति कर्म थकी जे कर्मपरिशाट- नरूप (निज्जरा के०) निर्जरा थाय तेनो (नागी के०) संविभागी (न होइ के०) न थाय एटले ते वांदणांनुं जे निर्जरा रूप फल, ते न पामे ॥ १९ ॥ ए दशमुं द्वार थयुं उत्तर बोल सित्तेर थया ॥

यंत्र स्थापना.

अवनत नमनं	यथाजात मुद्रा.	आवर्त.	शिरो नमन.	गुप्ति.	प्रवेश	निष्क्रमणुं.
२	१	१२	४	३	२	१

हवे मुहपत्तिनी पचीस पडिलेहणानुं अगीआरमुं द्वार कहे छे.

दिठि-पडिलेह एगा, छ उड्ढपप्फोड तिग

तेवार पछी (तिग के०) त्रण (अक्कोम के०) अक्कोमा अने (तिग के०) त्रण (पमज्जणया के०) प्रमार्जना एटले पुंजवुं ते अनुक्रमे एक बीजा थेके त्रणवार (अंतरिआ के०)एकेकने अंतरे करवा एटले मुहपत्तिये एक पमवाली मुहपत्तिना त्रण वधूटक करी जमणा हाथनी अंगुलीना आंतरानी वचमां नरावीने त्रण अक्कोम पलखी नरीये तेम त्रणवार मुहपत्ति ऊंची राखी माबा हाथना तलाने अणलागते खंखेरीये पण हाथने तले लगामीये नहीं; पछी त्रण प्रमार्जना पलालीमांहेथी घसी काहाडीये एम एकेकने आंतरे त्रण वार त्रण त्रण अक्कोमा करवा अने त्रण वार त्रण त्रण प्रमार्जना करवी. एवी रीते त्रण वार करतां (नव के०) नव अक्कोमा खंखेरवा रूप थाय. अने (नव के०) नव पक्कोमा प्रमार्जना एटले पुंजवा रूप थाय, सघली अढार पमिलेहणा थाय, तेनी साथे पूर्वोक्त सात मेलवीये, तेवारे सर्व मली (मुहपत्ति के०) मु-

नाभिक करी होय तोपण मस्तकसे पचीस अं-
गुल जोइने, ए पचीस पडिलेहणा स्त्री पुरुष बं-
नेए करवी. ए अगीयारमुं द्वार थयुं. अने उत्तर
बोल पचासनुं थया ॥

हवे शरीरनी पचीस पडिलेहणानुं बारमुं
द्वार कहे छे.

पायाहिणेण तिश्च तिश्च. वामेअर बाहु
सीस मुह हिअए ॥ अंसुड्डाहो पिठे. चउ छप्पय
देह-पणवीसा ॥ ३१ ॥

अर्थ-(पायाहिणेण के०) प्रदक्षिणाये
एटले प्रदक्षिणावर्त्ते करीने (वाम के०) डावे
(बाहु के०) बाहुये अने बीजुं (इअर के०)
इतर ते जमणे बाहुये तथा त्रीजुं (सीस के०)
मस्तके, चोथुं (मुह के०) मुखे अने पांचमुं
(हिअए के०) हैयाने विषे ए पांच ठामे
(तिश्च तिश्च के०) त्रण त्रण वार पडिलेहणा
करवी एटले मुहपत्तिने अखोटकनी पेरे करण
करीने वामभुजादिक पांच स्थानके फेरववी ते-

मन्यानां व्यवहार छे माटे तेने मस्तकनी त्रण पडिलेहणा होय, शेष सात न होय; चारी प्रकार पडिलेहणा होय.

ए पडिलेहणा जे छे, ते यद्यपि जीवरक्षानी कारणभूत जव्य जीवने छे एम तीर्थकरनी आज्ञा छे, तो पण मनरूप मांकडाने नियंत्रवा सारु घोल धारीये. ते यद्यपि आवश्यकवृत्ति तथा प्रवचनसारोद्धारादि ग्रंथे कह्युं नथी, तोपण अल्पमतिने मन स्थिर राखवा माटे " सुत्तठ तत्त- दिठि " इत्यादि पांच गाथानुं कुलक कह्युं छे, ते इहां वांदणामां अधिकार नथी तोपण ते पांच गाथानो अर्थ लखीये छैये.

जमणा फेरथी मुहपत्तिने वधूटकनी पेरे ग्रहण करीने पडिलेहण करीये ते कहे छे. डावा हाथनी भुजाये त्रण वार पुंजिये त्यां हास्य, रति अने अरति, ए त्रण परिहरुं, एम चिंतवीये. जमणा हाथनी भुजाए त्रण वार पुंजीये त्यां भय, शोक अने डुगंछा, ए त्रण परिहरुं,

के०) उपयुक्त थको एटले शुद्ध उपयोगी थयो थको एकाग्रचित्त जनो (कुणइ के०) करे (न-हुनइ के०) नेम नेम (से के०) ते उद्यम करनार पुरुषने (निज्जरा होइ के०) विशेष कर्मोनी निर्जरा थाय अने जो अविधिये प्रतिलेखनादिक करे तो ते ज कायनो विराधक कह्यो छे. एटले पडिलेहणानुं बारमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल एकसो वीश थया ॥ २२ ॥

हवे चार गाथाये करी बत्रीश दोष त्यागवानुं तेरमुं द्वार कहे छे.

दोस अणाढिअ थद्धिअ,-पविद्ध परिपिंडिअं च टोलगइ ॥ अंकुस कच्छभरिंगिअ, मच्छुवत्तं मणपउठं ॥ २३ ॥ वेइयबद्ध भयंतं, भय गारव मित्त कारणा तिन्नं ॥ पडिणीय रुठ तज्जिअ, सढ हीलिअं विपलियचिअयं ॥२४॥ दिठमदिठं सिंगं, कर तम्मोअण अणिद्धणालिद्धं ॥ ऊणं उत्तर चूलिअ, मूअं ढढर चुडलियं च ॥ २५ ॥ बत्तीसदोस–परिसुद्धं, किइ-

कम्मं जो पउंजई गुरूणं ॥ सो पावइ निव्वाणं, अचिरेण विमाणवासं वा ॥ २६ ॥ दारं ॥ १३ ॥

अर्थ—जे अनादर पणे संभ्रांत थको वांदे, ते पहेलो (अणाढिय के०) अनादृत (दोस के०) दोष. तथा जे जात्यादिके करी धीठो थको स्तब्धपणुं राखतो वांदे, अथवा द्रव्य ञावादिक चउनंगीये करी स्तब्ध थको वांदे ते बीजो (थढिय के०) स्तब्ध दोष, तथा जे वांदणां आपतो ञाकुतनी पेरे तुरत नासे, अथवा वांदणां देतो अरहो परहो फरे ते त्रीजो (अपविद्ध के०) अपविद्ध दोष. तथा जे घणा साधु प्रत्ये एकज वांदणे वांदे अथवा आवर्त्त, व्यंजन, अने आलाप ए सर्व एकठा करे, ते चोथो (परिपिंडियं के०) परिपिंडित दोष. (च के०) वली जे तीडनी पेरे उछलतो एटले ऊपमी ऊपडी विसंष्ठुल वांदे, ते पांचमो (टोलगइ के०) टोलगति दोष. तथा जे अंकुशनी पेरे रजोहरणने वे हाथे ग्रहीने वांदे ते छठो (अंकुस के०) अंकुश दोष. तथा जे

काचबानी पेरे रिंगतो रिंगतो वांदे, ते सातमो (कच्छपरिंगिय के०) कच्छपरिंगित दोष. तथा जे ऊभो थइ बेसीने अथवा जेम माछलानीपरे एकने वांदीने उलटतो तुरत फरी बीजाने वांदे, अथवा पासे पडखुं फरे अथवा रेचकावर्ते अनुलोम प्रतिलोम वांदे. ते आठमो (मत्सुवर्त्त के०) मत्स्योद्वर्त्त दोष तथा कोइ साधु पोताथी एकाद गुण हीन होय ते देखीने मनमां चिंतवतो ईर्ष्या सहित थको वांदे. ते नवमो (मणपउट्ठ के०) मन प्रदुष्ट दोष जाणवो ॥ ९३ ॥

तथा जे बे ढींचणनी उपर तथा हेठे हाथ राखीने अथवा बे हाथ विचाले बे ढींचण राखीने अथवा बे हाथनी वचमां एक ढींचण राखीने अथवा खोळे हाथ मूकीने वांदे. ते दशमो (वेइय-बद्ध के०) वेदिकाबद्ध दोष जाणवो. तथा ए कांइक अमने भजशे एटले विद्यामंत्रादिक शीखवशे इत्यादिक लालचनी बुद्धिये वांदे, अथवा नही वांदीश तो रीस करशे एवुं जाणीने वांदे, ते

अणीयारमां (भयंत के०) भजंत दोष जाणवो.
तथा एमने नहीं वांदीश तो मुजने गछादिकथी
बाहिर काढी मूकशे, अथवा दावादिक आक्रोश
करशे. इत्यादिक भयें करी वांदे, ते बारमो (भ-
य के०) भयदोष जाणवो. तथा जो हुं अनी
रीते वांदीश तो सर्व एम जाणशे जे ए सामाचा-
रीमां कुशल छे, भलो छे, विधिप्रविण छे, एवी
रीते जाणपणाना गारवे करी वांदे, ते तेरमो (गा-
रव के०) गारव दोष जाणवो. तथा एमनी सा-
थें महारे पूर्व मित्राइ छे, एवुं जाणी मित्रादिक
नी अनुवृत्तियें वांदे, ते चौदमो (मित्त के०)
मित्रदोष जाणवो. तथा जे ज्ञानदर्शनादिक का-
रण विना बीजा अन्य कारण जे वस्त्रादिक पदा-
दिक मुजने देशे, एम उद्देशीने जे वांदे, ते पन्न-
रमो (कारण के०) कारण दोष जाणवो. तथा
जे चोरना परे छानो रहो थको वांदे एटले पर
थी पोताना आत्माने छानो राखे, रखे कोइ मु-
जने देखी देशे तो माहारी लघुता थशे. एवी

वांदे, ते एकवीशमो (हीलिश्रं के०) हीलितं दोष जाणवो. तथा अर्धा वांदणां देइने वचमां वली देशकथादिक विकथाउं करतो करतो अभिमाने वांदे, ते वावीशमो (विपलिपचिअयं के०) विपलितचित्तकं एटले विपलितचित्त दोष जाणवो ॥ २४ ॥

जे मुंगो रही छानो मानो बेसे, तेने कोइ बीजो जाणी जाय जे आ छानो बेसी रह्यो छे, तो वांदे तथा कोइ अपरनुं वचमां अंतर वते न वांदे, एम दीठुं अणदीठुं करे, एटले कोइये दीठुं, कोइये न दीठुं एम जाणतां थको अंधारामां वांदणां आपे, ते त्रेवीशमो (दिठमदिठं के०) दृष्टादृष्ट दोष जाणवो. तथा जे पोताना मस्तक ने एक देशे करी एटले मस्तकनुं एक पासुं गुरुने पगे लगाडे तथा मुद्राहीन पणे धर्मोपकरणादिक विपरीत पणे राखतो छतो वांदे, ते चोवीशमो (सिंगं के०) शृंग दोष जाणवो. तथा जे राजादिकना

रीते पोताने वुपावतो वांदे, ते सोलमो (तिन्न के०) स्तैन्यदोष जाणवो. तथा आहारादिकनी वेलाये प्रत्यनिकपणे अनवसरे वांदे, ते सत्तरमो (पमिणीय के०) प्रत्यनिक दोष जाणवो. तथा क्रोधे धमधम्यो थको वंदना करे, अथवा कोपांतप्रत्ये वांदे, ते अढारमो (रुठ के०) रुष्टदोष जाणवो. तथा जे घणीये वार वांद्या, तो पण प्रसन्न थता नथी तेम कोप पण करता नथी काष्टनी पेरे देखाय ठे, एम तर्जना करतो वांदे, अथवा तर्जनी अंगुलियादिके तर्जना देतो थको वांदे, एटले कहे के एने रूपेथी शुं? अने तुठेथी पण शुं? एम तर्जतो थको वांदे, ते उंगणीशमो (तज्जिय के०) तर्जित दोष जाणवो. तथा जे मायादिक कपटे करी वांदे, अथवा ग्लानादिक व्यपदेश करी सम्यक् प्रकारे न वांदे, ते वीशमो (सढ के०) शठ दोष जाणवो. तथा हे गणि ! हे वाचक ! तमने वांदवाथी शुं फल थाय? एवी रीते जात्यादिकनी हेलना करतो थको

वांदे, ते एकवीशमो (हीलिअं के०) हीलितं दोष जाणवो. तथा अर्द्धा वांदणां देइने वचमां वस्रोदेशकथादिक विकथाउं करतो करतो अभिमाने वांदे, ते बावीशमो (विपलियचिअर्थ के०) विपलितचित्तकं एटले विपलितचित्त दोष जाणवो ॥ २४ ॥

जे मुंगो रही ठानो मानो बेसे, तेने कोइ बीजो जाणी जाय जे आ ठानो बेसी रह्यो छे, तो वांदे तथा कोइ अपरनुं वचमां अंतर छते न वांदे, एम दीठुं अणदीठुं करे, एटले कोइये दीठुं, कोइये न दीठुं एम लाजतो थको अंधारामां वांदणां आपे, ते त्रेवीशमो (दिठमदिठं के०) दृष्टादृष्ट दोष जाणवो. तथा जे पोताना मस्तक ने एक देशे करी एटले मस्तकनुं एक पासुं गुरुने पगे लगाडे तथा मुद्राहीन पणे धर्मोपकरणादिक विपरीत पणे राखतो छतो वांदे, ते चोवीशमो (सिंगं के०) शृंग दोष जाणवो. तथा जे राजादिकना

के०) आश्लिष्टानाश्लिष्ट दोष जाणवो. तथा जे आवश्यकादिके पाठ आलावा असंपूर्ण कहेतो थको वांदे, ते अठावीशमो (ऊणं के०) ऊण दोष जाणवो. तथा जे वांदणे वांदीने पछी महोटे शब्दे करी 'मछएण वंदामि' एम कहे, ते ओगणत्रीशमो (उत्तरचूलिअ के०) उत्तरचूलिका दोष जाणवो. तथा जे आलाप आवर्त्तादिकने मूकनी पेरे अणउच्चरतो वांदे, ते त्रीशमो (मूअं के०) मूकदोष जाणवो. तथा जे आलावाने अत्यंत महोटे स्वरे उच्चार करतो वांदे, ते एकत्रीशमो (ढहर के०) ढहर दोष जाणवो. तथा जे अंबुअडानी पेरे रजोहरण छेहडे महण करी रजोहरणने भमाडतो थको वांदणां आपे, ते (च के०) वली बत्रीशमो (चुडलियं के०) चुडलिक दोष जाणवो. ॥ २५ ॥

ए पूर्वोक्त (बत्तीसदोस के०) बत्रीश दोष तेणे करीने रहित थको (परिसुद्धं के०)

परिशुद्ध निर्दोषपणे (किइकम्मं के०) कृतिकर्म जे वांदणां तेने (गुरूणं के०) गुरुना चरण प्रत्ये (जो के०) जे जव्य प्राणी (पउंजई के०) प्र-युंजे, एटले आपे ठे (सो के०) ते प्राणी (अ-चिरेण के०) थोमा कालमां (निव्वाणं के०) निर्वाण एटले कर्मरूपदावानलनो उपशम जे मोक्ष ते प्रत्ये (पावइ के०) पामे (वा के०) अथवा (विमाणवासं के०) वेमानिक देवपणाना वास प्रत्ये पामे ॥२६॥ एटले ए तेरमुं बत्रीश दोषनुं द्वार पूरुं थयुं, उत्तर बोल १५२ थया ॥

हवे वांदणां देतां छ गुण उपजे, तेनुं चौदमुं द्वार कहे ठे.

इह ठच्च गुणा विणउ,—वयार माणाइ नंग गुरुपूआ ॥ तिज्ञयराण य आणा, सुअधम्मारा-हणा—किरिया ॥२७। द्वारं ॥१४॥

अर्थ–(इह के०) ए वांदणाने विषे (ठच्च के०) ठ वली (गुणा के०) गुण उपजे ते कहे ठे. तेमा एक तो (विणउवयार के०) विनयो-

हवे त्रण गाथाये करी गुरुस्थापनानुं पन्नरमुं द्वार कहे छे.

गुरुगुणजुत्तं तु गुरुं, ठाविज्जा अहव तत्थ अस्काइं ॥ अहवा नाणाइतिअं, ठविज्ज सक्कं गुरुअनावे ॥ ४७ ॥ अक्के वराडए वा, कठ्ठे पुत्थे अ चित्तकम्मे अ ॥ सप्भावमसप्भावं, गुरुठवणा इत्तरावकहा ॥४८॥ गुरुविरहंमी ठवणा, गुरुवएसोवदंसणत्थं च ॥ जिणविरहंमी जिणबिं,-बसेवणा-मंतणं सहलं ॥ ४० ॥ दारं ॥१५॥

अर्थ-(गुरु के०) महोटा विशेष प्रतिरूपादि छत्रीश (गुणजुत्तं के०) गुणे करी युक्त एवा (तु के०) निश्चे (गुरुं के०) गुरुने (ठाविज्जा के०) स्थापन करीने तेनी आगल प्रतिक्रमणादि क्रिया करीये (अहवा के०) अथवा (सक्कं के०) साक्षात् पूर्वोक्त गुणयुक्त एवा (गुरुअनावे के०) गुरुनो अन्नाव छते (तत्थ के०) तत्र एटले ते गुरुने स्थानके (अस्काइं के०) अक्षादिक स्थापीने तेनी आगल क्रिया करीये ते

अक्षादिक स्थापनाचार्य न होय तो (नाणाइ-तिगं के०) ज्ञानादिक त्रण एटले एक ज्ञान, बीजुं दर्शन, त्रीजुं चारित्र, ए त्रणेना उपकरण जे पोथी नवकारवाली प्रमुख ते तेने (ठविज्जा के०) स्थापीने तेनी आगल क्रिया करीये, परंतु अगुरुने विषे गुरुबुद्धि आणीने तेनी आगल क्रिया करवी नहीं. केमके आगममां अगुरुने विषे जे गुरुबुद्धि आणवी तेने अत्यंत आकरुं लोकोत्तर मिथ्यात्व कह्युं छे ॥ २७ ॥

हवे अक्षादिक कया ते कहे छे. एक (अक्खे के०) अक्ष ते चंदणग (गोळ शंखाकृति)नी स्थापना जाणवी, तेना अभावे (वराडए के०) वराटके एटले त्रण लींटीना कोडानी स्थापना करवी, (वा के०) अथवा (कट्ठे के०) काष्ट ते गांगा गांगी प्रमुख चंदनादिकनी पाटी आदिकनी स्थापना करवी, (पुत्थे के०)—पुस्तकनी स्थापना करवी, (अ के०) वली तेना अभावे (चित्तकम्मे के०) चित्रकर्म ते गुरुनी

मूर्तिनां चित्राम--आलेख, अथवा गुरुनी काष्ठनी प्रतिमा. ए विषे श्रीअनुयोगद्वार सूत्रनो पाठ लखीये छीये, "से किं तं ठवणाणुम्रा जम्नं वा अक्खे वा वराडए वा कठकम्मे वा पोत्थकम्मे वा लेप्पकम्मे वा चित्तकम्मे वा गंथिकम्मे वा वेढिकम्मे वा पूरिकम्मे वा संघातिकम्मे वा एगेवा अणेगे वा सप्नावठ वा असप्नावठ वा ठवणा ठविज्जत्ति ॥ एवी रीतें गुरुनी स्थापना करवी. ते वे प्रकारे जाणवी ते कहे ठे. (सप्नावमसप्नावं के०) एक सद्भावस्थापना अने बीजी असद्भाव स्थापना, तिहां गुरुनी मूर्ति तथा प्रतिमादिकनी आकार सहित जे स्थापना ते सद्भावं स्थापना जाणवी, अने आकार विना अक्षादिकनी जे स्थापना करवी ते असद्भाव स्थापना जाणवी, वली (गुरुठवणा के०) गुरुनी स्थापना ते एक (इत्तर के०) इत्वर अने बीजी (यावकहा के०) यावत् कथिका, तेमा इत्वर ते थोमा काल लगे स्थापना रहे, जेम

नवकारवाळी अने पुस्तकादिकनी जे स्थापना छे, ते स्थापना क्रिया करवाने वखतें थापे छे, माटे ज्यां सुधी ते क्रिया करीयें, तिहां सुधी ते स्थापना रहे, जो इच्छि तिहांनी तिहा राखीयें, तो रहे, नहीं तो वळी फरी बीजी स्थापना स्थापवी पडे. ते इत्वर कालनी स्थापना जाणवी. अने बीजी यावत् कथिक स्थापना ते घणा काल पर्यंत रहे, ते प्रतिमादिक तथा अक्षादिकनी ये प्रकारनी स्थापना करीये ठीवे. ए स्थापनानी आशातना पण गुर्वादिकनी पेरे टालवी ॥ २७ ॥

हवे स्थापना शा कारण माटे स्थापवी? ते कहे छे. जेवारे साक्षात् गुणवंत (गुरुविरहंमी के०) गुरुनो विरह एटले अन्नाव होय, तेवारे (गुरुयएसोवदंसणछं के०) गुरुपदेशोपदर्शनने अर्थे एटले गुरुनो उपदेश देखाडवाने माटे (ठवणा के०) स्थापना स्थापवी जोइये (च के०) वळी, इहां नावार्थ ए ठे जे, स्थापनानी आ-

गल क्रिया करना ने एवुं जाणे जे गुरुज मुजने आदेश आपे छे, ने म्हारे इत्याकारि कही प्रमाण करवुं. केमके गुरुना अन्नावे जे धर्मानुष्ठान करवुं, ते शून्य नाव गणाय. हवे दृष्टांत कहे छे. जेम (जिणविरहंमी के०) हमणा श्रीजिनेश्वरनो विरह छतां (जिणबिंब के०) श्रीतीर्थंकरना बिंब एटले प्रतिमानी (सेवणा के०) सेवना करीने (आमंतणं के०) आमंत्रण करवुं. जे हे नगवंत! तमे मुजने संसार समुद्र थकी तारो, मोक्ष आपो इत्यादिक जे कहेवुं, ते (सहलं के०) सफल थाय छे. ए दृष्टांते इहां पण श्रीगुरुना विरहे गुरुनी स्थापना पण सफल होय छे. ए गुरु स्थापनाना एकज बोलनुं पन्नरमुं हार थयुं. उत्तर बोल १५ए थया ॥ ३० ॥

हवे बे प्रकारना अवग्रहनुं सोलमुं हार कहे छे.

चउदिसि गुरुग्गहो इह, अहुठ तेरस करे सपरपरके ॥ ष्णाणुन्नास्स सया, न कप्पए

तह पविसेउं ॥ ३१ ॥ दारं ॥ १६ ॥

अर्थ-(इह के०) ए श्रीजिनशासनमांहे (गुरुग्गहो के०) गुरुपकी अवग्रह (चउदिसि के०) चारे दिशाने विषे (सपरपक्खे के०) स्व अने परपक्ष आश्रयी अनुक्रमे केटलो केटलो होय? ते कहे छे. तिहां एक (अहुट्ठ के०) साडा त्रण अने बीजो (तेरस के०) तेर (करे के०) हाथनो जाणवो. तेमां स्वपक्ष ते पोतामां साधु साधुमां अने बीजा श्रावक जाणवा. तथा परपक्ष ते साधु अने साध्वी तथा श्राविका जाणवी. तेमां साधु साधुने तथा श्रावकने मांहोमांहे साडा त्रण हाथ वेगलो अवग्रह होय अने गुर्वादिकथी साध्वीतथा श्राविकाने तेर हाथ वेगलो अवग्रह होय. तेमज साध्वी तथा श्राविकाने मांहोमांहे साडा त्रण हाथनो अवग्रह होय (तह के०) तेटला अवग्रहमांहे (अणणुन्नायस्स के०) गुरुनी अनुज्ञा लीधा विना (सया के०) सदा निरंतर (पविसेउं.के०) प्रवेश करवाने

(न कप्पए के०) न कल्पे. ए ये अरामबनुं सोलमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल २६२ थया ॥३१॥

हवे वांदणांना सूत्रना अक्षरनी संख्यानुं सत्तरमुं द्वार तथा पदनी संख्यानुं अढारमुं द्वार कहे छे.

पण तिग बारस दुग तिग, चउरो छठाण पय इगुणतीसं ॥ गुणतीस सेस आव-स्सयाइ सव्वपय अडवन्ना ॥३४॥ दारं ॥ १७ ॥ १८ ॥

अर्थ—प्रथम वंदनक सूत्रना अक्षर(२२६) छे. तथा लघु अक्षर (२०१) छे. अने गुरु अक्षर तो इच्छामि [illegible] पर्यंत [illegible] छे. [illegible] [illegible] एवं [illegible] गुरु अक्षर [illegible]. ए [illegible] अक्षर गुरु [illegible] [illegible] अढारमुं वंदनक सूत्रना अक्षरोनुं द्वार थयुं. उत्तर बोल (३०७) थया.

हवे अढारमुं वंदनक सूत्रना पदनी सं-ख्यानुं द्वार, गाथानो अर्थ कहे छे. तिहां 'कि

भणयंते पदं ' एटले विभक्ति जेना अंतमां होय तेने पद कहीये, ते इहां वंदनक सूत्रनां छ स्थानक मध्ये सर्व मली अठावन पदनी संख्या छे, तिहां प्रथम स्थानकमां 'इछामि, खमासमणो, वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए,' ए (पण के०) पांच पद जाणवां.

तथा बीजा स्थानकमां अणुजाणह 'मे, मिउग्गहं,' ए (तिन्न के०) त्रण पद जाणवां, तथा त्रीजा स्थानक मध्ये ' निसीहि, अहो, कायं, कायसंफासं, खमणिज्जो, भे, किलामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण, भे, दिवसो, वइक्कंतो ' ए (बारस के०) बार पद जाणवां तथा चोथा स्थानकमां 'जत्ता, भे,' ए (दुग के०) बे पद जाणवां, तथा पांचमा स्थानकमां ' जवणिज्जं, च, भे,' ए (तिग के०) त्रण पद जाणवां, तथा छठा स्थानकमां ' खामेमि, खमासमणो, देवसियं, वइक्कमं,' ए (चउरो के०) चार पद जाणवां, एम (छठाण के०) छ

तो "तिविहेण" एवो पाठ कहे, ए प्रथम गुरुवचन जाणवुं, तथा 'अणुजाणह मे मिउग्गहं' ए पाठ शिष्य कहे, तेवारे गुरु कहे (अणुजाणामी के०) आज्ञा आपुं छुं. ए बीजुं गुरुवचन जाणवुं, तथा निसीहि इत्यादिक जेवारे शिष्य कहे, ते वारे गुरु कहे (तहत्ति के०) तथेति ए त्रीजुं गुरुवचन जाणवुं, तथा जेवारे जत्ता भे इत्यादि शिष्य कहे, तेवारे गुरु कहे (तुप्भंपि वहए के०) तमने पण वर्ते छे ? ए चोथुं गुरुवचन जाणवुं, तथा जे वारे 'जवणिज्जं च भे' शिष्य कहे तेवारे गुरु कहे (एवं के०) एमज, तुं पूछे छे तेमज. ए पांचमुं गुरुवचन जाणवुं. तथा जेवारे खामेमि खमासमणो शिष्य कहे, ते वारे गुरु कहे (अहमवि खामेमि तुमं के०) हुं पण खमावुं छुं तुम प्रत्ये. ए छठुं गुरुवचन जाणवुं. ए छ (वयणाइं के०) वचन ते (वंदण के०) वांदणां देवा योग्य (अरिहस्स के०) आचार्यादिकनां जाणवां, एटले वीशमुं

कहे ॥ संथार-पायघट्टण, चिठ्ठु-च-समासणे आ-
वि ॥ ३७ ॥ दारं ॥ ११ ॥

अर्थ–प्रथम गुरुने (पुरओ के०) आगल
चालतां शिष्यने विनयभंगादिक लागे, माटे ए
अकारणे आशातना थाय परंतु जो मार्गा-
दिकनी विषमता होय अथवा गुरुने मार्ग दे-
खाडवा माटे जो गुरुथी आगल चालवुं पडे तो
ते आशातना गणाय नहीं. बीजी (पक्ख के०)
गुरुने पडखे पेहु पासे गमन करे गुरुनी बरा-
बर चाले तो आशातना थाय, त्रीजी (आस-
न्ने गंता के०) एमज गुरुने आसन्ने एटले अ-
कतो गंता एटले चाले, पछवाडे ढूकडो चाले
तो श्वास, छींक, श्लेष्म, उधरसादि दोष रूप
आशातना थाय, एम ए त्रण आशातना जे-
टले भूमिभागे गुरुनी साथे चालतां थर्ता
थाय, तेटलेज भूमिभागे गुरुनी पासे (चि-
ट्ठण के०) उभा रहेवाथकी पण पूर्वोक्त आ-
शातना थाय.

करे ॥ संथार-पायघट्टण, चिट्ठु-च-समासणे आ-
वि ॥ ३७ ॥ दारं ॥ २१ ॥

अर्थ-प्रथम गुरुने (पुरओ के०) आगल चालतां शिष्यने विनयभंगादिक लागे, माटे ए प्रकारे आशातना थाय परंतु जो मार्गादिकनी विषमता होय अथवा गुरुने मार्ग देखाडवा माटे जो गुरुथी आगल चालवुं पडे तो ते आशातना गणाय नही. बीजी (पक्ख के०) गुरुने पडखे बेहु पासे गमन करे गुरुनी बराबर चाले तो आशातना थाय, त्रीजी (आसन्ने गंता के०) एमज गुरुने आसन्ने एटले अडकतो गंता एटले चाले, पठवाडे ढूकडो चाले तो श्वास, छींक, श्लेष्म, उभ्रसादि दोष रूप आशातना थाय, एम ए त्रण आशातना जेटले भूमिभागे गुरुनी साथे चालतां थकां थाय, तेटलेज भूमिभागे गुरुनी पासे (चिट्ठण के०) उभा रहेवाथकी पण पूर्वोक्त त्रण आशातना थाय, एम त्रण स्थानके गुरुनी

फट्टे ॥ संथार-पायघट्टण, चिट्ठु-च्च-समासणे आवि ॥ १७ ॥ दारं ॥ २१ ॥

अर्थ-प्रथम गुरुने (पुरओ के०) आगळ चालतां शिष्यने विनयभंगादिक लागे, माटे ए प्रकारे आशातना थाय परंतु जो मार्गादिकनी विषमता होय अथवा गुरुने मार्ग देखाड्या माटे जो गुरुथी आगळ चालवुं पडे तो ते आशातना गणाय नही. बीजी (पक्ख के०) गुरुने पडखे बेहु पासे गमन करे गुरुनी बराबर चाले तो आशातना थाय, त्रीजी (आसन्ने गंता के०) एमज गुरुने आसन्न एटले अडकतो गंता एटले चाले, पछवाडे ढूकडां चाले तो श्वास, छींक, श्लेष्म, उपरासादि दोष रूप आशातना थाय, एम ए त्रण आशातना जेटले भूमिभागे गुरुनी साथे चालतां थती थाय, तेटलेज भूमिभागे गुरुनी वांसे (चिट्ठण के०) उभा रहेवाथकी पण पूर्वोक्त त्रण आशातना थाय, एम त्रण स्थानके गुरुनी

[illegible] ([illegible] कं०) येथला [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

वणे य के०) पूर्वेज पोते बोलावे तो आशातना थाय, (अ के०) वली चौदमी अशन पान खादिम स्वादिम ए चारे आहार रूप जे भिक्षा आणी होय ते प्रथम कोइ बीजा शिष्यादिक आगल आलोईने पछी गुरु आगळ (आलोए के०) आलोचे तो आशातना थाय ॥ २५ ॥

पन्नरमी (तह के०) तेमज वली अशनादिक चार जे लाव्या होय ते प्रथम बीजा यतिने देखाडीने पछी गुरुने (उवदंस के०) देखाडे तो आशातना थाय, सोलमी तेमज अशनादिक चार लाव्या होय तेनी प्रथम बीजा यतिने निमंत्रणा करे के आ आहार पाण लेशो ? पछी गुरुने (निमंतण के०) निमंत्रणा करे तो आशातना थाय. सत्तरमी अशनादिक चार सूरि प्रमुख साथे भिक्षाये आणीने पछी गुर्वादिकने पूछ्या विना जेनी साथे पोतानुं मन माने तेने मधुर जाणीने (खद्ध के०) खवरावे तो आशातना लागे, अढारमी गुर्वा-

दिक तथा रत्नाधिक साथे जमतो थको (आ- यमणे के०) अशनादिक स्निग्ध–सरस होय ते पोतेज वावरे, ते आशातना जाणवी. यदुक्तं दशाश्रुतस्कंधसूत्रे ॥ सेसेहे असणं वा राइणिहिं- सएहिं भुंजमाणे तत्र सेहे खद्धं खद्धं सायं डायं उसढं उसढं मणुम्नं मणुमं मणामं मणामं नि- द्धं निद्धं लुक्कं लुक्कं आहारित्ता हवइ आसायणा सेहस्सत्ति ॥ (तहा के०) तेमज उगणीशमी गुरु जे वारे साद करे तेवारे (अपडिसुणणे के०) अप्रतिश्रवणे एटले अणसांभळतानी पेरे गुरुने पाछो जवाब आपे नही, ते आशातना जाणवी. ए आशातना पूर्वे कही छे, परंतु ते रात्रिसंबंधी शयन करवा पछीनी जाणवी, अ- ने आ दिवससंबंधि धिठाइपणे तथा अना- भोगपणे जाणवी, वीशमी रत्नाधिक तथा गुर्वादिक जेवारे साद करे, तेवारे तेने (ख- द्धत्तिअ के०) खरे एटले अत्यंत कर्कश महोटे स्वरे करी प्रत्युत्तर घणा वाले, कहे के

अरे भाइ खाधो रे भाइ खाधो ! केम केम सू-
कता नथी. इत्यादिक कठिन वचन बोले, अ-
थवा आक्रोश गाढस्वरादिक गुरुने करावे, ते
आशातना जाणवी, वली एकवीशमी गुर्वादिके
बोलाव्यो थको (तच्चगए के०) त्यांथीज एटले
पोताने ठेकाणे बेठो थकोज उत्तर आपे, प-
रंतु गुरुनी समीपे आवीने जवाब न आपे तो
आशातना थाय. बावीशमी वली गुर्वादिके
बोलाव्यो थको कहे के (किं के०) शुं छे ते ?
(तुम के०) तमे कहो, कोण कहेवरावे छे,
शुं कहो छो ? इत्यादिक विनयहीन वचन बो-
ले, ते आशातना जाणवी, तथा त्रेवीशमी वली
गुर्वादिके बोलाव्यो थको कहे के तुंज कां न-
थी करतो ? एवी रीते पोताना पूज्यने एक-
वचनांत बोलावे अथवा कहे के तमे कोण थ-
का मुजने प्रेरणा करो छो ? इत्यादिक वचन
कहे, ते आशातना जाणवी. चोवीशमी गुर्वा-
दिक तथा रत्नाधिक शिष्यने कहे के तमे समर्थ

छो, पर्याये लघु छो, माटे वृद्धनुं तथा ग्लाननुं वेयावच्च करो, तेवारे ते पाछो जवाब आपे के जो तमेज लाभ जाणो छो, तो तमे पोते केम नथी करता ? तथा तमारो बीजो पण शिष्यादिकनो बहु परिवार छे ते शुं लाभनो अर्थी नथी ? तो तेमनी पासे करावो. तेवारे वली गुर्वादिक तेने कहे के हे शिष्य ! तमे आलसु न थार्उ. ते वारे वली गुरुने कहे के तमे ते शुं अमनेज दीठा छे ? एवी रीतनां वचन बोलीने गुरुनी (तज्जाय के०) तर्जना करे ते आशातना जाणवी. पचीशमी गुर्वादिक धर्मकथा कहेता होय तेवारे शिष्य डुमणो थाय परंतु (नोसुमणे के०) सुमनो न थाय, गुर्वादिकना गुणनी प्रशंसा करे नहीं अने कहे के तमे गृहस्थने विशेष प्रकारे समजावो छो, कहो छो, ते रीते अमने समजावता नथी अथवा गुर्वादिक तथा रत्नाधिकनो जे रागी होय तेने देखीने डुमणो थाय ते आशातना जाणवी ॥२६ ॥

गुरुये अर्थ कह्यो होय तेहिज अर्थ वली वि-
शेषथी विस्तारी चर्चा देखाडीने (कहे के०)
कहे तो आशातना थाय, त्रीशमी (संथा-
रपायघट्टण के०) गुरुनी शय्या तथा संथाराने
पोताना पादादिके करी संघट्टे, तेने खमावे
नही, तो आशातना थाय, इहां शय्या ते,
सर्वांग प्रमाण जाणवी, अने संथारो ते अढी
हाथ प्रमाण जाणवो, अथवा शय्या ते उनवगेरे
वस्त्रमय जाणवी, अने संथारो ते दर्भादिक
तृणमय जाणवो. एकत्रीशमी गुरुनी शय्या
संथारो तथा बेसणादिकने विषे (चिठ्ठ के०)
तिष्ठेत् एटले बेसे, अथवा आलोटे, असभ्य
शरीरने अवयवे करी फरसे, तो आशातना
थाय, बत्रीशमी गुरुथी (उच्च के०) उंचे आ-
सने बेसे, अथवा अधिक बेसणे बेसे तथा
गुरु जेवां वस्त्र पहेरे, अगर तेथकी अधिक मूल्य-
वालां वस्त्रादिकनो परिभोग करे, तो आशातना
थाय, तेत्रीशमी (समासणेआवि के०). गुरु

समान आसने बेसे, अथवा गुरुनां जेवां वस्त्रादि होय, तेवांज समान वस्त्रादिकनो परिभोग करे तो आशातना थाय छे. इहां अपिशब्द निश्चयवाचक छे, तथा गुरुने आगल अने पाछल तथा बे बाजुये बेसवादिकनी आशातना तो पूर्वे कहेली छे. ए तेत्रीश आशातना टालतो थको शिष्य विनयी कहेवाय, ते शिष्य वांदणां देवा देवरावयाने योग्य जाणवो, ए प्रवचनपात्र थाय ए तेत्रीश आशातनानुं एकवीशमुं द्वार संपूर्ण थयुं. सर्व बोल (४९०) थया ॥ ३३ ॥

हवे बे विधिनुं बावीशमुं द्वार कहे छे. गुरु सामग्रीना अन्नावे तथा प्रतिक्रमण करणादि पर्याप्तिने अन्नावे प्रन्नाते अने संध्याये वांदणां बे देवां. ते बेहु विधिनो अनुक्रम जाणवो, ते कहे छे.

इरिया कुसुमिणुस्सग्गो, चिइवंदण पुत्ति वंदणा–लोयं ॥ वंदण खामण वंदण, संवर चउ

छोज्ञ ड सज्ज्ञाज ॥ ३ए ॥

अर्थ–तिहां प्रथम प्रज्ञातनो वंदनक विधि कहे छे. इहां पहेली १ (इरिया के०) इरियापथिकी प्रतिक्रमीने, पछी २ (कुसुमिणुस्सग्गो के०) कुसुमिण डुसुमिण उड्डावणी निमित्ते चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, ते वार पछी ३ आदेश मागीने, (चिइवंदण के०) चैत्यवंदन करे, पछी ४ आदेश मागीने, (पुत्ति के०) मुहपत्ति पडिलेहे, पठी (वंदण के०) वांदणां वे आपे, ते वार पछी ६ (आलोयं के०) राइयं आलोए, तेवार पठी ७ (वंदण के०) वे वांदणां आपे. पठी ८ (खामण के०) अप्नुठिर्जमि अप्रितर राइयं खामवुं, पठी ए (वंदण के०) वेवार वांदणां आपे, पठी १० (संवर के०) पच्चरकाण करे, पठी ११ (चउछोज्ञ के०) चार खमासमण पूर्वक ज्ञगवान् आचार्यादिक चारने थोभ वंदन करे, पछी १२ (डुसज्ज्ञाउ के०) सद्याय संदिसावुं, सद्याय

करुं, ए बे आदेश बे खमासमणे मागी सज्झाय करे, ए प्रजात वंदनकविधि जाणवो ॥ ३० ॥

हवे संध्यावंदनकविधि अथवा लघुप्रतिक्रम णविधि कहे छे.

इरिया चिइवंदण पु,-त्ति वंदणं चरिम वंदणालोयं ॥ वंदण खामण चउगो,-च्च दिवसुस्सग्गो डुसझाउ ॥ ३ए ॥ दारं ॥ २२ ॥

अर्थ–प्रथम १ (इरिया के०) इरियावहि पडिक्कमीने पछी आदेश मागी २ (चिइवंदण के०) चैत्यवंदन करे, तेवार पढी ३ (पुत्ति के०) मुहपत्ति पडिलेहे, पछी ४ (वंदणं के०) बे वांदणां दीये, ते दइने पढी ५ (चरिम के०) दिवसचरिम पच्चक्खाण करे, पछी ६ (वंदण के०) बे वांदणां दइने ७ (आलोयं के०) देवसियं आलोए, पढी ८ (वंदण के०) बे वांदणां दइने, ए (खामण के०) देवसियं खामणुं करे, पढी १० (चउछोज्न के०) चार

खमासमण दइ भगवानादिक चारने वांदी पढी आदेश मागीने ११ (दिवसुस्सग्गों के०) देवसियपायछित्तविसोहणत्थं चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करी आदेश मागीने १२ (छुस-ग्गर्उ के०) बे खमासमणे सद्याय करे, एटले एक खमासमणे सद्याय संदिसावुं, बीजे ख-मासमणे सद्याय करुं.॥ इति संध्यावंदनकविधिः समाप्तः ॥ ए बावीशमुं द्वार प्रात्नातिकवंदन तथा संध्यावंदन मली बे विधिये करी बे प्रका-रनुं कह्युं, उत्तर नेद ४७२ थया ॥ ३९ ॥

एयं किइकम्मविहिं, जुंजंता चरण-करण-माउत्ता ॥ साहू खवंति कम्मं, अणेगनवसं-चियमणंतं ॥ ४० ॥

अर्थ-(एयं के०) ए पूर्वे कही आव्या जे बोल, तेणे करी (किइकम्म के०) कृति-कर्म जे वांदणां, तेनो जे (विहिं के०) विधि जे व्यवहार ते प्रत्ये (जुंजंता के०) प्रयुंजतां थकां (चरणकरणं के०) चरणसित्तरी अने

करणसित्तरी तेना गुणे करी (आउत्ता के०) आयुक्त एटले सहित एवा (साहू के०) जे साधु निर्ग्रंथ चारित्रीया ते (अणेगजवसंचियं के०) अनेक जवनां संचित एटले कोटि जन्मनां उपार्जन करेलां अने जेनो (अणंतं के०) कुरंत विपाक छे एटले अनंता काल पर्यंत जोगवाय एवां अछेद्यपणे रहेनारां जे कर्म अथवा अनंत काळनां उपार्ज्जन करेलां एवां जे (कम्मं के०) कर्म छे ते कर्मों प्रत्ये तुरत शीघ्रपणे (खवंति के०) क्षेपवी निराकरण करे छे, अर्थात् क्षय पमाडे छे ॥ ४० ॥

अप्पमइ–नवबोहत्थं, नासियं विवरियं च जमिह मए ॥ तं सोहंतु गीयत्था, अणनिनिवेसी अमच्छरिणो ॥ ४१ ॥ इति ॥

अर्थ–आ वांदणांनो विचार ते (अप्पमइ के०) अल्प छे मति जेहनी एवा जे (नव के०) भव्यप्राणी तेमना (वोहत्थं के०) बोध ज्ञानने अर्थे (नासियं के०) नांख्यो परंतु

आवश्यक वृहत्कृत्यादिक ग्रंथने विषे एनो अत्यंत विस्तार छे त्यांथी विशेषे जोवुं, इहां संक्षेपथी कह्यो छे. तेमांहे जे अनाजोगे (वित्ररिअं के०) विपरीतपणे (च के०) वली (जं के०) जे (इह के०) ए भाष्यमांहे (मए के०) महाराथी कहेवाणुं होय (तं के०) तेने वली (अणजिनिवेसी के०) अकदाग्रही एटले हठवादरहित एवा अने (अमछरिणो के०) मत्सरपणाना परिणामे रहित. गुणना रागी एवा जे (गीयत्था के०) गीतार्थ एटले गीतना अर्थ तेना जाण अर्थात् सूत्रार्थना जाण तथा निश्चय व्यवहारने विषे कुशल होय ते (सोहंतु के०) शोधजो, अर्थात् शुद्ध करजो. ए ४९२ बोले करी श्रीगुरुने वांदणां देवानो विधि कह्यो ॥

गुरुवंदनभाष्यार्थं, विवृण्वता यन्मयार्जितं सुकृतम्, सज्ज्ञानविमलविजयी, तेनास्तु सदा सुदृग् लोकः इतिश्री गुरुवंदनक नाष्य अर्थ सहित संपूर्ण॥३॥

हवे एवा गुणवंत गुरुप्रत्ये वांदणां देइने तेमना मुखथी यथाशक्तिये पच्चरकाण लेवुं, केमके 'ज्ञानस्य फलं विरतिः' एवुं वचन छे. वली आगम मध्ये कह्युं छे के, "पच्चरकाणेणं ज्ञंते जीवे किं जणइ? पच्चरकाणेण य आसवदाराइं रुंधेइत्ति" एटले 'हे भगवंत! पच्चरकाणवडे जीवने शुं प्राप्त थाय? उत्तर पच्चरकाणवडे आश्रवना द्वारो रोकाय ए प्रकारे.' तेमाटे पच्चरकाण करवानो महोटो लाज्ञ छे. ते पच्चरकाण शुं? अने ते केटला प्रकारनां पच्चरकाणो छे? इत्यादिक जाणवा माटे त्रीजुं पच्चरकाण ज्ञाष्य कहे छे.





श्रीपच्चख्खाणभाष्यप्रारंभः

तिहां प्रथम पच्चक्खाणनां नव द्वार एक
गाथायें करी कहे ठे.

दस पच्चक्खाण चउविहि, आहार दुगी-
सगार अडुत्ता ॥ दस विगई तीस विगइ-गय
डुहभंगा ठ सुद्धि फलं ॥ १ ॥

अर्थ-प्रथम (दसपच्चक्खाण के०) प-
च्चक्खाणना दश भेद छे, तेनुं द्वार कहेशे. बीजुं
पच्चक्खाण करवाने विषे पाठ विशेषरूप (च-
उविहि के०) चार प्रकारनो विधि ठे तेनुं द्वार
कहेशे. त्रीजुं चार प्रकारना (आहार के०)
आहारना स्वरूपनुं द्वार कहेशे, चोथुं पच्च-
क्खाणमां (अडुत्ता के०) अढिदाः एटले
बीजी वारनां आग उच्चरयां अर्थात् एकवार

कह्यां तेनां ते फरी जुदां जुदां पच्चक्खाणमां आवे, ते न लेवां एवा (दुवीसगार के०) बावीश आगारनुं द्वार कहेशे, पांचमुं (दस-विगइ के०) दश विकृति एटले दश विगयनी संख्यानुं द्वार कहेशे, छठ्ठुं (तीसविगईगय के०) त्रीश विकृतिगत एटले छ मूल विगयना त्रीश निवीयातां थाय तेनी संख्यानुं द्वार कहेशे, सातमुं एक मूलगुण पच्चक्खाण तथा बीजुं उत्तरगुण पच्चक्खाण एम (दुद्-भंगा के०) बे प्रकारना भांगा पच्चक्खाणना थाय, तेनुं द्वार कहेशे. आठमुं पच्चक्खाणनी (छ सुद्धि के०) छ शुद्धिनुं स्वरूप निश्चयथी कहेवुं तेनुं द्वार कहेशे, नवमुं पच्चक्खाण कर्याथी इहलोक तथा परलोक भली बे ठेकाणे (फलं के०) फल थाय तेनुं द्वार कहेशे ॥ १ ॥ ए मूल नवद्वारनां नाम कह्यां. एनां उत्तरद्वार अहीं विवर्यां नथी, पण ग्रंथांतरे नेवुं कह्यां छे, अने अहीं पण सरवालो आपतां

नेवुं थाय छे, ते आगळ विस्तारे कहेशे.

इहां प्रथम पच्चरकाण शब्दनो अर्थ करे छे. तिहां एक प्रति, बीजुं आ, अने त्रीजुं आख्यान, ए त्रण पद मळीने प्रत्याख्यान शब्द थयो छे, तेमां अविरतिपणानां स्वरूपप्रत्ये प्रति एटले प्रतिकूलपणे करी आ एटले आगार मर्यादाकरणस्वरूपे करी आख्यान एटले कहेवुं कथन करवुं ते छे जेने विषे, तेने प्रत्याख्यान कहिए.

अथवा प्रति एटले आत्मस्वरूप प्रत्ये आ एटले अभिव्यापीने करण एटले करवुं एटले अनाशंसारूप गुण आत्माने उपजे एम करे, तेनुं जे आख्यान एटले कथनरूप ते छे जेने विषे तेने प्रत्याख्यान कहीये.

अथवा (प्रति के०) परलोके (आ के०) क्रियायोगार्थे शुभाशुभ फल कथनरूप जेने विषे छे, तेने प्रत्याख्यान कहीये. एम घणां व्याख्यान छे.

ते प्रत्याख्यान एक मूलगुणरूप अने बीजुं उत्तरगुणरूप एवा बे भेदे छे. तेमां मूलगुणनुं पच्चक्खाण यतिने पंचमहाव्रतादि रूप छे अने उत्तरगुण प्रत्याख्यान तो यतिने पिंडविशुध्धादिक छे तथा श्रावकने मूलगुण तो पांच अणुव्रतादिकनुं छे अने उत्तरगुण ते शिक्षाव्रतादिकनुं छे. तथा सामान्य प्रकारे जे अविरतिपणानुं प्रतिपक्ष ते सर्व पच्चक्खाण कहीये.

हवे प्रतिदिन उपयोगीपणा माटे उत्तरगुण प्रत्याख्यान दश प्रकारे होय, ते आ ग्रंथना प्रथम द्वारना भेदरूप कहे छे.

अणागय-मइक्कंतं, कोडीसहियं नियंटि अणगारं॥ सागार निरवसेसं, परिमाणकडं सके अद्धा ॥ २ ॥

अर्थ–प्रथम जे कारण विशेषे आगलथी करे पण ते दिवसे न करी शके ते (अणागयं के०) अनागत पच्चक्खाण ते पर्युषणादिक पर्व आव्याथी पहेलांज एवुं विचारे जे गुरु, ग्लान,

शिष्य अने तपस्वी प्रमुखनुं वेयावच्च महारे करवुं पडशे, तेवारे व्याकुलताने लीधे महाराथी अष्टम्यादिक तपश्चर्या थइ शकशे नही, तो मने लाभनी हानि थशे; माटे ते पर्व आव्याना पहेलांज गुरुपासे पच्चरकाण लइने तप करे ते अनागत नावी पच्चरकाण जाणवुं.

बीजुं (अइक्कंतं के०) अतिक्रान्त पच्चरकाण ते पूर्वोक्त रीते पर्युषणादिक पर्व अतिक्रम्या पछी तेहिज कार्यादिकने हेतुये जे पाछलथी अष्टम्यादिक तप गुरुपासे पच्चरकाण लइने करे, तेने अतिक्रांत--अतीत पच्चरकाण कहीये.

श्रीजुं (कोडीसहियं के०) कोटिसहित पच्चरकाण ते प्रभाते उपवास प्रमुख व्रत करीने वली बीजा दिवसना प्रभात समये पण तेहिज उपवासादिकनुं पच्चरकाण करे, एम छठ्ठादिकनी पण कोटि एटले संधि मेळवे एटले छठ्ठादि एक प्रच्चरकाण पूर्ण थयानी वखते बीजुं पच्चरकाण पचरके. एवा कोटिक्रमे जे तप करवुं, ते कोटि-

सहित तप अथवा नीवी, एकाशनादिकने विषे पचरकाण पारया पहेलां आंबिलादिक करवुं ते, एटले एकनो अंत अने बीजा पच्चरकाणनी आदि ते कोटिसहित पच्चरकाण जाणवुं.

चोथुं (नियंटि के०) नियंत्रित तप ते पुष्ट नीरोगी तथा ग्लानपणे होय तो पण एवुं चिंतवे जे अमुक दिवसे महारे अमुक छठ अठमादिक तप करवुं. पछी गमे तेवुं कारण उपजे तो पण ते निर्धारेला दिवसे ते तप अवश्य करे, पण मूके नही. एम नियतकाले ते पच्चरकाण चौदपूर्वी दशपूर्वी, जिनकल्पीने विषे प्रथम वज्रऋषभनाराच संहनने विषे हतुं. हमणां व्युछिन्न थयुं छे. थिविर पण ते वेलाये ते तप करता हता, परंतु हमणा ते पच्चरकाण नथी. ए नियंत्रित पच्चरकाण जाणवुं.

पांचमुं (अणगारं के०) अनागार तप ते "अन्नत्थणाभोगेणं" तथा "सहसागारेणं" ए बे आगार तो सर्वत्र होयज छे, परंतु महत्तरा-

गारादिक आगार जे पच्चरकाणने विषे न होय, ते आगार रहित पच्चरकाण कहीये. ए पण पहेला संघयणनी साथे व्युछेद थयुं.

छठुं (सागार के०) आगारसहित ते म-हत्तरागारादि आगारसहित पच्चरकाण करवुं, ते आगार सहित पच्चरकाण जाणवुं.

सातमुं (निरवसेसं के०) निरवशेष तप ते समस्त अशनादिक चार आहार वस्तु अने अनाहार वस्तु प्रमुख सर्वनुं पच्चरकाण करीये, चउविहार प्रमुख करीये, अनशन करिये ते नि-रवशेष पच्चरकाण जाणवुं.

आठमुं (परिमाणकडं के०) परिमाण-कृत तप पच्चरकाण ते दत्तीनी संख्या करे तथा कवलनी संख्या करे तथा घरनी संख्या करे, एटले दत्ती (जे वखते आहार वहोरावाय ते कडछी वगेरे) नुं परिमाण, तेमज कोलीयानुं परिमाण तथा घरनुं परिमाण जे भिक्षादिके करवुं, अथवा मग अडद प्रमुख द्रव्यादिके जे

भिक्षानो परित्याग ते सर्व परिमाणकृत पच्च-क्खाण जाणवुं.

नवमुं (सके के०) सांकेतिक पच्चक्खाण ते इहां (केत के०) एह तेणे करी जे सहित वर्त्ते तेने गृहस्थ कहीये, ते संबंधी प्रायः ए पच्चक्खाण गृहस्थने होय अथवा (संकेत के०) चिन्ह जे अंगुष्ठादिक तेणे करी होय ते संकेत कहेवाय एटले कोइ एक श्रावक पोरिसी आ-दिक पच्चक्खाण करीने बाहेर कोइ कामे अथ-वा क्षेत्रादिके गयो होय तिहां पोरिसीनो काल पूर्ण थयो अथवा घरमांज बेठो छे अने पोरि-सीनो काल पूर्ण थयो छे, परंतु भोजन सामग्री तैयार थइ नथी ते वखत विचार करे, जे ए-टलो काल वचमां महारो अपच्चक्खाणपणे रहे-शे, ते श्रावकने योग्य नथी, एम चिंतवी पहेलुं अंगुठसहियं पच्चक्खामि एटले जिहांसुधी मु-ठीमां अंगुठो राखुं त्यांसुधी महारे पच्चक्खाण-नी सीमा छे; एमज बीजुं मुठसहियं पच्चक्खा-

मि एटले मुठी बांधी राखुं तिहां सुधी; त्रिजुं गंठसहियं पच्चरकामि एटले गांठ बांधी राखुं तिहां सुधी; चोथुं घरसहिअं पच्चरकामि एटले घर जाउं त्यां सूधी; पांचमुं प्रस्वेदसहियं पच्चरकामि ते ज्यां सुधी अंगना परसेवानां बिंदु निकले, त्यां सुधी; छठुं उस्सासससहियं पच्चरकामि एटले श्वासोश्वास लउं (जीवुं) त्यां सुधी; सातमुं थिबुकसहियं पच्चरकामि एटले स्तिबुक ते ज्यां सुधी पाणीनां बिंदूआ भाजनादिके तथा करादिक सूके तिहां पर्यंत जाणवुं; आठमुं जोइक्कसहियं पच्चरकामि एटले ज्योतिष्क जे दीवा प्रमुखनी ज्योति रहे तिहां सुधी मारे पच्चरकाणनी सीमा छे एम संकेत करे. ए आठ प्रकारे नवमुं सांकेतिक पच्चरकाण कहेवाय छे. जे माटे कह्युं छे के-॥ अंगुठ मुठि गंठी, घर सेउ उस्सास थिबुग जोइक्को ॥ पच्चरकाण विचाले, किच्च मणन्निग्गहे सुवियं ॥ १ ॥ तथा कोइ पोरिसी आदि पच्चरकाण

न करे अने केवल अभिग्रहज करे तो गांठ प्रमुख न छोडे त्यां लगे पच्चरकाण तेने थाय, तेथी ए पच्चरकाण जेम घोजा पच्चरकाणोनी धचमा थाय छे, तेम अभिग्रहने विषे पण थाय छे. तथा साधुने पण कोइक स्थानके ज्यां सुधी मंगल्यादिके गुर्वादिक न आव्या होय त्यां लगे अथवा सागारिकादिकनुं कांइ कारण होय, तेवारे पण ए अभिग्रह संकेत पच्चरकाण थाय.

दशमुं (अद्धा के०) अद्धा ते काल, मुहूर्त पौरुष्यादिक प्रमाणने पण उपचारथी जाणी लेवो. ते काल पच्चरकाण जाणवुं ॥ २ ॥

हवे ए दश पच्चरकाण कह्यां, तेमां छेहलुं अद्धा पच्चरकाण कह्युं, तेना दश भेद छे, ते एक गाथाये करी कहे छे.

नवकारसहिअ पोरिसि, पुरिमड्ढ-गासणे-गठाणे अ ॥ आयंबिल अभत्तठे, चरिमे अ अभिग्गहे विगई ॥ ३ ॥ दारं ॥ १ ॥

दिक अभिग्रह करे ते. तथा दशमुं (विगई के०) विगई निविगइनुं पच्चरकाण जाणवुं. ए दशे पच्चरकाणोने कालनी मुख्यता छे, माटे अद्धा पच्चरकाण कहीये ॥ ३ ॥

इहां शिष्य पूछे छे के पोरिसी प्रमुखने काल पच्चरकाण कह्युं ते खरुं पण नोकारसीनुं कालमान न कह्युं माटे नोकारसी जे छे, ते अभिग्रह पच्चरकाण कहेवाय पण काल पच्च- रकाण थइ शके नहीं ?

त्यां गुरु उत्तर कहे छे. नवकारसहियं एमां सहित शब्द श्राव्यो माटे सहित शब्दे कालप्रमाण जाणवुं, अने अल्प आगार छे माटे अल्प काल जाणवो.

तेवारे शिष्य पूछे छे के पोरिसी तो एक प्रहर काल प्रमाण छे माटे ए नवकारसीने विषे मुहूर्त इत्यादिक काल केम न लीधो ? केम के मुहूर्त इत्यादिक काल पण पोरिसीथी अल्प छे माटे ए घमींनुंज मान शा

दिक अभिग्रह करे ते. तथा दशमुं (विगई के०) विगई निविगइनुं पच्चक्खाण जाणवुं. ए दशे पच्चक्खाणोने कालनी मुख्यता छे, माटे अद्धा पच्चक्खाण कहीये ॥ ३ ॥

इहां शिष्य पूछे छे के पोरिसी प्रमुखने काल पच्चक्खाण कह्युं ते खरुं पण नोकारसीनुं कालमान न कह्युं माटे नोकारसी जे छे, ते अभिग्रह पच्चक्खाण कहेवाय पण काल पच्चक्खाण थइ शके नहीं ?

त्यां गुरु उत्तर कहे छे. नवकारसहियं एमां सहित शब्द आव्यो माटे सहित शब्दे कालप्रमाण जाणवुं, अने अल्प आगार छे माटे अल्प काल जाणवो.

तेवारे शिष्य पूछे छे के पोरिसी तो एक प्रहर काल प्रमाण छे माटे ए नवकारसीने विषे मुहूर्त्त इत्यादिक काल केम न लीधो ? केम के मुहूर्त्त इत्यादिक काल पण पोरिसीथी अल्प छे माटे ये घणीनुंज मान

वास्ते लीधुं ?

गुरु उत्तर कहे छे, के हे शिष्य ! तें कयुं ते सत्य छे, परंतु सर्वथी स्तोक काल अद्धापच्चरकाणनो एक मुहूर्त्तज छे, मुहूर्त्तद्धा अद्धा इति वचनात् तेमाटे एनुं एक मुहूर्त्तज कालमान जाणवुं.

हवे ए नवकारसी पच्चरकाण, सूर्योदय पहेलांज करवुं अने नमस्कारे करी पारवुं, अन्यथा भंग लागे, नोकारसी करया पछी आगल पोरिसीआदिक थाय, परंतु ते विना न थाय अने यद्यपि नोकारसी विना पोरिसीआदिक करे तो काल संकेत रूप जाणवो, तथा वली वृद्ध संप्रदाये एम कहे छे जे नोकारसी पच्चरकाण जे छे, ते रात्रे चउविहारादिक पच्चरकाणना तीरण रूप छे एटले शिक्षा रूप छे. इत्यादिक घणो विचार छे ते प्रवचनसारोद्धारग्रंथनी वृत्तियी जाणवो. अहींयां विशेषे करी लख्यो नथी.

हवे पुरुष प्रमाण छाया जेहने विषे थाय ते पोरिसी जाणवी " आसाढमासे डुपया " इत्यादिक पाठ श्री उत्तराध्ययनादि सूत्रथी जाणवो.

ए रीते नोकारसी, पोरिसी, दिननुं पूर्वार्द्ध ते पुरिमड्ड, एकासण, एकलठाणुं, आयंबिल, उपवास, दिवसचरिम, अभिग्रह अने विगइ एवं दश पच्चख्खाणनां नामनुं ए प्रथमद्वार थयुं, उत्तर भेद दश थया ॥ ३ ॥

हवे बीजे द्वार पच्चख्खाण करवानो पाठरुप विधि चार प्रकारे कहे छे.

उग्गए सूरे अ नमो, पोरिसि पच्चक्ख उग्गए सूरे ॥ सूरे उग्गए पुरिमं, अभत्तहं पच्च-क्खाइत्ति ॥ ४ ॥

अर्थ—प्रथम नवकारसीनुं पच्चख्खाण उच्चरीये तेवारे (उग्गए सूरे के०) उग्गए सूरे (अ के०) वली (नमो के०) नमुक्कारस-हिअं पच्चख्खाइ चउविहंपि आहारं असणं

पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं वोसिरई ए उच्चार करवानो प्रथम विधि जाणवो.

बीजो (पोरिसी के०) पोरिसीनुं (पच्च-क्खं के०) पच्चख्वाण उच्चरीयें, तेवारे (उग्गए सूरे के०) उग्गए सूरे पोरिसियं पच्चख्खाइ, उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं ए उच्चार करवानो बीजो विधि जाणवो.

त्रीजो पूरिमार्द्धनुं पच्चख्खाण उच्चरीयें तेवारे (सूरे उग्गए पुरिमं के०) सूरे उग्गए पुरिमड्ढ पच्चख्खाइ चउविहंपि आहारं ए उच्चार करवानो त्रीजो विधि.

चोथो अन्नत्कार्थ एटले उपवासनुं पच्च-ख्खाण उच्चरीये तेवारें (अन्नत्तठं पच्चख्खाइ के०) अभत्तठं पच्चख्खाइ तिविहंपि आहारं चउविहंपि आहारं (इति के०) एम उच्चार करीये, ए चोथो विधि जाणवो.

अहीं पुरिमार्द्ध ते दिवसनुं पूर्वार्द्ध समजवुं एटले नोकारसी आदि पच्चरकाण जो पूर्वे सूर्योदयथी न कर्युं होय तो पण पुरिमड्ढ थाय, एम उपवासादिक पण थाय. तथा सूर्योदयथी मांडीने यावत् आगला दिवसनो सूर्योदय थाय, त्यां सुधी अन्नकार्थं एटले उपवासनुं पच्चरकाण कहेवाय छे, एम जणाववाने तथा रात्रिनो चउविहार कर्यो होय अने बीजे दिवसे एक उपवासनुं पच्चरकाण करे, तेहने चोथभक्तनुं पच्चरकाण थाय. तथा रात्रिये चउविहारनुं पच्चरकाण न कर्युं होय अने बीजे दिने उपवास करे, तेने अभक्तार्थनुं पच्चरकाण कहीये, पण चोथभक्तनुं पच्चरकाण न कहीये. अने उभयकोटि एकासणादिके तो चोथभक्तनुं पच्चरकाण होयज. इत्यादिक जणाववा माटे चारे विधि देखाड्या ॥ ४ ॥

हवे बीजा पण चार विधि छे, ते देखाडे छे.

भणइ गुरू सीसो पुण, पच्चरकामित्ति एव

वोसिरई ॥ उवओगित्थ पमाणं, न पमाणं वंजणच्छलणा ॥ ९ ॥

अर्थ–प्रथम (गुरू के०) गुरु जे पच्चक्काणनो करावनार होय, ते पच्चक्काइ एम (भणइ के०) भणे, एटले कहे; ए प्रथम विधि जाणवो. (पुण के०) वली (बीओ के०) शिष्य जे पच्चक्काणनो करनार होय ते (पच्चक्कामि के०) पच्चक्कामि (इति के०) एम कहे. ए बीजो विधि जाणवो. अने (एव के०) एम संपूर्ण पच्चक्काणे गुरु (वोसिरई के०) वोसिरई कहे. ए त्रीजो विधि जाणवो अने शिष्य जे पच्चक्काणनो करनार होय ते वोसिरामि कहे, ए चोथो विधि जाणवो. ए चार विधि कह्या.

(इत्थ के०) इहां पच्चक्काणने विषे करतां तथा करावतां थकां पोताना मननो जे (उवओग के०) उपयोग एटले मननी धारणा छे तेज (पमाणं के०) प्रमाण छे एटले मनमांहे

जे पच्चरकाण धार्यु होय तेज प्रमाण ने परंतु (वंजण के०) अक्षर तेनी (छलणा के०) छलना एटले स्खलना अर्थात् अनाभोगने लीधे धारेला तिविहार पच्चरखाणथी बीजा कोइ चउविहार पच्चख्खाणनाज पाठ उच्चरीये, ते वंजण छलना जाणवी ते (न पमाणं के०) प्रमाण नथी ॥ ५ ॥

हवे तेहीज उच्चारनो विशेष विधि कहे छे.

पढमे गणे तेरस, बीए तिन्निउ तिगाइ तइअंमि ॥ पाणस्स चउअंमि, देसवगासाइ पंचमए ॥ ६ ॥

अर्थ–हवे एनां पांच स्थानक छे तेमा (पढमे गणे के०) प्रथमस्थानकने विषे कालपचख्खाणरूप नोकारसी प्रमुख (तेरस के०) तेर पचख्खाण जाणवां, तेनां नाम आगली गाथाये कहेशे, तथा (बीए के०) बीजा स्थानकने विषे विगइ, नीवी अने आयंबिल ए (तिन्निउ के०) त्रण पच्चरकाण जाणवां. तथा

(तइअंमि के०) त्रीजा स्थानकने विषे (तिगाइ के०) त्रिकादिक एटले एकासण, बीयासण ने एकलठाणादिक, ए त्रण पच्चरकाण जाणवां, तथा (चउत्थमि के०) चोथा स्थानकने विषे (पाणस्स के०) पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा इत्यादि अचित्त पाणीनां ठ आगार जाणवां, तथा (पंचमए के०) पांचमा स्थानकने विषे (देसवगासाइ के०) देशावकाशिकादि पच्चरकाण जाणवां ॥ ६ ॥

ए पांचस्थानक मांहेला प्रथमादि स्थानकना पृथक् पृथक् जेद कहे ठे.

नमु पोरिसीसह्वा, पुरिमवह्न अंगुठमाइ अम तेर ॥ निवि विगइ अंबिल तिय, तिय छ इगासण एगठाणाई ॥ ७ ॥

अर्थ—प्रथम स्थानके तेर भेदनां नाम कहे ठे. पहेलो (नमु के०) नमुक्कारसी, बीजो (पोरिसी के०) पोरिसि, त्रीजो (सह्वा के०) सार्द्धपोरिसि ते दोढ पहोर पर्यंत, चोथो (पु-

रिम के०) पुरिमड्ढ ने बे पहोर पर्यंत, पांचमो (अ-वड्ढ के०) अवड्ढ ते त्रण पहोरनुं पच्चख्खाण. ए पांचनी साथे पूर्वोक्त (अंगुठमाइ के०) अंगुठसहितादिक (अड के०) आठ नेद मेळवीये तेवारे (तेर थे) तेर नेद थाय. तथा बीजा स्थानके एक (निवि के०) निवी, बीजो (विगइ के०) विगइ अने त्रीजो (अंबिल के०) आंबिल ए (तिय के०) त्रण पच्चख्खा-ण जाणवां. तथा त्रीजा स्थानकने विषे एक (डु के०) बेआसण, बीजुं (इगासण के०) एकासणुं अने त्रीजुं (एगठाणाइ के०) एकल ठाणादिक ए (तिय के०) त्रण पच्चख्खाण जाणवा.

हवे वली प्रकारांतरे उपवासादिक विधिये उपवासने दिवसे पांच स्थानक केवी रीते करवां ? ते कहे ठे.

पढमंमि चउठाई, तेरस बीयंमि तइय पा-णस्स ॥ देसवगासं तुरिए, चरिमे जह संजवं नेयं ॥ ७ ॥

अर्थ-(पढमंमि के०) पहेले स्थानके (चउत्थाई के०) चोथादिक एटले एक उपवासथी मांडीने छठ्ठ इत्यादि यावत् चोत्रीश भक्त पर्यंत पच्चरकाण करवां, तथा (बीयंमि के०) बीजा स्थानकने विषे नोकारसी, पोरिसी, सार्द्धपोरिसी, पुरिमड्ढ, अवड्ढ अने गंठसहियं, मुठसहियं, अंगुठसहियं, घरसहियं, प्रस्वेदसहियं, श्वासोश्वाससहियं, जलबिंदुसहियं, दीपसहियं, ए (तेरस के०) तेर पच्चरकाण मांहेलुं हरकोइ पच्चरकाण करवुं, तथा (तइये के०) त्रीजा स्थानकने विषे (पाणस्स के०) पाणीना छ आगारनुं पच्चरकाण करवुं तथा (तुरिए के०) चोथा स्थानकने विषे (देसवगासं के०) देसावगासिकनुं पच्चरकाण करवुं तथा पांचमा स्थानकने विषे (चरिमे के०) छेहेडानुं पच्चरकाण जे दिवसचरिमं एटले रात्रिनुं दुविहार, तिविहार, चउविहार पाणहार प्रमुखनुं पच्चरकाण ते (जहसंभवं के०) यथा-

संभवे जे पोताने करवानी इछा होय ते यथा-शक्तिये करवुं तथा अचरिमादि जे छे, ते पण यथासंभवे करवुं. एम (नेयं के०) जाणवुं. ए पांच मांहेलुं जे कोइ करवुं ते पच्चरकाण कहीये ॥ ८ ॥

वली ए पच्चरकाण करवाना पाठनोज विशेष कहे छे.

तह मज्झ पच्चरकाणे,—सु न पिहु सूरुग्गयाइ वोसिरई ॥ करणविहीउ न भन्नइ, जहावसी-याइ बियछंदे ॥ ए ॥

अर्थ—(तह के०) तथा ए पद विशेष देखाड वावाची छे (मज्झपच्चरकाणेसु के०) मध्यनां ये स्थानक जे विगइ, नीवी अने आयंबिलनुं तथा एकासण, बियासण अने एकलठाणानुं ए येनां छ पच्चरकाणोने विषे पृथग् पृथग् पच्च-रकाणे (सुरुग्गयाइ के०) सूरे उग्गए विग-इउं पच्चरकाइ इत्यादिक पाठ (नपिहु के०) वारंवार न कहेवो, एटले प्रथम जे पच्चरकाण

[मांटे, तिहां सूरे उग्गए कहेवो, परंतु पच्चरका-
ण पच्चरकाण प्रत्ये न कहेवो, तेमज (वोसिरइ
के०) वोसिरइ तथा वोसिरामि ए पाठ पण
अंतने विषे एक वार कहीये, पण वारंवार
न कहीये ए (करणविहीउ के०) करवानो
विधि एटले पूर्वाचार्य परंपराये एमज कहेता
आव्या छे करवानो एहज विधि छे. माटे म-
होटा पुरुष पण (नभन्नइ के०) नथी जण-
ता. (जहा के०) जेम (आवसीयाइ के०)
आवस्सियाए ए पाठ (विअछंदे के०) बीजा
वांदणाने विषे कहेता नथी, ए पण पूर्वाचा-
र्यनी परंपरा छे तेम इहां पण जाणी लेवुं ॥ए॥

तह तिविह-पच्चरकाणे, ज्ञंति अ पाणग
छ आगारा ॥ डुविहाहारे अचित्त,-जोइणो त-
ह य फासुजले ॥ १० ॥

अर्थ-(तह के०) तेमज वली (तिवि-
हपच्चरकाणे के०) तिविहारना पच्चरकाणने
विषे तथा एकासणादि पच्चरकाणे प्रासुक

निर्जीव जलपान संबंधी (पाणग के०) पा-नवः एटले पाणीना (छ आगारा के०) छ आगार (जणंति स्र के०) जणे छे-कहे छे. तेनां नाम कहे छे. पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अछेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा. ए छ आगारनां नाम जाणवां. तथा (दुविहाहारे के०) द्विविधाहार पच्चक्खाणने विषे (अचित्तभोइणो के०) अचित्तभोजी होय अर्थात् सचित्तभोज्य त्याग करे तेने तथा (तह य के०) तेमज जे एकासणा विया-सणाविना (फासुजले के०) फासु पाणी पीतो होय एवा सचित्तपरिहारीने पण पच्चक्खाणने विषे पाणीना छ आगार कहेवा. ए प्रथम विकल्प.

तथा अचित्तजोजी होय अने फासु नि-र्जीव पाणी पीतो न होय तेने पाणस्सना आगार न कहेवा. ए बीजो विकल्प. तथा जे अचित्तजोजी होय पण फासु पाणी पीवे छे तो

तेने पाणस्सना आगार ठ कहेवा. ए त्रीजो विकल्प. तथा सचित्तभोजी ठे अने फासु पाणी पीतो नथी तो तेने पाणस्सना ठ आगार न कहेवा. तथा सचित्तभोजी छे अने केवल खादिम, अशन अने स्वादिम रूप त्रण आहारना पच्चरकाणने उद्देशे रात्रिप्रमुखे तिविहार करे ठे, तिहां पण पाणस्सना आगार न कहेवा. ए चोथो विकल्प. ए चार विकल्प आगारना कह्या, अहीं तथा शब्दथी विशेष जाणवुं ॥ १० ॥

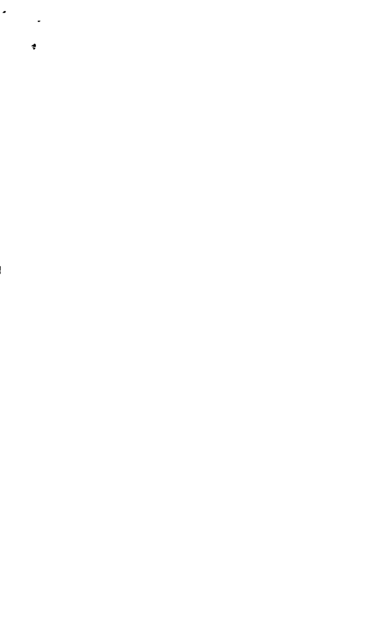
इत्तुच्चिय खवणंबिल,–निवियाइसु फासुयं चिय जलं तु॥ सङ्घावि पियंति तहा, पच्चरकंति य तिहाहारं ॥ ११ ॥

अर्थ–(इत्तुच्चिय के०) एटलाज माटे अचित्तभोजी होय तेने (खवण के०) क्षपण एटले उपवासने विषे (अंबिल के०) आयंबिलने विषे, तथा (निवियाइसु के) निवि आदिक एटले निवि एकासणादिक तिविहार

पच्चरकाण तथा आदिशब्दथी सचित्त परिहारने विषे (चिय के०) निश्चयथकी (फासुयं के०) प्रासुक अचित्त (जलं के०) जल ते (तु के०) जेम यति प्रासुक निर्जीव पाणी पीये (तह। के०) तेनी पेरे (सड्ढावि के०) श्रावक पण प्रासुक पाणी (पियंति के०) पीये तेने पण पहिज आगार कहीये, परंतु ते (य के०) वली (तिहाहारं के०) तिविहार पच्चरकाण(पच्चरकंति के०)पच्चरके.सचित्तभोजीने पण उपवास, आयंबिल, निविनुं पच्चरकाण तिविहारे होय ते उष्ण पाणी पीये अने एकासणादि पच्चरकाणनो नियम नथी. एमां तो दुविहार, तिविहार, चउविहार यथासंभवे होय ॥ ११ ॥

चउहाहारं तु नमो, रत्तिंपि मुणीण सेस तिहचउहा ॥ निसि पोरिसि पुरिमेगा,-सणाइ सड्ढाण दुतिचउहा ॥ १२ ॥ २ ॥

अर्थ-(नमो के०) नोकारसीनुं पच्चरकाण



एकासणादि तिविहार पचख्खाणीने रात्रे पाण-हार होय अने दुविहार पच्चरकाणे एकासणा-दिकने विषे रात्रे चउविहार होय तथा केटले-एक स्थानके श्रावकने पण पोरिसी तिविहारे चोली वे. अने डुविहार पच्चख्खाणे रात्रे तिवि-हार होय परंतु ते कारणिक जाणवुं, व्यवहारे समजवुं नही, इत्यादि बीजी विशेष वात ग्रंथां-तरथी जाणवी, एटले चार विधिनुं बीजुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल चौद थया ॥ १२ ॥ २ ॥

हवे चार प्रकारना आहारनुं त्रीजुं द्वार कहे छे.

खुहपसमखमेगागी, आहारिव एइ देइ वा सायं ॥ खुहिओ वि खिवइ कुठे, जं पंक-च्चम तमाहारो ॥ १३ ॥

अर्थ–प्रथम सामान्य प्रकारे आहारनुं लक्षण कहे वे. जे (खुहपसम के०) क्षुधाने उपशमाववाने अर्थे (खम के०) समर्थ होय एवो जे (एगागी के०) एकाकी द्रव्य होय

नाखे तेने अशन कहीये, तेने विषे (मुग्ग के०) मगादि सर्व कठोल जाति जाणवी. तथा (ठेय-ण के०) ठेदन ते चावल–भात प्रमुख सर्व ठेदन जाति जाणवी. तथा (सत्तु के०) साथु-ठे (मंरु के०) मांका, रोटली, पकान, रोटला, पूढा प्रमुख. (पय के०) दूध, दही, घृत, तेल. माखण विगयादि प्रमुख (खज्ज के०) खाजां खीर, सुकुमारिकाखापसी, दहींथरां, प्रमुख पकान. (रब्ब के०) रावकी घेंस प्रमुख (कंदाई के०) कंदादिक ते सूरणकंदादिक जा-णवां तेमज तुलसी नागरवल्यादि पत्र विना सर्व जातिनां फल फूल पत्र सर्वकंद सर्व वनस्पतिविकार शाकादि कूल्लरी चूरिम पापडि-कादि सर्व वस्तुनी जाति अशनमांहे आवे, तथा लवण, हिंग, सूआ दाणा, अजमो, वरीयाली, धा-णादिक तल्यां एक वेसण पण अशनमां आवे, इत्यादि सर्व अशनजाति समजवी.

हवे बीजो (पाणे के०) पानने विषे, तिहां

निवाई ॥ १९ ॥ दारं ॥ ३ ॥

अर्थ—हवे त्रीजो खादिम आहार कहे छे. (ख के०) आकाश एटले मुखनुं विवर कहिये, तेने पूरवाने सगारेक भूख मात्र भांजे, पण अन्नादिकनी परे तृप्ति न करे, परंतु कांइ एक अशन समान थाय ते खादिम वस्तु कहीये. ते (खाइमे के०) खादिमने विषे. तिहां प्रथम (भत्तोस के०) भत्तोष एटले शेकेलां धान्य चणा प्रमुख तथा अखोड सुखाशिका सर्व जाणवा, तथा आंबा केळां प्रमुख सर्व (फलाइ के०) फलादिक जाणवां, तथा फलजातिनी सुखडी मेवा सर्व केरी पाकादिकनी जातियो, गुंदपाकादिक, डाख, चारोळी प्रमुख मेवा जातिनुं सर्व पकान्न, खांड साकरादि तेना विकार जे खांड कातली प्रमुख ते सर्व खादिमने विषे लीधा कल्पे. परंतु जीतव्यवहारे प्रसिद्धपणे अशन मध्ये लेपकृत उत्तम द्रव्यमां गण्या छे, परंपराये. इत्यादिक सर्व सा-

वोसो, संचल, सेंधव, यवखार, खयरसार, कोटवकी, गोली सर्व जातिनो अशनादिमां न भले तेवी जाणवी, सर्व जातिनां दातण, तुलसीपत्र, श्रीपत्र, वारासोया, मेथी, गोमूत्रादिकना कीधा अन्नमेखादिकनी गोलीयो, चित्रो, पिंडार्थ, कोइएक तो पिंडार्थने खजुर कहे छे, परंतु ग्रंथांतरे एने जे सूरणादि कंदनां खार चूंदां करे छे तेने कहे छे. कर्पूर, कचूरो, त्रिगडु, पंच पटोल, चित्तलवण, इत्यादिक अनेक जातिना स्वादिम आहार जाणवा.

तथा (महु के०) मधु एटले मध अने (गुड के०) गोल, खांड, साकर तथा (तंबोलाई के०) तंबोलादिक ते विविध जातिनो तंबोल नागरवेलीनां पान तथा सोपारी प्रमुख ए पण स्वादिम जाणवा.

हवे अणाहार वस्तु कहे छे. जे पूर्वे कहेला चारे आहारमांहेला कोइ पण आहारमां न आवे, परंतु चउविहार उपवासे तथा

पंचकूल, खारो, फटकडी, चिमेम इत्यादिक व-स्तु सर्व अनिष्ट स्वादवान् बे, अने इछा विना जे चीज मुखमां प्रक्षेप करीयें ते सर्व अणाहार जाणवी. ए उपवासमां पण लेवी सुजे, अने आयंबिल मध्ये पाणहार पच्चरकाण करवा पछी सूजे ए आहारनुं त्रीजुं द्वार थयुं, उत्तर न्नेद अढार थया ॥ १५ ॥

हवे नवकारसी प्रमुखना आगारनी सं-ख्यानुं चोथुं द्वार कहे बे.

दो नवकार ब पोरिसि, सग पुरिमड्ढे इगा-सणे अठ ॥ सत्तेगठाणे अंबिलि, अठ पण च-उत्थि ब पाणे ॥ १६ ॥

अर्थ—जे मूलगुण उत्तरगुण रूप पच्चरका-ण राखवाने अर्थे बारी रूप होय ते आगार(छूट) जाणवा. तिहां अपवाद पदे द्रव्य, क्षेत्र, काल अने न्नावादिके विचारतां मूलगुण पच्चरकाणने विषे अन्नत्थणादिक चार आगार जाणवा. अने उत्तर गुण पच्चरकाणने विषे यथोक्त रीते आग-

च्चरकाणने विषे आठ आगार जाणवा. (चउत्थि के०) चोथजक्ते एटले उपवासना पच्चरकाणने विषे (पण के०) पांच आगार, (पाणे के०) पाणस्सना पच्चरकाणने विषे (छ के०) छ आगार जाणवा ॥ १६ ॥

चउ चरिमे चउन्निग्गहि, पण पावरणे नवठ निव्वीए ॥ आगारुक्खित्तविवेग, मुत्तु दव-विगइ-नियमिठ ॥ १७ ॥

अर्थ-(चरिमे के०) दिवसचरिमना पच्च-रकाणने विषे (चउ के०) चार आगार जाण वा, (अन्निग्गहि के०) अनिग्रहना पच्चरका-णने विषे (चउ के०) चार आगार जाणवा. (पावरणे के०) प्रावरण एटले वस्त्र मूकवाना पच्चरकाणने विषे (पण के०) पांच आगार जाणवा, (नवठ निव्वीए के०) निवीना पच्च-रकाणने विषे नव आगार पण होय अने आठ आगार पण होय, तिहां जे पिंड अने द्रव्य रूप नेहु विगइनुं पच्चरकाण करे तेहने नव

सहस्सागारेणं, त्रीजो (पछ के०) पच्छन्नकालेणं, चोथो (दिसय के०) दिसामोहेणं, पांचमो (साहु के०) साहुवयणेणं, छठो (सव के०) सवसमाहिवत्तियागारेणं ए (छ के०) छ आगार ते (पोरिसि के०) पोरिसीना पच्चरकाणने विषे जाणवा. तेमज (सढपोरिसि के०) सार्द्धपोरिसीना पच्चरकाणने विषे पण एहिज छ आगार जाणवा. तथा वली एज पोरिसीना छ आगारने एक (महत्तरा के०) महत्तरागारेणं ए आगारे करी (स के०) सहित करीये तेवारे (सत्त के०) सात आगार थाय, ते (पुरिमड्ढ के०) पुरिमड्ढ तथा अवड्ढना पच्चरकाणने विषे जाणवा ॥ १८ ॥

हवे एकासणा तथा एकलठाणाना आगार कहे छे.

अन्न सहस्सागारिय, आउंटण गुरुअ पारि मह सव ॥ एग बिआसणि अठ्ठ, सग इगठाणे आउंट विणा ॥ १९ ॥

के०) सवसमाहिवत्तियागारेणं, ए (पंच
के०) पांच आगार (खवणे के०) उपवा-
सना पच्चरकाणने विषे जाणवा. तथा एमां
अचित्त पाणी पीवे माटे (पाणि के०) पाण-
स्सना पच्चरकाणने विषे लेवेण वा, अलेवेण
वा, अछेण वा, बहुलेवेण वा, ससिथ्थेण वा, अ-
सिथ्थेणवा, ए (लेवाई के०) लेपादिक (ठ के०) ठ
आगार जाणवा, तथा एक (अन्न के०) अन-
त्थणाभोगेणं, बीजो (सह के०) सहस्सागारेणं,
त्रीजो (मह के०) महत्तरागारेणं, चोथो (सव
के०) सव समाहिवत्तियागारेणं ए (चउ के०)
चार आगार ते (चरिम के०) दिवस चरि-
मना पच्चरकाणने विषे तथा (अंगुठाई निग्ग-
ई के०) अंगुठमुठिसहियादिक अभिग्रहना
पच्चरकाणने विषे जाणवा ॥ २१ ॥

१४	अभिग्रह सेकेन.	४	अण०, सह०, मह०, सव्व० ॥
१५	दिवसचरिमं.	४	" " " "
१६	भवचरिमं.	४	" " " "
१७	देसावगासिक.	४	" " " "
१८	समकितना.	६	रायाο,गणाο,बलाο,देवाο,गुरुनि., विचि०॥

इहां उक्खित्तविवेगेणं ए जे आगार छे, ते आगार पिंडविगइ आश्रयी छे, ते पिंम विगय जणाववा माटे विगयना जेद कही देखाडे छे. परंतु विगयना ज्ञेदो कहेवानुं द्वार तो आगल आवशे हाल अहींयां तो मात्र पिंम विगय उं-खलाववाने निमित्तेज कहे छे.

दुद्ध महु मज्ज तिल्लं, चउरो दवविगई च-उर पिंमदवा ॥ घय गुल दहियं पिसियं, मक्क-ण पक्कन्न दो पिंमा ॥ ३२ ॥

अर्थ–एक (दुद्ध के०) दुग्ध, बीजो (महुं के०) मधु त्रीजो (मज्ज के०) मद्य एटले मदिरा अने चोथो (तिल्लं के०) तेल ए (चउरो के०) चार (दवविगई के०) द्रव्य विगय छे. ए चार ते ढीलुं विगय होय, रस रूप



उपद्रवोना कारणे अन्यस्थानके जइ जमतां पण पच्चरकाण भंग न थाय ॥ २५ ॥

आउंटण-मंगाणं, गुरु पाहुणसाहु गुरुअ-ब्भुठाणं ॥ परिठावण विहि-गहिए, जइण पाव-रण कम्पिट्टो ॥ २६ ॥

अर्थ—नवमो (अंगाणं के०) पग प्रमुख अंग तेनुं (आउंटण के०) आकुंचन एटले संकोचवुं तथा पसारवुं ते अणखमते करवुं पके, एटला माटे एने आउंटणपसारेणं आगार कह्योंपे, तेथी जमतां थकां कांइक पोतानां आसनादिक चलायमान थाय, तो पच्चरकाण भंग न थाय.

दशमो (गुरु के०) पोताना गुरु आचार्यादि आवे अथवा कोइ महोटो (पाहुणसाहु के०) प्राहुणो साधु आवे थके जमतां उठवुं पडे तो (गुरुअब्भुठाणं के०) गुरुअब्भुठाणेणं आगार थाय, एटले ते आवेला आचार्यादिक गुरुनां विनयादिक करवा माटे अभ्युत्थानादिक साच

चाटुवो प्रमुख होय ते (लेव के०) लेवाये-
येणे आगार जाणवो. एटले जोजननुं जाजन
अथवा चाटुवा प्रमुख होय ते अकल्पनीय
एवा विगय अने शाक प्रमुख अन्नादिकें खर-
डया होय, पछी ते कडछी प्रमुखने लुंछीने अ-
लेप कीधां होय, तो पण कांइक विगयादिक
अवयवना सद्भावे सहित छे; तेवा जाजनें
करी आयंबिलादिक पचरकाणवालाने जमतां
लेतां पचरकाण जंग थाय नही.

चौदमो गिहत्थसंसठेणं एटले जक्तदायक
गृहस्थसंबंधि विगयादिके वघारादिके (संसठ
के०) संसृष्ट एटले मिश्र कीधुं एवुं (कुच के०)
शाकादिक करंबादिक तथा (मंमाई के०)
मांमादिक ते लगारेक हाथे गोळ प्रमुखे चोप-
मा कीधा होय, तेने गृहस्थसंसृष्ट कहीये, ते
निर्विना पचरकाणे लेवा कल्पे तथा आयंबि-
लमां पण किंचिन्मात्र तैलादिके स्निग्ध हाथे
लगामेला एवा मंमकादिक होय ते पण यतिने

चाटुवो प्रमुख होय ते (लेव के०) लेवाले-वेणं आगार जाणवो. एटले जोजननुं जाजन अथवा चाटुवा प्रमुख होय ते अकल्पनीय एवा विगय अने शाक प्रमुख अन्नादिके खर-डया होय, पछी ते कडछी प्रमुखने लुंछीने अ-लेप कीधां होय, तो पण कांइक विगयादिक अवयवना सङ्गावे सहित छे; तेवा जाजने करी आयंबिलादिक पच्चरकाणवालाने जमतां-लेतां पचरकाण जंग थाय नही.

चौदमो गिहत्थसंसठेणं एटले जक्तदायक गृहस्थसंबंधि विगयादिके वघारादिके (संसठ के०) संसृष्ट एटले मिश्र कीधुं एवुं (कुच के०) शाकादिक करंबादिक तथा (मंडाई के०) मांडादिक ते लगारेक हाथे गोळ प्रमुखे चोप-डा कीधा होय, तेने गृहस्थसंसृष्ट कहीये, ते निविना पच्चरकाणे लेवा कल्पे तथा आयंबि-लमां पण किंचिन्मात्र तैलादिके स्निग्ध हाथे लगाड्या एवा मंडकादिक होय ते पण यतिने

लीर्हि के०) अंगुलीयें करीने (मणा के० लगारेक एटले ए जाव जे अंगुलिये घृत दिक चोपडीने मांका प्रमुख करे तेने प चमक्खिणं कहीयें. ते सर्वथा रूक्ष एवं मंडकादिक होय तेने लगारेक स्नेहवंत कुमारता उपजाववाने अर्थे लहचूड प्रमु अंगुलीये करी म्रक्षित कीधुं होय ते नीवि प चरकाणमां लेतां पच्चरकाण जंग न थाय, परं घृतादिकनी धाराये करी म्रक्षित करे, तो ले कल्पे नहीं. ए सोल आगार अशन आर्थ कह्या ॥ २७ ॥

हवे पाणस्सना छ आगारनो अर्थ कहे छे.

लेवाडं आयामा-इ इअर सोवीरमछ-मुसि पाजलं ॥ धोअण बहुल ससित्थं, उस्सेइम इअ सित्थविणा ॥२८॥ दारं ॥४॥

अर्थ–प्रथम (लेवाडं के०) लेपकृत पाणी ते कोने कहीये ? के (आयामाइ के०) आचा-म्लादि–उसामण आदिशब्द थकी आंवली त-

था डाक्नुं पाणी पण जाणवुं. एटला माटे ए आगारनुं नाम लेवेणवा कहीये.

बीजो (इश्वर के०) इतर एटले पूर्वोक्त लेप थकी उलटुं अलेपकृत पाणी लेवुं, ते माटे ए आगारनुं नाम अलेवेणं वा जाणवुं. ते (सोवीरं के०) सोवीर-कांजी धोयण आदिशब्दथी शडूल जरवाणी प्रमुख जाणवुं.

त्रीजो (अछं के०) अछ ते निर्मल पाणी (उसिणजलं के०) उष्ण पाणी एटले त्रिदंडोत्कालिक उष्ण जल अथवा बीजुं पण निर्मल पाणी नितर्युं फलादिकनुं धोयण जाणवुं, एटला माटे अछेणवा नाम कहीये.

चोथो (धोअण के०) चोखा प्रमुखना धोयण प्रमुखनुं पाणी तेने (बहुल के०) बहुलेप कहीये एटला माटे एनुं बहुलेवेणवा एवुं नाम छे. ए तंडुलधोवनादिक गंडुल पाणी जाणवुं.

पांचमो (ससित्तं के०) सीथ सहित पाणी ते (उस्सेइम के०) आटाथी खरड्या हाथनुं

लीहिं के०) अंगुलीयें करीने (मणा के०) सगारेक एटले ए जाव जे अंगुलिये घृतादिक चोपडीने मांका प्रमुख करे तेने पमुद्यमक्खिएणं कहीयें. ते सर्वथा रूक्ष एवा मंडकादिक होय तेने लगारेक स्नेहवंत सुकुमारता उपजाववाने अर्थे लहचूइ प्रमुख अंगुलीये करी म्रक्षित कीधुं होय ते नीवि पञ्चरकाणमां लेतां पच्चरकाण जंग न थाय, परंतु घृतादिकनी धाराये करी म्रक्षित करे, तो लेवुं कल्पे नहीं. ए सोल आगार अशन आश्री कह्या ॥ २७ ॥

हवे पाणस्सना ठ आगारनो अर्थ कहे छे.

लेवार्म आयामा-इ इअर सोवीरमछ-मुसिणजलं ॥ धोअण बहुल ससित्थं, उस्सेइम इअर सिच्छिणा ॥२८॥ द्वा॰ ॥४॥

अर्थ–प्रथम (लेवार्म के०) लेपकृत पाणी ते कोने कहीयें ? के (आयामाइ के०) आचाम्लादि-उंसामण आदिशब्द थकी आंबली त-

था डाकनुं पाणी पण जाणवुं. एटला माटे ए आगारनुं नाम लेवेणवा कहीये.

बीजो (इअर के०) इत्तर एटले पूर्वोक्त लेप थकी उलटुं अलेपकृत पाणी लेवुं, ते माटे ए आगारनुं नाम अलेवेणं वा जाणवुं. ते (सोवीरं के०) सौवीर-कांजी धोयण आदिशब्दथी गडूल जरवाणी प्रमुख जाणवुं.

त्रीजो (अछं के०) अछ ते निर्मल पाणी (उसिणजलं के०) उष्ण पाणी एटले त्रिदंडोत्कालिक उष्ण जल अथवा बीजुं पण निर्मल पाणी नितर्युं फलादिकनुं धोयण जाणवुं, एटला माटे अछेणवा नाम कहीये.

चोथो (धोअण के०) चोखा प्रमुखना धोयण प्रमुखनुं पाणी तेने (बहुल के०) बहुलेप कहीये एटला माटे एनुं बहुलेवेणवा एवुं नाम छे. ए तंडुलधोवनादिक गंडुल पाणी जाणवुं.

पांचमो (ससित्थं के०) सीथ सहित पाणी ते (उस्सेइम के०) आटाथी खरड्या हाथनुं

लीहिं के०) अंगुलीयें करीने (मणा के०) लगारेक एटले ए भाव जे अंगुलिये घृतादिक चोपडीने मांडा प्रमुख करे तेने पडुच्चमरिकएणं कहीयें. ते सर्वथा रूक्ष एवा मंडकादिक होय तेने लगारेक स्नेहवंत सुकुमारता उपजाववाने अर्थे लहचूइ प्रमुख अंगुलीये करी म्रक्षित कीधुं होय ते नीवि पच्चरकाणमां लेतां पच्चरकाण भंग न थाय, परंतु घृतादिकनी धाराये करी म्रक्षित करे, तो लेवुं कल्पे नहीं. ए सोल आगार अशन आश्री कह्या ॥ २७ ॥

हवे पाणस्सना छ आगारनो अर्थ कहे छे.

लेवार्म आयामा-इ इअर सोवीरमछ-मुसिजलं ॥ धोअण बहुल ससित्थं, उस्सेइम इअर संछविणा ॥२८॥ दारं ॥४॥

अर्थ—प्रथम (लेवाडं के०) लेपकृत पाणी ते कोने कहीये ? के (आयामाइ के०) आचाम्लादि–उंसामण आदिशब्द थकी आंवली त-

धोयण एटले उत्सेदिम एवुं पिष्टजलनुं नाम ठे ए-
टला माटे ससित्थेण वा एवुं ए आगारनुं नामठे.

ठठो ए पूर्वोक्त पांचमा ससित्थेण वा ए
आगारथी (इअर के०) इतर ते आटावाला
हाथनुं धोयण तेने वस्त्रादिके करी गल्युं होय,
तेथी ते (सिछविणा के०) सीथ विनानुं जा-
णवुं, एटले अन्नादिक आटाना दाणाना स्वाद
विनानुं थाय, एटला माटे तेनुं नाम असित्थेण
वा कहेवाय. ए ७ आगार पाणीना कह्या. तेनी
साथे पूर्वे कहेला सोल आगार मेलवीयें, तवारे
सर्व मली बावीश आगारोनी संख्या थाय ॥२७॥

अहीं प्रत्येक आगारे वा शब्द मूकेलो
ठे ते एक एकथी बीजा बीजामां विशेष देखा-
डवाने माटे ठे, एटले लेवथी अलेव विशेष,
अलेवथी अछ विशेष, अछथी बहुलेव विशेष,
बहुलेवथी ससिछ विशेष, ससित्थथी असिछ वि-
शेष जाणवो, परंतु लेवादिकनुं पाणी लीये, तो
पण उपवासादिकनो जंग थाय नही. इति

ज्ञावः ॥ ए प्रकारे अपुनरुक्त एटले फरी न उचरीये एवा बावीश आगारोना अर्थनुं व्याख्यान लेशथी देखाडयुं. ए आगारोना अर्थनुं चोथुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल चालीश थया ॥ हवे दश विगइना स्वरूपनुं पांचमुं द्वार कहे छे.

पण चउ चउ चउ डु डुविह, छ जस्क डुठाइ विगइ इगवीसं ॥ ति डु ति चउविह अजस्का, चउ महुमाइ विगइ बार ॥ ३९ ॥

अर्थ–जे इंद्रियादिकने पुष्ट करे, मन, वचन अने कायाना योगने अप्रशस्त विकार उपजावे, ते विगइ कहीये, ते विगइ दश ज्ञेदे छे. तेमांथी चार विगइ तो साधु अने श्रावक बेहुने अजक्ष्यज छे, एटले ग्रहण करवा योग्य नथी, अने छ जक्ष्य विगइ साधु अने श्रावक बेहुने ज्ञक्ष्य करवा योग्य छे. माटे एने ज्ञक्ष्य विगइ कहीये, तेना उत्तर ज्ञेद एकवीश थाय ते कहे छे.

प्रथम डुध विगइ (पण पे०) पांच ज्ञेदे

ठे, बीजी दहीं विगइ (चउ के०) चार जेदे ठे; त्रीजी घृतविगइ (चउ के०) चार जेदे ठे; चोथी तेल विगइ (चउ के०) चार जेदे ठे, पांचमी गोळविगइ (डु के०) बे जेदे ठे, ठंठी पक्वान्नविगइ (डुविह के०) द्विविध एटले बे जेदे ठे, ए (डुद्धाइ के०) डुग्धादिक (ठ के०) ठ (जरक के०) जक्षण करवा योग्य (विगइ के०) विगइ ठे, तेना सर्व मळी उत्तरजेद (इगवीसं के०) एकवीश थाय ठे.

हवे चार अजक्ष्य विगइना उत्तर जेद कहे ठे. प्रथम मधु विगइ (ति के०) त्रण जेदे ठे, बीजी मदिरा विगइ (डु के०) बे जेदे ठे, त्रीजी मांस विगइ (ति के०) त्रण जेदे ठे, चोथी माखण विगइ (चउविह के०) चार जेदे ठे. ए (महुमाई के०) मधु आदिक (चउ के०) चार (अजरका के०) अजक्ष्य (विगइ के०) विगइ ठे, तेना सर्व मळी उत्तर जेद (बार के०) बार थाय ते सर्व नामपूर्वक आ-

गम्र कहेदो ॥ ३ए ॥

हवे प्रथम व जक्ष्य विगइना एकवीश जेद व्यक्तपणे कहे वे.

खीर पय दहि अ तिल्लं, गुरु पक्वन्नं व जक्क विगईवं ॥ गो महिसी उट्टि अय एलगाण पण ऊह अह चउरो ॥ ३० ॥

अर्थ–प्रथम व जक्ष्य विगयनां नाम कहे वे. एक (खीर के०) ऊध, बीजो (घय के०) घृत, त्रीजो (दहि के०) दधि-दहीं (अ के०) वली चोथो (तिल्लं के०) तेल, पांचमो (गुम के०) गोल, बठो (पक्वन्नं के०) पक्वान्न, ए (व के०) व (जक्क विगईवं के०) जक्ष्य-विगय जाणवा. एटले ए व विगइ जे वे, ते साधु तथा श्रावकने जक्षण करवा योग्य वे, माटे एने जक्ष्य विगय कह्या. हवे ए व जक्ष्य विगयना उत्तर जेदनां नाम कहे वे.

तिहां प्रथम दूधविगयनुं नाम कहुं वे, माटे दूधना उत्तर जेद कही देखाडे वे

(गो के०) गायनुं दूध, वीजुं (महिसी के०) जेंपनुं दूध, त्रीजुं (उट्टि के०) उंटमीनुं दूध, चोथुं (अय के०) अजा एटले वालीनुं दूध, पांचमुं (एलगाण के०) एरुका ते गाडरीनुं दूध ए (पण के०) पांच जातिनां (डुद्द के०) दूध ते सर्व विगई जाणवां, अने शेप मनुष्यणी तथा वीजा पशुआदिकनां जे दुध थाय ठे ते विगइमां गणाय नहीं. (अह के०) अथ एटले हवे (चउरो के०) चार जातिनुं घृत तथा चार जातिनुं दहीं कहे ठे ॥ ३० ॥

घय दहिआ उट्टि विणा, तिल सरिसव अयसि लह तिल्ल चऊ ॥ दवगुम पिंमगुमा दो, पक्कन्नं तिल्ल-घय-तलियं ॥ ३१ ॥ दारं ॥ ए ॥

अर्थ–प्रथम (घय के०) घृत जाणवुं, वीजी (दहिया के०) दधि जाणवुं, ए बे विगइना एक (उट्टिविणा के०) उंटमीना विना वाकी चार चार भेद जाणवा, केम के उंटमीनुं दूध जमाय नहीं, माटे ते विना वाकी चार,

एक गायना दहीनुं घी, बीजुं नेपना दहींनुं घी, त्रीजुं गालीना दहींनुं घी, अने चोथुं गाम्‌रना दहींनुं घी ए चार नेद घृतना जाणवा, तथा दहींना पण एज चार नेद, एक गायना दूधनुं दहीं, बीजुं भेपना दूधनुं दहीं, त्रीजुं गालीना दूधनुं दहीं अने चोथुं गाडरना दूधनुं दहीं, ए चार दहींना नेद विगइरूप जाणवा.

हवे तेल विगयना चार नेद कहे डे. एक (तिल के०) तिलनुं तेल, बीजुं (सरिसव के०) सरशवनुं तेल, त्रीजुं (अयसि के०) अलसीनुं तेल अने चोथुं (लट के०) कावरीफलुंवा धान्यनुं तेल, ए (तिल्ल के०) तेल विगइना (चऊ के०) चार नेद विगइयाता रूपे जाणवा. अने बीजा एरंडीयानां फूलां, हिंगोल, मधुकफल, नालियेर, खदिर, शिंशपादिक यावत् लक्षपाकादिक सर्व जातिनां तेल ते नीवियातां जाणवां.

हवे गोल विगइना बे ज्रेद कहे ठे. एक (दवगुड के०) द्रव्यगोल ते ढीलो राव्रनीपे रसरूप गोल जाणवो, बीजो (पिंमगुडा के०) पिंम रूप गोल ते काठो विविध जातिनो गोल जाणवो, ए (दो के०) बे प्रकारना गोल जाणवा.

हवे (पक्कन्नं के०) पकान्न विगइना बे ज्रेद कहे ठे, तेमां एक तो पूर्वे जे चार जातिनां तेल कह्यां ठे, तेमां तव्युं होय तेने (तिल्लतलियं के०) तेलमां तलेलुं पकान्न कहीये, बीजुं पूर्वे जे चार जातिनां घृत कह्यां ठे, तेमां तव्युं होय तेने (घयतलियं के०) घृतमां तलेलुं पकान्न कहीये. तलियं शब्द बे स्थानके जोमवो. ए रीते दूधनां पांच, घृतनां चार, दहींनां चार, तेलनां चार, गोलनां बे अने पकान्ननां बे मली एकवीश ज्रेद जक्ष्य विगयना कह्या. ए विगयना नामनुं पांचमुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल पचास थया ॥

हवे ए भक्ष्य विगयना निवीयाता त्रीश करावे छे तेना भेदोनुं छठुं द्वार कहे छे.

पयसाडि खीर पेया,-वलेहि दुध्धट्टि दुद्ध-विगइगया॥ दरक बहु अप्प तंडुल, तच्चुन्नंबिल-सहिअ दुद्धे ॥ ३२ ॥

अर्थ—प्रथम दूधना पांच निवियाता थाय ते कहे छे. एक (दरक के०) द्राख अने टोपरादिक नाखीने दूध रांध्युं होय तेने (पयसाडि के०) पयसाडी (बासुदी) कहीये, बीजुं (बहुतंदुल के०) घणा चोखा नांखीने दूध रांध्युं होय तेने (खीर के०) खीर कहीये, त्रीजुं (अप्पतंदुल के०) अल्प तंदुल एटले थोडा चोखा नांखीने दूध रांध्युं होय तेने (पेया के०) पेया (दुधपाक) कहिये, चोथुं (तच्चुन्न के०) ते चोखाना चूर्ण करी सहित एटले ते चोखानो आटो लोक जापाये फूफरणुं कहे छे, ते नांखीने, दूध पचाव्युं होय, रांध्युं होय तेने (अवलेहि के०) अवलेहिका कहिये, पांचमुं (अंबिलसहिअ के०) खाटा

न्नापाये कहे छे, तेने (करंव के०) करंवो कही ये, वीजुं खांड नांखीने हाथथी मथन करेलुं दहीं तथा खांम्युक्त मथेलुं (ठणी काढेलुं दहीं) तेने (सिहरिणी के०) शिखरिणी कहीये, त्रीजुं लूणना कण नांखीने मथेलुं वस्त्रे अणगल्युं जे दहीं, ते (सलवणदहि के०) लवणसहित दधि कही ये, चोथुं लुगमायी ठाणेलुं, मथेलुं दहीं तेने (घोल के०) घोळेलुं दहीं कहीये, पांचमुं दहींना घोलयुक्त वटक(वमां) करवां ते कांजीवमां, दहीं वमां तथा दहीं ठाणीने तपावे, पठी मांहे वमां नांखे, तेने (घोलवमा के०) घोलवमां कहीये. इहां विवेकीने एटलुं विशेष के जिहां विदल-युक्त करवुं पमे, तिहां दहीं तथा ठास जे य-ठामांहे नांखवी होय तेने सारी रीते ऊष्ण करी नांखीये तेवारे श्रावकने नक्षण करवा योग्य थाय, अन्यथा घोलवमां थाकीश अन्नक्ष्यमां गणाय ने नक्षण करवा योग्य नथी. अकल्पनीय जाणवां ॥ ३३ ॥

हवे तेल तथा गोळ विगइना पांच पांच निवीयाता कहे छे.

तिलकट्टी निप्रंजण, पक्कतिल पक्कुसहितरिय तिलमली ॥ सक्कर गुलवाणय पा,—य खंम अधकढिय इक्कुरसो ॥ ३॥ ॥

अर्थ—प्रथम (तिलकुटी के०) तिल तथा गोळ कूटीने खांडीने एकठां करिये, ते तिलवट कहीये, बीजुं तव्या पक्वान्नथी उतरेलुं, दाजेलुं-घबेलुं तेल एटले पक्वान्ननुं तलण जाणवुं, अथवा केरी प्रमुखादिकना सरसीयादिक तेल ते (निप्रंजण के०) निर्प्रंजण एटले निर्लंजन जाणवुं, त्रीजुं सर्व ओषधवाळां तेल एटले लाक्षादिक द्रव्यथी पकावेलां तेलने (पक्कतिल के०) ओषधपक्व तेल कहिये, चोथुं तेलमांहे नारायणादिक ओषधी पचाव्या पछी ओषध उपर तरी वळे ते (पक्कुसहितरिय के०) पक्वोषधितरित तेल एटले पक्वोषधियी

वलेली तरि कहीये. पांचमुं (तिलमली के०) तेलनी मली एटले तेलनो मेल—कीटी जाणवी. ए पांच नीवियाता तेलनां जाणवां. एना पण ज्ञेदांतरे घणा ज्ञेदो थाय.

हवे गोळना नीवियाता कहे ठे. एक (स-क्कर के०) साकर—मिश्री, बीजो (गुलवाणय के०) गोलवाणी तथा रांधेलुं गलमाणुं श्रथा-त्रीजे कराय ठे ते देश प्रसिद्ध ठे, त्रीजो (पा-य के०) गोलनी पांति (चासणी) ते पाक-गुरु जेणे करी खाजादिक लेपीये ठीये, एने मा-लवादिक देशने विषे काकवपांति एम ज्ञापाये कहे ठे, चोथो (खंरु के०) खांडनी सर्वजाति, पांचमो (श्रधकढिय इक्कुरसो के०) अर्धो कढेलो इक्कु एटले सेलडी तेनो रस ए पांच ज्ञेद नीवियाता गोळना जाणवा. एना पण ज्ञे-दांतर घणा थाय ठे ॥ ३४ ॥

[illegible] कडाविगइना पांच नीवियाता कहे ठे.
[illegible] पुरियनवपूआ बिय, पूआ· तन्नेह तुरिय

घाणाई ॥ गुलहाणी जललप्पसि, य पंचमो पूतिकय-पूत्ते ॥ ३९ ॥

अर्थ-(पूरिअतवपूआ के०) पूरचो एटले ढांक्यो छे सर्व तावडो जेणे एवा पूडला उपर (बिअपूअ के०) बीजो पुडलो तली काढीये, ते बीजो पूडलो नीवीयातो जाणवो, एटले घृतादिक पूरित एवो जे तवो तेने विषे एक पूपे करी पूर्यो समस्त तवो तेहमां एक वार तली, वली तेहिज पूपिकादिक पर्पटकादिके अपूरित जेह-तेल एवा तवामां बीजी वार तथा त्रीजी वार क्षेपवीने तली काढीये जे पक्वान ते निवीयातुं जाणवुं.

बीजुं (तन्नेह के०) तेथी अन्य एटले त्रण घाण तली काढया पछी उपरांत बीजुं घृत क्षेपव्युं नथी एवुं जे तवामांहेलुं मूलगुं घृत एटले त्रण घाणनां तलणना घृत मांहे तल्या जे(तुरियघाणाई के०)चोथा घाणवा आदिक ते सर्व बीजुं नीवीयातुं जाणवुं. तथा त्रीजुं (-गुलहाणी के०)

गोळधाणी करवी, तें त्रीजुं निवीयातुं जाणवुं.

चोथुं सुकुमारिकादिक काढयां पछी एटले पक्वान्न तली काढया पछी उद्धृत (वधेलुं) जे घृतादिक तेणे करी खरडेलो जे तवो तेने विषे पाणी साथे रांधी एवी जे लापसी, गहूंनुं उरण गोलनुं पाणी घृतादिक नेळीने सीजवे छे, एने मरुदेशे प्रसिद्धपणे लापसी तथा लेहगटुं कहे छे ते (जललपसिय के०) जल लापसी निवीयातुं जाणवुं. एटले तावडीनी चीगट टालवा सारुं मांहे लोट नांखी पाणी साथे लापसी करीये ते जाणवी. (पंचमो के०) पांचमुं (पुत्तिकयपूई के०) पोतकृत पूडलो ते घृत तेले खरडेला तवाने वीषे गुडादिकनुं पोतुं आपी गल्या पुडा करे छे, एटले पक्वान्न तल्या पछी खरडया तावडा मांहे गोळादिकनुं पोतुं देइने पुडलो सीजवीये ते निवीयातुं जाणवुं॥ ए ० जाति विगयना त्रीश निवीयाता कह्या.

जिहां घीअने तेलमां पाणीनो भाग आवे ते नीविआता तथा पणादि सर्व जाणवा, अने जे कढाइमांहेथी घी तथा तेल उपर फरी वळे नही, चिकाशत न थाय एवुं तळेलुं होय, ते पण विगयातुं नही कहेवाय. इत्यादिक परंपरागत लेवानो विचार बहु प्रकारे छे, ते गछ समाचारीगत प्रसंगथी योगादिकमांहे कल्पाकल्प विभागे लखीये छैये.

लहचूई,पूपिकादि, पोतकृतपूपक, वेकसी, तद्दिनकृत करंब, घोलकृतवघारित पूरण, वघारिका, पटोरकी, मथित अगलित तक्रादिक, [1]कहिमन्नवि योगे ' कोइ पण योगने विषे न कल्पे अनेरो योग विना निवीमां कल्पे.

'हरिंगडुं, ढोकरी, वघारिक चणा घारयगां, लाज्यपक्व खीचडी, सेवतिका, वघारित चणकादिक, उत्तराध्ययन योगने विषे आचारांग मध्यगत सप्तसप्तकाध्ययनने विषे समरोदेशक

[1] कुवारला आदानी राब.

अनुज्ञा यावत् नगवतीयोगने विषे न कल्पे, बीजा सर्व योगमध्ये कल्पे.

पुढोगरी अने फूंकरणुं, उकलधुं, वाशी करंब, तिलवटी, कुल्लर, निवीयातां विगर गांठीयाना घारा, दलिया, गुंदविना मगीयादि, ओषधादि मोदक, पेटक खंमा, सिता, वरि- सोलां, वासी गुरूपाक, गुंद ाक, वगर तल्यां कांकरियां, अनुत्कालित इक्षुरस, दिनत्रयावधि प्रसूत गोदुग्ध वलहट्टी, अगाराथी उतारी आज्यादि मिश्रित पात्रला दिवसनी पचा- वेली निलवटी, पर्पटीकादि, गुडादिके मिश्रित न करेली ते दिवसे करेल तिलवटी, इत्यादिक नीवीयातां श्रीआवश्यक, दशवैकालिक, उत्तरा- ध्ययनादि सर्व योगने विषे प्रायः कल्पे. एवो विचार प्रसंगथी जाणवा माटे लख्यो ठे॥३५॥ हवे गिहत्थसंसठ्ठं ए आगारवडे नीवीनां पच्चरकाणमांहे जे नीवीयातां साधुने कल्पे, ते संसृष्ट द्रव्य कहीये, ते संसृष्ट द्रव्य जाणवाने कहे ठे.

दुद्ध दही चउरंगुल, दवगुड घय तिल्ल एग भत्तुवरिं ॥ पिंडगुल मक्खणाणं, अद्दामलयं च संसठ्ठं ॥ ३६ ॥

अर्थ-(दुद्ध के०) दुग्ध अने (दही के०) दधि मांहे कूर प्रमुख नाखीये एटले दूध दहीं मिश्रित कुरादिक होय, ते जो दूध तथा दहीं कुरथी (चउरंगुल के०) चार अंगुल उपर चमे तेने संसृष्ट द्रव्य कहीये, ते नीवियातुं नीवीमां कल्पे एटले भात, रोटली उपर दूध, दहीं, चार अंगुल प्रमाण ऊंचुं चढ्युं होय, तो नीवीप्रमुख मांहे साधुने कल्पे अने चार अंगुलथी अधिक पांच आदिक अंगुलना प्रमाणथी जेवारे ऊंचुं चमे, तेवारे ते विगइ जाणवुं, माटे ते न कल्पे.

अने (दवगुड के०) द्रव्यगोल एटले ढीलो नरम गोळ अने (घय के०) घृत (तिल्ल के०) तेल ए त्रणे ज्यां सुधी (भत्तुवरिं के०) भक्त जे भात अथवा रोटली ते उपरे (एग के०) एक अंगुल प्रमाण ऊंचां चढ्यां होय त्यां सुधी

संसृष्ट द्रव्य कहेवाय, एटले नीवियातुं कहेवाय, ते लेवुं कल्पे अने बीजा अंगुलथी प्रारंनीने उंचा चमेखां देखाय, तेवारे विकृत द्रव्य एटले विगय द्रव्य जाणवां, ते लेवां कल्पे नहीं.

(पिंडगुल के०) पिंडगोल एटले कानागोल साथे (मरकणाणं के०) मसल्युं जे चूरमुं प्रमुख तेमांहे (अद्दामलयं के०) आर्द्रामलक एटले शाण पीलुना महोर ते समान नहानां कणीयाना जेवा प्रमाणवाला एवा गोलना बहु खंरु रहे, तो पण तेने (च के०) वली (संसठं के०) संसृष्ट द्रव्य कहिये. ते नीवीयातामांहे लेवा कल्पे परंतु एथी महोटा खंड गोलना रहे तो ते विकृतिगत जाणवा, ते कल्पे नहीं ॥ ३६ ॥

हवे वली एहिज नीवियातानुं स्वरूप दर्शाववा कांइक विशेष कहे छे.

दव्वहया विगइ विगइ—गयं पुणो तेण तं

हयं दवं ॥ उद्धरिए तत्तंमिय, उक्किट्ठ-दवं इमं चन्ने ॥ ३७ ॥

अर्थ-(दव के०) द्रव्य जे कलम शाली-चोखा प्रमुख तेणे (हया के०) हणी निर्वीर्य करी एवी जे क्षीरादिक (विगइ के०) विगइ तथा कणिकादिके हणी एवी जे घृतादिक विगइ तेने (विगइगयं के०) विकृतिगत एटले नीवियातुं कहीये. (तेण के०) ते कारण माटे (पुणो के०) वली ते तंदुलादिक हण्युं एवुं जे विकृतिगत (तं के०) तेने (हयं दवं के०) हत द्रव्य कहीये. तथा सुखडी तावडामांहेथी (उद्धरिए के०) उद्धर्या पछी एटले सुखडी काढ्या पछी उगर्युं जे घृत (तत् के०) ते टाढुं थया पछी (तम्मिय के०) तेमां लोट नांखीने हलावीये ते (उक्किट्ठदवं के०) उत्कृष्ट द्रव्य कहेवाय एटले विगय जाणवुं (इमं चन्ने के०) एम अनेरा आचार्य कहे छे. इति गाथार्थः ॥ ३७ ॥

इहां जावार्थ ए ठे जे अन्न प्रमुख द्रव्ये विगइना पुद्गल हण्या, तेवारे विगयनो स्वाद फरी गयो, तेथी ते नीवीयातुं कहेवाय. परंतु विगइ न कहेवाय, एटला माटे ते नीवीना पच्चरकाण वालाने लेवी कल्पे.

अने सुकुमारिकादिक सुखडीने तावकामां हेपी काव्या पठी उगर्युं जे घृतादिक तेने विषे चूला उपर उते अग्निसंयोगथी तपे थके तेमांहे क्षेपव्युं जे कणिकादिक दल प्रमुख तेने उत्कृष्ट द्रव्य कहीये, ते विकृतिगत जाणवुं. ते केम ? चूरिम पूर्वे कमाह विगइ थई जम कणिका कीधी ने कणग घृत गोल परस्परे द्रव्य हत थइने पठी तेमां कणिका क्षेप करी मोदक बांध्या एवुं जे चूरमादिक ते विकृतिगत जाणवुं, पण विगय समजवी नहि. एनुं नाम उत्कृष्ट द्रव्य जाणवुं. एम केटलाएक आचार्य कहे ठे. नामांतरे गीतार्थाजिप्राये तो एम के जो पु- :। मायार्थी उतर्या पठी शीत थया पेहे

जे कणिकादिक दोषवीये, ते तथाविध पाका-भावथी विकृतिगत कहीये, अन्यथा परिपक्व विशेष थये ऽव्यगत कहीये, पण विगइ तथा निर्विकृतिक न कहीये, एवुं व्याख्यान प्रवचन-सारोद्धारवृत्तिना अभिप्रायथी लख्युं छे, पण तिहां एम कह्युं छे, जे पंडितोए ज्ञली परें विचा-रवुं, जे माटे निर्विकृतिक अनेक ज्ञेद छे ते बहुश्रुतनी आचरणा परंपरायी जाणवां ॥३७॥ हवे केटलीएक वस्तुनां नाम उत्तम ऽव्य कह्यां छे, ते देखाडे छे,

तिलसंकुलि वरसोलाइ, रायणंबाइ दक्-खाणाइं ॥ मोलीतिल्लाईया, सरसुत्तम दव्व लेवकमा ॥ ३७ ॥

अर्थ-(तिल के०) तेलथी नीपनी एवी (संकुलि के०) तिल सांकली तथा खारेक, टोपरा, सिंगोडा प्रमुख नाहोलाना हारडा तेने (वरसोलाई के०) वरसोलां कहीये, अने आ-दिशब्दथकी साकर खांडना विकार साकरीया

इहां भावार्थ ए, के जे अन्न प्रमुख द्रव्ये विगइना पुद्गल हएया, तेवारे विगयनो स्वाद फरी गयो, तेथी ते नीवीयातुं कहेवाय. परंतु विगइ न कहेवाय, एटला माटे ते नीवीना पच्चरकाण वालाने लेवी कल्पे.

अने सुकुमारिकादिक सुखडीने तावडामां हेवी काढ्या पछी उगर्युं जे घृतादिक तेने विषे चूला उपर रते अग्निसंयोगथी तपे थके तेमांहे क्षेपव्युं जे कणिकादिक दल प्रमुख तेने उत्कृष्ट द्रव्य कहीये, ते विकृतिगत जाणवुं. ते केम ? चूरिम पूर्वे कसाह विगइ थई जम कणिका कीधी ते ऊष्ण घृत गोल परस्परे द्रव्य हत थइने पछी तेमां कणिका क्षेप करी मोदक बांध्या एवुं जे चुरमादिक ते विकृतिगत जाणवुं पण विगय समजवी नहि, एनुं नाम उत्कृष्ट द्रव्य जाणवुं. एम केटलाएक आचार्य कहे छे. नामांतरे गीतार्थाभिप्राये तो एम के जो चुल्हाना माथाथी उतर्या पछी शीत थया केडे

जे कणिकादिक क्षेपवीये, ते तथाविध पाकाभावथी विकृतिगत कहीये, अन्यथा परिपक्व विशेष थये द्रव्यगत कहीये, पण विगइ तथा निर्विकृतिक न कहीये, एवुं व्याख्यान प्रवचनसारोद्धारवृत्तिना अभिप्रायथी लख्युं छे, पण तिहां एम कह्युं छे, जे पंडितोए भली परें विचारवुं, जे माटे निर्विकृतिक अनेक भेद छे ते बहुश्रुतनी आचरणा परंपराथी जाणवां ॥३७॥ हवे केटलीएक वस्तुनां नाम उत्तम द्रव्य कह्यां छे, ते देखाडे छे,

तिलसंकुलि वरसोलाई, रायणंबाइ दक्खाणाई ॥ मोलीतिल्लाईया, सरसुत्तम दव्वलेवकडा ॥ ३८ ॥

अर्थ-(तिल के०) तेलथी नीपनी एवी (संकुलि के०) तिल सांकली तथा खारेक, टोपरा, सिंगोडा प्रमुख नाळीएरना हारडा तेने (वरसोलाई के०) वरसोलां कहीये, अने आदिशब्दथकी साकर खांडना विकार साकरीया

पापड़, नालिकेर, खांड, कातली, शाक, सर्व मेवा प्रमुख, तथा (रायण के०) रायण (अंबाइ के०) आंबादिक एटले आम्रादिक फल सर्व अचित्त कर्यां पाकादिके नीपजाव्यां मधुकादिकनां, नालिकेरादिकनां, (दरकवाणाई के०) द्राखवाणी प्रमुख, नालेर वाणी प्रमुख (डोलीतिल्लाईया के०)कोली (महुडां) नुं तेल, आदि शब्दथकी नालिकेर, सरशव, प्रमुखनुं तेल, एरंड प्रमुखनुं तेल जाणवुं. अखोडादिक मेवा हलवा प्रमुख ए सर्व (सरसुत्तम दव्व के०) सरस उत्तम द्रव्य कहीये तथा एने (लेवकडा के०) लेपकृत पण कहीये. ए नीवीमां कल्पनीय जाणवां ॥ ३८ ॥

हवे ए सर्व पदार्थ कारणे लेवां कल्पे, पण सहजपणे रसगृद्धताये लेवां कल्पे नहीं, ते कहे छे.

विगइगया संसठा, उत्तमदवाइ निविगइयंमि ॥ कारणजायं मुत्तुं, कप्पंति न हुत्तुं जं ते ॥ ३९ ॥

अर्थ–एक (विगइगया के०) विकृतिगता एटले दूध प्रमुख विगइथी उत्पन्न थया जे नी-वीयाता जे संख्याये त्रीश पूर्वे कह्या छे ते, बीजा (संसठा के०) संसृष्ट द्रव्य जे करंबादिक, मगदल, पापडी पिंडादिक, त्रीजा (उत्तम दवाइ के०) उत्तम द्रव्यादिक ते तिलसांकली, साकर, मेवादिक सरसोत्तम द्रव्य जे पूर्वे कही आव्या ते ए त्रण प्रकारनी वस्तु ते (निव्विगइयंमि के०) नीवीना पच्चरकाणने विषे कोइ (कारण-जायं के०) कारणजातं एटले पुष्टालंबन विशेष प्रयोजनरूप वातादिक कारण (मुत्तुं के०) मूकीने, साधुने (जुत्तुं के०) जोगवबुं, लेवुं (न के०) नहीं (कप्पंति के०) कल्पे. जेने जाव-जीव सुधी ए विगयनां पच्चरकाण होय, किं वा तथाविध विशेष तपे उजमाल होय, किंवा वैयावच्च करवाने उजमाल होय, ज्ञानादिकनो उद्यमी होय, तेवारे शरीरे ग्लानादिक निमित्ते औषधादिक कारणे लेवां कल्पे, अन्यथा कारण

विना लेवा कल्पे नही. (जं के०) जेमाटे (वुत्तं के०) कह्युं छे, ते आगली गाथाये कहे छे. ॥ ३९ ॥

विगइं विगइन्नीओ, विगइगयं जो अ भुंजए साहू ॥ विगई विगइसहावा, विगई वि गई बला नेइ ॥ ४० ॥

अर्थ–(विगइं के०) दूध प्रमुख जे विगइ छे ते प्रत्ये अने (विगइगयं के०) विकृतिगत जे क्षीरादिक त्रिविध ड्रव्य नीवीयाता कह्या छे ते प्रत्ये (विगइ के०) विगति एटले विरुद्धगति ते नरक, तिर्यंच, कुदेव, कुमाणस्य रूप जे माठी गतियो छे तेनायकी (जीर्ड के०) जीनी रात्नतो एटले बीहीतो थको संयम ते गति अने तेनो प्रतिपक्षी जे असंयम ते विगति जाणवी, तेथी विरुद्धगतियकी बीहितो एवो (जो के०) जे (अ के०) वली (साहू के०) साधु ते (भुंजए के०) भुंजे एटले खाय ते साधुने (विगई के०) विगइ

ते (विगई के०) विगति जे नरकादिकनी विरुद्ध गति तेने विषे (बला के०) बलात्कारे एटले ते साधु जो के दुर्गतिमां जवाने नथी वांछतो तो पण बलात्कारे तेने माठी गति प्रत्ये (नेइ के०) पहोंचाडे. ते (विगई के०) विगइ केहेवी छे ? तो के (विगइसहावा के०) विकृति स्वजाव, एटले विकार उपजाववानो स्वजाव छे जेने एवी छे. केम के ए विकृत ते अवश्य शब्दादिक कामजोगने वधारे एवी छे, माटे कारण विना विगयादिक न सेवां, अने श्रावकने पण निवी प्रमुखने पच्चरकाणे कोइ महोटा कारण विना तथा विशेष तप विना नीवियाता लेवा कल्पे नहि, एनो विस्तार श्रीआवश्यकनिर्युक्तिनी वृत्तियी तथा प्रवचनसारोद्धारनी वृत्तिआदिक ग्रंथथी जाणवो. अहीं संक्षेप मात्र लख्यो छे ॥ ४० ॥
हवे चार अजक्ष्य विगय छे, तेना उत्तर जेद कहे छे.

कुत्तिय मछिय भामर, महु तिहा कठ पिठ्ठ मज्ज दुहा ॥ जल–थल–खगमंस तिहा, घय ख्र मरूखण चउ अजक्खा ॥४१॥ दारं ॥६॥

अर्थ–तिहां प्रथम मधु विगयना भेद कहे छे. एक (कुत्तिय के०) कुत्तां–वगतरां जंगल मध्ये थाय छे ते वर्षाकाले विशेष थाय छे, तेहनुं मध, बीजुं (मछिय के०) माखीनुं मध, अने त्रीजुं (भामर के०) भमरानुं मध एवं (तिहा के०) त्रण प्रकारनुं (महु के०) मधु एटले मध जाणवुं, तथा एक (कठ के०) काष्ठ ते धाउकी प्रमुख काष्ठथी, महुडादिकथी नीपन्युं मद्य, बीजुं (पिठ के०) पिष्ट ते ज्वारप्रमुखना आटादिकथी नीपनी मदिरा ए (मज्ज के०) मद्य एटले मदिरा ते (दुहा के०) बे प्रकारनी जाणवी. हवे मांसना भेद कहे छे. एक (जल के०) जलचर जीव जे मत्स्यादिक तेनुं. बीजुं (थल के०) स्थलचर जीव जे द्विपदचतुष्पदादिक तेनुं, त्रीजुं (खग

के०) खेचर जीव जे पक्षीआदिक तेनुं, ए (तिह्ना के०) त्रिधा एटले त्रण प्रकारनुं (मंस के०) मांस जाणवुं, तथा (घयव्व के०) घृत-वत् एटले जेम घृत, गाय भेंस गाडरी अने बाली ए चार प्रकारे कह्युं तेम (मरकण के०) माखण पण एहज चार प्रकारनुं जाणवुं, पण एटलुं विशेष के जे माखण छे, ते सर्व (चउ अन्नरका के०) चारे प्रकारनुं अन्नक्ष्यज छे. अने घृत जे छे, ते चारे प्रकारनुं नक्ष्य विग-यमां कह्युं छे. जे माटे योज थइ खटाशे प-लित रसपणुं पामीये एवी एक मदिरा, बीजुं गासथी बाहेर नीकल्युं एवुं माखण, त्रीजुं जी-वित शरीरथी अलगुं थयुं एवुं मांस, रुधिर ते पण एमज जाणवुं, तथा चोथुं मधुपुडाथी उप-न्युं मधु, ए चारे पदार्थोने विषे अंतरमुहूर्त मध्ये असंख्याता बे इंद्रिय जीव उपजे, तेमां मांसपेशीमध्ये तो पक तथा अपक्व तथा अग्नि उपरे पच्यमान एवा थका पण तेमांहे

असंख्य बे इंद्रिय तथा पंचेंद्रिय तथा निगोद जीव अनेना पण पोते पोतानी मेळे उपजता कह्या छे, ते माटे ए चार निगम जे छे, ते सर्वथा अनंतर वर्जनीय कह्या छे. ए त्रीश निगमनुं बत्रुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर भेद ८० थया ॥ ४१ ॥

हवे पच्चरकाणना बे भांगानुं मानमुं द्वार कहे छे.

पच्चरकाण बे भेदे छे. एक मूलगुणरूप अने बीजुं उत्तरगुणरूप. तिहां साधुने मूलगुण ते पांच महाव्रत अने उत्तरगुण ते पिंडविशुद्ध्यादिक जाणवां, तथा श्रावकने मूलगुण ते पांच अणुव्रत अने उत्तरगुण ते त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत जाणवां. तिहां सर्व पच्चरकाणादिक तेहना भांगा जे रीते थाय, ते रीते कहे छे.

तेमां सर्व उत्तरगुण पच्चरकाण अनागतादिक दश प्रकारे पूर्वे कह्यां, अने देशोत्तर गुण

पच्चक्खाण सात प्रकारे—ते त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत मली थाय. तथा वली एक इत्वर अने बीजुं यावत्कथिक, ए बे भेदे उत्तर गुण प्रत्याख्यान, तेमां साधुने इत्वरगुण पच्चक्खाण ते कांइक अभिग्रहादिक जाणवां, अने यावत्कथिक ते पिंडविशुद्ध्यादिक तथा अभियंत्रितादिक जे दुर्भिक्षादिके पण अवश्य होय—भंग न थाय, ते सर्व यावत्कथिक जाणवां; अने श्रावकने तो इत्वर ते चार शिक्षाव्रतादिक छे अने यावत्कथिक त्रण गुणव्रतादिक छे. ते श्रावक बे भेदे छे, एक अविरति सम्यग्दृष्टि ते केवल सम्यग्दर्शन युक्त कृष्ण श्रेणिकादिकनी परे जाणवा, अने बीजा विरति सम्यग्दृष्टि ते वली बे भेदे एक साभिग्रही अने बीजा निरभिग्रही.

ते वली विभज्यमान थका आठ भेद थाय, ते केवी रीते ? तो के एक दुविध त्रिविध, बीजो द्विविध द्विविध, त्रीजो द्विविध एकविध,

चोथो एकविध त्रिविध, पांचमो एकविध द्विविध, उठो एकविध एकविध, ए ठ जांगा पांच व्रत आश्रयी थाय, अने कोइएक उत्तरगुण मांहेलुं कोइएक व्रत लीये, ते सातमो जांगो जाणवो, अने आठमो जांगो कोइ नियम मात्र नज लीये ते जाणवो. ए रीते पुर्वोक्त पांच अणुव्रतादिक तेने ठ जांगे गुणीये तेवारें त्रीश जंग थाय, तेनी साथे एक उत्तरगुणनो जांगो मेलवीयें, तेवारें एकत्रीश जांगा थाय, तेनी साथे वली कोइ नियम मात्र व्रत न लीये, तेनो एक जांगो मेलवीये तेवारे बत्रीश जेद श्रावक सम्यग्दर्शनी शंका कांक्षादि रहित अमूढदृष्टिपणे जाणवा. इत्यादिक जेदनी वक्तव्यता बहु ठे, पण इहां मुख्यताये उंगणपच्चास जांगा थाय, ते जांगा गाथाना अर्थे कहे ठे.

मण वयण काय मणवय, मणतणु वयतणु । तिजोगिं सगि सत्त ॥ कर काराणुमइ डुं तिजुय, तिकालि सीयालजंगसयं ॥ ४२ ॥

अर्थ—एक प्राणातिपातादिकने (मण के०) मने करी न करुं, बीजो (वयण के०) वचने करी न करुं, त्रीजो (काय के०) कायाये करी न करुं, चोथो (मणवय के०) मन अने वचने करी न करुं, पांचमो (मणतणु के०) मन अने कायाये करी न करुं, छठो (वयतणु के०) वचने अने कायाये करी न करुं, सातमो (तिजोगि के०) मन, वचन अने काया, ए त्रणे योगे करी न करुं, ए एक संयोगी (सगि के०) सात भांगा थया.

.. ते सात भांगा (कर के०) करवा आश्रयी जाणवा. तेमज (सत्त के०) सात भांगा (कार के०) करावचा आश्रयी जाणवा, अने सात भांगा (अणुमइ के०) अनुमति आपवाना एटले अनुमोदन देवाना पण जाणवा.

से आवी रीते के—प्राणातिपातादिकने मने करी न करावुं, बीजो वचने करी न करावुं, त्रीजो कायाये करी न करावुं, चोथो मन

अने वचने करी न करावुं, पांचमो मन अने कायाये करी न करावुं, उठो वचन अने कायाये करी न करावुं, सातमो मन, वचन अने काया ये करी न करावुं, ए सात करावबाना जांगा कह्या. हवे सात अनुमोदवाना कहे वे. एक प्राणातिपातादिकने मने करी न अनुमोदुं, वीजो वचने करी न अनुमोदुं. त्रीजो कायाये करी न अनुमोदुं, चोथो मन अने वचने करी न अनुमोदुं, पांचमो मन अने कायाये करी न अनुमोदुं, उठो वचन अने कायाये करी न अनुमोदुं, सातमो मन, वचन अने कायाये करी न अनुमोदुं, ए सात जांगा अनुमोदन देवाआश्रयी कह्या, एम सात करवाना, सात करावबाना अने सात अनुमोदवाना मली एकवीश जांगा थया.

हवे (दुतिजुअ के०) द्विक. त्रिक योग सहित सात सात जांगा करीये, ते आवी रीते के–एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करुं,

न करावुं. बीजो वचने करी न करुं, न करावुं. त्रीजो कायाये करी न करुं न करावुं. चोथो मन अने वचने करी न करुं, न करावुं. पांचमो मन अने कायाये करी न करुं, न करावुं. उठो वचन अने कायाये करी न करुं, न करावुं. सातमो मन, वचन अने काया, ए त्रणे करी न करुं, न करावुं. ए करवा करावदा आश्री सात नेद कह्या. तथा एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करुं, न अनुमोडुं; बीजो वचने करी न करुं, न अनुमोडुं; त्रीजो कायाये करी न करुं, न अनुमोडुं; चोथो मन अने वचने करी न करुं न अनुमोडुं; पांचमो मन अने कायाये करी न करुं न अनुमोदुं; उठो वचन अने कायाये करी न करुं, न अनुमोदुं; सातमो मन वचन अने काया, ए त्रणे करी न करुं, न अनुमोदुं. ए सात नंग न करवा तथा न अनुमोदवा आश्री कह्या. तथा एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करावुं, न

अनुमोदुं; बीजो वचने करी न करावुं, न अनुमोदुं; त्रीजो कायायें करी न करावुं, न अनुमोदुं; चोथो मने वचने करी न करावुं, न अनुमोदुं; पांचमो मने कायाये करी न करावुं, न अनुमोदुं; छठो वचने कायाये करी न करावुं, न अनुमोदुं; सातमो मन, वचन अने कायाये करी न करावुं, न अनुमोदुं; ए न करावया न अनुमोदवा आश्री सात भंग कह्या. एम सात न करवा न करावया आश्री अने सात न करवा न अनुमोदवा आश्री तथा सात न करावया न अनुमोदवा आश्री. एवं सर्व मली द्विकसंयोगे एकवीश भंग थया. तेनी साथे पूर्वोक्त एक संयोगना एकवीश भेळवतां, बेंतालीश भांगा थया.

हवे त्रिक संयोगे सात भंग थाय, ते कहे छे, एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करुं, न करावुं अने न अनुमोदुं; बीजो वचने करी न करुं, न करावुं अने न अनुमोदुं; त्रीजो

श्रकुसला य ॥१॥ इति ॥ एना विशेषे भांगा षड्भंगीना श्रावकना व्रत संबंधी थाय ते कहे छे. गाथा ॥ तेरसकोमी सयाइं, चुससीइं जुयाइं बारसय लरका ॥ सत्तासीइ सहस्सा, दोय सया तह डुग्गहिया ॥ १ ॥ तेरशें कोमी, चोराशी कोमी, बारलाख सत्याशी हजार बशें ने बे थाय. एमज नवभंगीना नवाणुं हजार नवशें ने नवाणुं कोडी, उपर नवाणुं लाख, नवाणु हजार नवशें ने नवाणुं एटला भांगा थाय. ____ __ ____ ____ ____ __ ____ एमज एकवीश भंगी तथा ओगणपचाश भंगीना विशेष भांगा थाय, ते सर्व श्रावकवृहद्वृत्तिथी, तथा दीपिकाथी तथा प्रवचनसारोद्धारवृत्तिथी, तथा श्रावकव्रतभंगप्रकरणवृत्तिथी, तथा देवकुलिकाथकी जाणवा. जे पच्चरकाणनो कुतूहल होय, तेणे विचारवा.

हवे ए पच्चरकाणनुंज स्वरूप कहे छे,

एवं च छनकालं, मयं च मण–वयण–का-

तुष्के एटले चार ज्ञांगाने विषे करे; तेमां (वि-
सुयणुमा के०) पहेला त्रण ज्ञांगाने विषे अ-
लुज्ञा एटले आज्ञा ठे, एटले ए पच्चरकाणने क-
रवा करावत्रा रूप चउज्ञंगी थाय ते कहे ठे.-
एक पच्चरकाणनो करनार शिष्य पण जाण
होय, अने बीजा पच्चरकाण करावनार गुरु पण
जाण होय, ए प्रथम ज्ञंग शुद्ध जाणवो. बीजो
पच्चरकाण करावनार गुरु जाण होय अने पच्च-
रकाण करनार शिष्य अजाण होय, ए बीजो
ज्ञांगो पण शुद्ध जाणवो. त्रीजो पच्चरकाण क-
रनार शिष्य जाण होय अने पच्चरकाणनो क-
रावनार गुरु अजाण होय, ए त्रीजो ज्ञांगो पण
शुद्ध जाणवो. चोथो पच्चरकाण करनार शिष्य
अने पच्चरकाण करावनार गुरु, ए बेहु अजाण
होय, ते चोथो ज्ञांगो अशुद्ध जाणवो. ए रीते
चार ज्ञागामाहेथी त्रण ज्ञागे पच्चरकाण कर-
वानी आज्ञा ठे, अने चोथा ज्ञांगाने विषे आ-
ज्ञा नथी ॥ ए मूलगुण, उत्तरगुणरूप पच्चरका-

ठ प्रकारनी शुद्धिए करी शुद्ध एवुं (पच्चक्खाणं के०) पच्चक्खाण, फलदायक होय. हवे ए ठ विशुद्धिना अर्थ कहे ठे.

तिहां प्रथम सम्यक् प्रकारे (विहिणोचियकालि के०) विधिये करी उचित कालें एटले उचितवेलाये (जं पत्तं के०) जे पच्चक्खाण प्राप्त थयुं एटले सूर्योदयथी पहेलां पच्चक्खाण उचितकाले जे पाम्युं, एटले जे पच्चक्खाण कीधुं, ते यावन्मात्र जेटला काल लगण ग्रहण कर्युं, तावन्मात्र तेटला काल लगे पहोंचाड्युं तेने (फासिय के०) फरश्युं कहीये ॥ ४४ ॥

पालिय पुण पुण सरियं, सोहिय गुरुदत्त सेस भोयणउ ॥ तीरिय समहियकाला, किट्टिय भोयणसमय सरणा ॥ ४५ ॥

अर्थ—बीजुं ज्यां लगे पच्चक्खाण पूरुं न थाय, तिहां लगे (पुणपुण के०) वारंवार उपयोग देइने सावधानताये (सरियं के०) संभार्युं जे म्हारे अमुक पच्चक्खाण आजे ठे, ए

माटे हवे अशन करुं! आरोगुं! निस्तारुं! इत्यादिक विनय ज्ञापा साचवीने जमवुं, तेने (किट्टिय के०) पच्चरकाण कीर्युं कहीये ॥ ४५ ॥

इअ पडिअरिअं आरा,-हिअं तु अहवा ठ सुद्धि सद्दहणा ॥ जाणण विणयणुज्ञासण, अणुपालण जावसुद्धित्ति ॥ ४६ ॥ दारं ॥ ए ॥

अर्थ—हवे (इअ के०) ए सर्व प्रकारे करी (पडिअरिअं के०) प्रतिचरितं एटले आचर्युं जे पच्चरकाण एटले ए सर्व प्रकारे संपूर्ण निश्राये पमाड्युं निराशंसपणे श्री जिनाज्ञा पालन पूर्वक संयमयात्रा निर्वाहक षट्कारण साधनपूर्वक अप्रमादपणे महोटा कर्मक्षपने कारणे थयुं तेने (आराहियं के०) आराधितं एटले आराध्युं कहियें. (अहवा के०) अथवा प्रकारांतरे करी (तु के०) वली पण पच्चरकाणनी (ठ सुद्धि के०) ठ शुद्धि कहे छे. प्रथम सम्यग्दर्शनी श्रद्धायंतना मुखथी पच्चरकाण करवुं, तेने निःशंकता आचारयुक्त

णुपालण के०) अनुपालणा शुद्धि जाणवी. तथी पूर्वोक्त सर्वप्रकारथी निर्जराना इहलोक परलोकनी वांछा रहितपणे आशंसादि दोषे करी रहित ते (नावसुद्धित्ति के०) नावशुद्धि जे. इति एटले एम जाणवुं. ए छ शुद्धि पण समस्त सर्वे पच्चरकाणोने विषे जाणवी. एम भंगादि विशुद्धिना विस्तारनां बीजक ग्रंथांतरथी जाणवां. एटले ए आठमुं छ शुद्धिनु द्वार थयुं॥ उत्तर बोल अठाशी थया ॥ ४६ ॥

हवे पच्चरकाणनुं फल बे प्रकारे थाय, तेनुं नवमुं द्वार कहे छे.

पच्चक्काणस्स फलं, इह परलोए य होइ डुविहं तु ॥ इहलोए धम्मिलाइ, दामन्नगमाइ परलोए ॥ ४७ ॥ दारं ॥ ए ॥

अर्थ—(पच्चक्खाणस्स फलं के०) पच्चरकाणनुं फल ते (इह परलोएय के०) इह लोक तथा परलोक आश्री (डुविहं तु के०) बे प्रकारनुं वली (होइ के०) होय. तेमा कोइ-

तेनी कथा संक्षेपथी लखीये ढीए—कुशाग्र नगरमां सुरेंद्रदत्त नामे सार्थवाहनी सुजद्रा नामनी स्त्रीथी धम्मिल्ल नामे बहोंतर कलामां प्रवीण एवो पुत्र थयो. ते यौवनावस्था पाम्यो पण जितेंड्रिय होवाथी जोगने वांढतो नहोतो पण मातपिताए यशोमति कन्या साथे परणाव्यो. पढी बलात्कारे दुर्ललितागोष्टि वेश्या पासे मुक्यो. त्यां वसंततिलका वेश्या साथे आसक्त थयो. बार वर्ष पढी तेने निर्धन जाणी अक्काए काढी मुक्यो. अनुक्रमे तेना मातपिता मरण पाम्या अने तेनी पत्नि पोताना पिताना घरे गइ एथी पोते दुःखित थइ मरणनी इच्छाये उद्यानमां गयो. त्यां अगमदत्त राजर्षिने जोइ नमस्कार करी पोतानुं दुःख कह्युं जे स्त्री आसक्तने दुःखनुं शुं कहेवुं ? मुनिये पोतानुं चरित्र कही तेने प्रतिबोध्यो पण विषयनी इच्छा तृप्त थइ नहि. ठेवटे मुनिये कह्युं के तपवडे करीने इष्टनी प्राप्ति थाय ढे. एवुं सांजळी

विरक्त थइ हुं तो एनी धाव माता तुं क्रमे क्रमे तमारा विषे एने रागिणी करीश. त्यार पछी तेउ चंपाये गया त्यां राजसुता कपिला साथे ते परण्यो. अनुक्रमे थे विद्याधर राजानी बत्रीश कन्याउने ते परण्यो. सर्व मळी पांत्रीश स्त्री साथे अनुक्रमे ज्ञोग ज्ञोगववा लाग्यो. एक वखते मुनिने आवेला जाणी वंदन करी पूर्वज्ञव संबधी पृछा करी तेवारे धर्म रुचि गुरुए कह्युं के पुलिंदना ज्ञवे पांच मत्स्यने बचाव्या, त्यांथी मरण पामी पल्लिपति सुत थइ अणसण करी मरण पामी, तुं धम्मिल्ल कुमार थयो. एवुं धर्मरुचि गुरुनुं वचन सांज्ञळी ते विरक्त थइ दीक्षा ग्रहण करी अच्युते गयो. तिहांथी महा विदेहमां सुकुल पामी बोधि ज्ञान पामी चारित्र पाळी सिद्धि पदने वरशे.

अने परज्ञवे दामन्नकादिकने फल थयुं छे ते दामन्नकनो दृष्टांत संक्षेप मात्रे लखीये छीये- राजपुर नगरे एक कुलगर रहेतो हतो, तेनो

घालकने मारवा जणी अंत्यजने आप्यो. तेणे अभिज्ञान देखाडवा निमित्ते तेनी टचली अंगुळी छेदी अने अतिशय जय देखाडी परहो काढ्यो. पछी ते बालक अनुक्रमे नाठो थको ते शेठनुं जिहां गोकुल छे, ते ग्रामे आव्यो. तिहां ते गोकुलना स्वामीये तेने स्वरूपवान् तथा विनीत देखी पुत्रपणे थाप्यो. अनुक्रमे यौवन पाम्यो. पछी केटलाएक वर्षांतरे तिहां सागरदत्त शेठ आव्यो, तेणे तेने देखीने उंलख्यो, ते वारे कोइ कार्यनुं निमित्त करी लेख लखीने आप्यो, तेमां शेठे पोताना पुत्रने लख्युं जे एने विष आपजो. एवो लेख आपी पोताने नगरे मोकल्यो, ते श्रांत थयो थको उद्यानमांहे कामदेवना प्रासादे आवी सूतो. तिहां वरार्थिनी एवी शेठनी पुत्री कामदेव पूजवा आवी, तिहां तेणे तेने सूतो देखी कागलमां पोताना पिताना अक्षर देखी कागल वांच्यो. तेमां विष देवानुं लख्युं जोइने पोतानुं नाम

मातृपूजन करवा जातुं, एम कही ते गयो. एटलामां वचे रस्तामां अंत्यजे तेनो संकेत जाणी ते शेठना पुत्रने जमाइ समजी मारी नांख्यो, भवितव्यताथी बलवत्तर कोइ नथी. पछी ते पुत्रमरणनुं वृत्तांत सांभलीने हृदयस्फोट थइ शेठ पण मरण पाम्यो. अनुक्रमे घरनो स्वामी दामन्नक थयो. ऋषिभाषित वचन अन्यथा न थाय.

अनुक्रमे एकदा पाछले पहोरे पाहरी देता एक मंगल पाठके गाथा कही. तद्यथा ॥ अणुपुंखमावहंतावि, अन्नहा तस्स बहु गुणा हुंति ॥ सुह दुक्ककम्म फुमंतो, जस्स कयंतो वहइ पक्वं ॥ १ ॥ ए गाथानो अर्थ सांभली एक लक्षनुं दान दीधुं, एम त्रण बार कथा सांभली त्रण लक्ष दान दीधुं. राजाये ते वात वात सांभळीने पोतानी पासे तेडाव्यो. पछी सर्व वीतक वात राजा आगल कही, राजा हर्ष पाम्यो थको तेने नगरशेठनी पदवीये स्था-

थयो. एकदा गुरु आव्या सांभली वांदवा गया, तिहां धर्मदेशना सांभली अने पुरातन भव मत्स्य मांस पच्चरकाणादिक सर्व सांभर्युं, तेथी बोधिलाभ पाम्यो; धर्मानुष्ठान साधवी देवलोके गयो. तिहांथी महाविदेहमां सुकुलमां उपजशे, तिहां बोधिलाभ पामी चारित्र लई केवलज्ञान पामी परंपराये मोक्षसुख पामशे, अने केटलाएक तेहीज भवे सिद्धि पामे. ए वे प्रकारे फलनुं नवमुं द्वार थयुं ॥

एटले सर्व मूलगुण प्रत्याख्यान सर्व उत्तरगुण प्रत्याख्यान तथा अभिग्रहादिक देश उत्तरगुण पण होय, अने श्रावकने देश मूलगुण प्रत्याख्यान ते अणुव्रत तथा देश उत्तर गुण प्रत्याख्यान ते गुणव्रत अने शिक्षाव्रत जाणवां. ते वली बे बे भेदे. एक इत्वर ते अणकालि अनागतादि पच्चरकाण मूल उत्तर गुण पच्चरकाण अने देश उत्तरगुण पच्चरकाण ते शिक्षाव्रतादि तथा देशे मूलगुण पच्चरकाण अने सर्व-

थी उत्तरगुण पच्चरकाण अने मूलगुण क्रियारूपे एवुं पच्चरकाण धम्मिल्लादिकने जाणवुं. इत्यादिक पच्चरकाणना न्नंग विकल्प घणा डे, ते गुरुना विनयथी जाणीये, माटे यथाग्रहीत न्नंगे पच्चरकाण आराधवां, तेनुं गमन डेल्ली गाथावडे कहे डे ॥ ४७ ॥

हवे ग्रंथ समाप्ति अर्थे गाथा कहे डे,

पच्चरकाणमिणं से,-विऊण न्नावेण जिणवरुद्दिठं ॥ पत्ता अणंत-जीवा, सासयसुरकं अणाबाहं ॥ ४८ ॥

॥ इति प्रत्याख्यानन्नाष्यं संपूर्णम् ॥

अर्थ-(पच्चरकाणं के०) पच्चरकाण ते (इणं के०) ए यथोक्त कह्युं ते प्रत्ये (न्नावेण के०) न्नावे करीने एटले न्नावसहित, श्रद्धाये करी निःशंकित सम्यग्दर्शन सहित जे रीते (जिणवर के०) जिनेश्वर न्नगवाने ज्ञान क्रिया सहित उन्नयनयसम्मत (उद्दिठं के०) कह्युं डे, प्रकाश्युं डे ते प्रकारे, यथा गुणधारण रूप पच्चरका-

णने (सेविऊण के०) सेवीने, आदरीने, पा· ळीने त्रिकाळापेक्षाये (अणंतजीवा के०) अनंत जीव नव्यप्राणी ते (सासयसुक्खं के०) शाश्वतां सुख (अणाबाहं के०) अनाबाध अव्याबाध–निराबाध, एटले नथी कोइ बाधा जिहां एवुं जे मोक्षस्थानक ते प्रत्ये (पत्ता के०) पाम्या, पामे छे अने पामशे. ॥ ४८ ॥

ति भाष्यत्रयवार्त्तिक,–मेतद्विवृण्वतार्जितंसुकृतं । न स्ताद्भविकलोक,-स्सततं निरपायसौख्यरतः॥१॥

॥इति नाष्यत्रयं बालावबोधसहितं समाप्तम्॥



थी उत्तरगुण पचरकाण अने मूलगुण क्रियारूपे एवुं-पच्चरकाण धम्मिल्लादिकने जाणवुं. इत्यादिक पच्चरकाणना जंग विकल्प घणा छे, ते गुरुना विनयथी जाणीये, माटे यथागृहीत जंगे पचरकाण आराधवां, तेनुं गमन छेल्ली गाथावडे कहे छे ॥ ४७ ॥

हवे ग्रंथ समाप्ति अर्थे गाथा कहे छे.

पच्चरकाणमिणं से,–विऊण जावेण जिणवरुद्दिठं ॥ पत्ता अणंत–जीवा, सासयसुक्खं अणाबाहं ॥ ४८ ॥

॥ इति प्रत्याख्यानजाष्यं संपूर्णम् ॥

अर्थ–(पचरकाणं के०) पचरकाण ते (इणं के०) ए यथोक्त कह्युं ते प्रत्ये (जावेण के०) जावे करीने एटले जावसहित, श्रद्धाये करी निःशंकित सम्यग्दर्शन सहित जे रीते (जिणवर के०) जिनेश्वर जगवाने ज्ञान क्रिया सहित उनयनयसम्मत (उद्दिठं के०) कह्युं छे, प्रकाश्युं छे ते प्रकारे, एवा गुणधारण रूप पचरका-

णने (सेविऊण के०) सेवीने, आदरीने, पा-
ळीने त्रिकालापेक्षाये (अणंतजीवा के०)
अनंत जीव भव्यप्राणी ते (सासयसुरकं के०)
शाश्वतां सुख (अणाबाहं के०) अनाबाध
अव्याबाध–निराबाध, एटले नथी कोइ बाधा
जेहां एवुं जे मोक्षस्थानक ते प्रत्ये (पत्ता के०)
पाम्या, पामे छे अने पामशे. ॥ ४० ॥

ति भाष्यत्रयवार्त्तिक,–मेतद्भिणवताङ्कितंसुकृतं ।
स्ताह्नयिकलोक,-स्सततं निरपायसौख्यरतः॥१॥

।इति भाष्यत्रयं बालावबोधसहितं समाप्तम्॥



॥ अथ उपदेशरत्नकोशः ॥

उवएसरयणकोसं, नासिअनीसेसलोगदोगचं ॥ उवएसरयणमालं, वुच्छं नमिऊण वीरजिणं ॥ १ ॥

अर्थ–(नासिअनीसेसलोगदोगचं) नाश कर्यां छे समस्त लोकनां दारिद्र जेणे एवा (वीरजिणं) वीर जिनने (नमिऊण) नमस्कार करीने (उवएसरयणमालं) उपदेश रूप रत्ननी माला छे जेने विषे एवा (उवएसरयणकोसं) उपदेश रूप रत्नना भंडारने (वुच्छं) हुं कहीश.

जीवदयाइ रमिज्जइ, इंदियवग्गो दमिज्जइ सया वि ॥ सचं चेव चविज्जइ, धम्मस्स रहस्समिणमेव ॥ २ ॥

अर्थ–(जीवदयाइ) जीव दयाने विषे (रमिज्जइ) रमण करीये. (इंदियवग्गो)

ईंडियोना समुहने (दमिज्जइ) दमन करीये.
(सव्वं) सत्यने (चेव) निश्चे (चविज्जइ)
बोलीये (इणमेव) आज (धम्मस्स) धर्मनुं
(रहस्सं) रहस्य–तत्त्व छे. ॥ २ ॥

सीलं न हु खंमिज्जइ, न संवसिज्जइ समं
कुसीलेहिं ॥ गुरुवयणं न खलिज्जइ, जइ नज्ज-
इ धम्मपरमत्थो ॥ ३ ॥

अर्थ–(सीलं) शीयल व्रतने (हु) निश्चे
(न खंमिज्जइ) न खंडन करीये. (कुसीले-
हिं) कुशीलिया (समं) साथे (न संवसि-
ज्जइ) न वास करीयें. (गुरुवयणं) गुरुना
वचनने (न खलिज्जइ) न उल्लंघन करीये. ए
प्रकारे (जइ) यतिए (धम्मपरमत्थो) धर्मनो
परमार्थ (नज्जइ) जाणवो. ॥ ३ ॥

चवलं न चंकमिज्जइ, विरइज्जइ नेव उ-
ब्भडो वेसो ॥ वंकं न पलोइज्जइ, रुठा वि भणंति
न पिसुणा ॥ ४ ॥

अर्थ–(चवलं) चपलताए (न चंकमि-

ज्जाइ) न चालीए. (उब्भडो) उद्भट (वेसो) वेष (नेव) नहिज (विरइज्जाइ) धारण क रीये. (वंकं) वांकी दृष्टिए (न पलोइज्जाइ) न जोईये. तो (रुठा वि) क्रोध पामेला एवा पण (पिसुणा) चाडीयाउं (किं) शुं (भणंति) कहे—कही शके ? ॥ ४ ॥

नियमिज्जइ नियजीहा, अविआरिअं नेव किज्जए कज्जं । न कुलक्कमो अ लुप्पइ, कुविउं किं कुणइ कलिकालो ॥ ५ ॥

अर्थ–(नियजीहा) आपणी पोतानी जीह्वाने (नियमिज्जइ) नियममां राखीये,(अविआरिअं) अविचार्युं (कज्जं) कार्य (नेव) नहींज (किज्जए) करीए, (अ) वली (कुलक्कमो) कुलाचारने (न लुप्पइ) न लोपीये, तो (कुविउं) कोप पामेलो एवो (कलिकालो) कलिकाल (किं) शुं (कुणइ) करे–क री शके ? ५

मम्मं न उ लविज्जइ, कस्स वि आलं न

दिज्जइ कया वि॥ को वि न उक्कोसिज्जइ, सज्जणमग्गो इमो दुग्गो ॥ ६ ॥

अर्थ–कोइने (उ) वली (मम्मं) मर्म वचन (न लविज्जइ) न कहीये. (कस्स वि) कोइने (कया वि) कदापि (आलं) कलंक (न दिज्जइ) न दईये. (को वि) कोइने पण (न उक्कोसिज्जइ) आक्रोश न करीये. (इमो) आ (सज्जणमग्गो) सज्जननो मार्ग (दुग्गो) दुर्ग-किल्ला समान छे. अर्थात् ते कोइथी पराभव पामे नहीं ॥ ६ ॥

सवस्स उवयरिज्जइ, न पम्हसिज्जइ परस्स उवयारो। विहुरं अवलंबिज्जइ, उवएसो एस विउसाणं ॥ ७ ।

अर्थ–(सवस्स) सर्वने (उवयरिज्जइ) -पकार करीये. (परस्स) परनो (उवयारो) उपकार (न पम्हसिज्जइ) न विसारीये. (विहुरं) दुःखीने (अवलंबिज्जइ) अवलंबन आपीये. (एस) आ (उवएसो) उपदेश

ज्जाइ) न चालीए. (उप्भडो) उद्भट (वेसो) वेष (नेव) नहिज (विरइज्जाइ) धारण क-रीये. (वंकं) वांकी दृष्टिए (न पलोइज्जाइ) न जोईये. तो (रुठा वि) क्रोध पामेला एवा पण (पिसुणा) चाडीयाओ (किं) शुं (जपं-ति) कहे—कही शके ? ॥ ४ ॥

नियमिज्जइ नियजीहा, अविआरिअं नेव किज्जए कज्जं । न कुलकमो अ लुप्पइ, कुविओ किं कुणइ कलिकालो ॥ ५ ॥

अर्थ—(नियजीहा) आपणी पोतानी जीह्वाने (नियमिज्जइ) नियममां राखीये, (अ-विआरिअं) अविचार्युं (कज्जं) कार्य (नेव) नहींज (किज्जए) करीए, (अ) वली (कुल-कमो) कुलाचारने (न लुप्पइ) न लोपीये, तो (कुविओ) कोप पामेलो एवो (कलिका-लो) कलिकाल (किं) शुं (कुणइ) करे—क-री शके ? ५

मम्मं न उ लविज्जइ, कस्स वि आलं न

दिज्जइ कया वि॥ को वि न उक्कोसिज्जइ, सज्जणमग्गो इमो दुग्गो ॥ ६ ॥

अर्थ–कोइने (उ) वळी (मम्मं) मर्म वचन (न लविज्जइ) न कहीये. (कस्स वि) कोइने (कया वि) कदापि (आलं) कलंक (न दिज्जइ) न दइये. (को वि) कोइने पण (न उक्कोसिज्जइ) आक्रोश न करीये. (इमो) आ (सज्जणमग्गो) सज्जननो मार्ग (दुग्गो) दुर्ग-किल्ला समान छे. अर्थात् ते कोइथी पराभव पामे नहीं ॥ ६ ॥

सव्वस्स उवयरिज्जइ, न पम्हसिज्जइ परस्स उवयारो । विहुरं अवलंबिज्जइ, उवएसो एस विउसाणं ॥ ७ ॥

अर्थ–(सव्वस्स) सर्वने (उवयरिज्जइ) उपकार करीये. (परस्स) परनो (उवयारो) उपकार (न पम्हसिज्जइ) न विसारीये. (विहुरं) दुःखीने (अवलंबिज्जइ) अवलंबन आपीये. (एस) आ (उवएसो) उपदेश

(विउसाणं) विद्वानोनो छे ॥ ७ ॥

को वि न अप्रत्थिजाइ, किज्जइ कस्स वि न पत्थणाजंगो। दीणं न य जंपिज्जइ, जिविज्जइ जाव जीअलोए ॥ ८ ॥

अर्थ–(को वि) कोईने पण(न अप्रत्थिजाइ) अभ्यर्थना–प्रार्थना करीये नहीं. (कस्स वि) कोइनो (पत्थणाजंगो) प्रार्थनानो जंग (न किज्जइ) न करीये. (य) वली (दीणं) दीन वचन (न जंपिज्जइ) न बोलीये. (जाव) ज्यां सुधी (जीअलोए) जीवलोकने विषे (जिविज्जइ) जीवीये त्यां सुधी ॥ ८ ॥

अप्पा न पसंसिज्जइ, निंदिज्जइ दुज्जणो वि न कया वि ॥ बहु बहुसो न हसिज्जइ, ल-प्नइ गुरुअत्तणं तेण ॥ ए ॥

अर्थ–(कया वि) कदापि (अप्पा) आत्मानी (न पसंसिज्जइ) प्रशंसा न करीये. (दुज्जणो वि) दुर्जननी पण (न निंदिज्जइ) निंदा न करीये. (बहु) घणुं (बहुसो)

घणी वार (न हसिज्जइ) न हसीये. (तेण) तेथी करीने (गुरुयत्तणं) मोटाईपणुं (लहइ) पामीये. ॥ ९ ॥

रिउणो न वीससिज्जइ कया वि वंचिज्जए न वीसत्थो ॥ न कयग्घेहिं हविज्जइ एसो नायस्स नीसंदो ॥ १० ॥

अर्थ-(रिउणो) शत्रुनो (न वीससिज्जइ) विश्वास न करीये. (कया वि) कदापि (वीसत्थो) विश्वासुने (न वंचिज्जए) छेतरीये नहि. (कयग्घेहिं) कृतघ्न एटले कर्या कामना हणनारा (न हविज्जइ) न थईये. (एसो) आ (नायस्स) न्यायनो (नीसंदो) मार्ग छे. ॥ १० ॥

रंचिज्जइ सुगुणेसु, बज्झइ रागो न नेहवज्जेसु ॥ किज्जइ पत्त परिक्खा, दक्खाण इमो श्र कुलवट्टो ॥ ११ ॥

अर्थ-(सुगुणेसु) सारा गुणीने विषे (रंचिज्जइ) राजी थईये. (नेहवज्जेसु) साचा

स्नेह रहित पुरुषोने विषे (राउं) राग (न धज्झइ) न बांधीये. (पत्तपरिक्खा) पात्रनी परीक्षा (किज्जइ) करीये. (इमो अ) था ज (दरकाए) माहा पुरुषोनी (कसवट्टो) कसोटीनो पछर छे. ॥ ११ ॥

नाकज्जमायरिज्जइ, अप्पा पाडिज्जाए न व-यणिज्जे॥ न य साहसं चइज्जइ, उन्निज्जइ तेण जगहच्छो ॥ १२ ॥

अर्थ-(अकज्जं) अकार्यने (न आय-रिज्जइ) आचरीये अथवा आदरीये नहीं. (अ-प्पा) आत्माने (वयणिज्जे) निंद्य वचनादिक-मां (न पाडिज्जए) न पाडीये. (य) वळी (साहसं) साहस [साहसिकपणा] ने (न चइज्जइ) न तजीये. (तेण) तेथी (जगहच्छो) जगतमां हाथ (उन्निज्जइ) उनो राखीये ॥१२॥

वसणे वि न मुज्झिज्जइ, मुयइ माणो न नाम मरणे वि ॥ विहवक्खए वि दिज्जइ, वयम-मियाणं मृ धीराणं ॥ १३ ॥

अर्थ-(वसणे वि) व्यसन-दुखमां पण (न मुज्झिज्जइ) न मुंझाइए, (मरणे वि) मरण थाय तो पण (नाम) कोमल आमंत्रणने विषे छे. (माणो) धर्मनुं बहुमान (न मुचइ) न मूकीये. (विहवरक्खए वि) लक्ष्मीनो क्षय थये छते पण (दिज्जइ) दान दईये. एवुं (धीराणं) धीर पुरुषोनुं (असिधारं) खड्गनी धार जेवुं (वयं) व्रत छे (खु) निश्चे ॥१३॥

अइनेहो न वहिज्जइ रूसिज्जइ न य पिये वि पयदिअहं । वत्थारिज्जइ न कली, जलंजली दिज्जइ छुहाणं ॥ १४ ॥

अर्थ-(अइनेहो) अति स्नेह (न वहिज्जइ) न वहन करीये-न धरीये. (य) वली (पियेवि) प्रिय माणस उपर पण (पइदिअहं) निरंतर (न रूसिज्जइ) रोष न करीये. (कली) कजीयो [न वत्थारिज्जइ] वधारीये नहीं. ए रीते [छुहाणं] दुःखोने [जलंजली] जलांजली दइए ॥ १४ ॥

न कुसंगेण वसिज्जइ, बालस्स वि घिप्पए हिअं वयणं ॥ अनयाउ निवट्टिज्जइ न होइ वयणिज्जया एवं. ॥ १५ ॥

अर्थ–[कुसंगेण] कुसंगीनी साथे [न वसिज्जइ] न वसीये, [बालस्स वि] बालकनुं पण (हिअं) हितकारी [वयणं] वचन [घिप्पए] ग्रहण करीये, [अनयाउ] अन्यायथी [निवट्टिज्जइ] निवर्तन पामीये, [एवं] एम करवाथी [वयणिज्जया] वचनीयता एटले निंदा [न होइ] न होय ॥ १५ ॥

विहवे वि न मचिज्जइ, न विसीइज्जइ असंपयाए वि ॥ वट्टिज्जइ समभावे, न होइ रणरणइ संतावो ॥ १६ ॥

अर्थ–(विहवे वि) वैभवने विषे पण (न मचिज्जइ) न माचीये–न गर्व करीये, (असंपयाए वि) संपत्ति रहितपणामां पण (न विसीइज्जइ) विषाद–खेद न करीये, (समभावे) समभावने विषे (वट्टिज्जइ) व-

मीये. तो (रणरणइ) सारा माठा योगमां (संतावो) संताप (न होइ) न होय ॥ १६ ॥

वन्निज्जइ भिच्चगुणो, न परुक्कं न य सुअ्स पच्चक्कं ॥ महिला ज नोजया वि हु, न न-स्सए जेण माहप्पं ॥ १७ ॥

अर्थ–[भिच्चगुणो] भृत्य-चाकरना गुण [परुक्कं] परोक्षपणे [न वन्निज्जइ] न वखाणीये. [य] वली [सुअस्स] पुत्रना गुण [पच्चक्कं] प्रत्यक्षपणे [न] न वखाणीये. [उ] परंतु [महिला] स्त्रीना गुण [उजया वि] बन्ने प्रकारे पण-परोक्ष के प्रत्यक्षपणे पण [न] व-खाणीये [हु] निश्चे. [जेण] जेथी [माहप्पं] पोतानुं माहात्म्य-मोटाईपणुं [न नस्सए] नाश न पामे. ॥ १७ ॥

जंपिज्जइ पिअवयणं, किज्जइ विणओ अ दिज्जए दाणं ॥परगुणगहणं किज्जइ, अमूलमंतं वसीकरणं ॥ १८ ॥

अर्थ–[पिअवयणं] प्रिय वचन [जंपि-

ज्जई] बोलीये. [विणउं] विनय करीयें. (दाणं) दान (दिज्जए) दईए. (अ) वली. (परगुणगहणं) परना गुणनुं ग्रहण (किज्जइ) करीये. ए (अमूलमंतं) अमूल्य मंत्र (वसीकरणं) वशीकरणनो छे ॥ १८ ॥

पत्थावे जंपिज्जइ, सम्माणिज्जइ खलोवि बहुमज्झे ॥ नज्जइ सपरविसेसो, सयलच्छा तस्स सिज्झंति ॥ १९ ॥

अर्थ–(पत्थावे) परतावे-योग्य समये (जंपिज्जइ) बोलीये. (बहुमज्झे) घणा माणसोनी मध्ये (खलो वि) खल माणसनुं पण (संमाणिज्जइ) सन्मान करीये. (सपरविसेसो) पोतानो अने परनो विशेष–भेद (नज्जइ) जाणीये. तो (तस्स) ते माणसने(सयलत्था)सकल अर्थो (सिज्झंति) सिद्ध थाय छे ॥१९॥

मंतंताण न पासे, गम्मइ नइ परगहे अवीएहिं ॥ पन्विन्नं पालिज्जइ, सुकुलीणत्तं हवइ एवं ॥ २० ॥

गुणेहिं नियगुणेहिं । न विम्हउं वहिज्जइ, बहुर-यणा जेणिमा पुहवी ॥ २२ ॥

अर्थ–[को वि] कोईने पण [न अवम-न्निज्जइ) अपमान न करीये (य) वळी (निय-गुणेहिं) पोताना (गुणेहिं) गुणोए करीने (-न गव्विज्जइ) गर्व न करीये [विम्हउं] विस्मय (न वहिज्जइ) न वहन करीये (जेण) जे कारण माटे (इमा) आ (पुहवी) पृथ्वी (बहुरयणा) बहु रत्नवाळी छे. ॥ २२ ॥

आरंभिज्जइ लहुअं, किज्जइ कज्ज महंत-मवि पच्छा ॥ न य उक्करिसो किज्जइ, लब्भइ गुरु-अत्तणं जेण ॥ २३ ॥

अर्थ–प्रथम (लहुअं) नानुं काम (आरं-भिज्जइ) आरंभ करीये (पच्छा) पछीथी (क-ज्जमहंतं) मोटुं कार्य (अवि) पण (किज्ज-इ) करीये (य) वळी (उक्करिसो) उत्कर्ष (न किज्जइ) न करीये (जेण) जेथी (गु-रुअत्तणं) गुरुत्व–मोटाई(लब्भइ) पामीये ॥२३॥

[सछाइं] स्वेछा थी (रमइ) रमे छे. ॥ २५॥

एअं पउमजिणेसर,–सूरिवयणगुंफरम्मिअं वहउ । नवजणो कंठगयं, विउलं उवएसमा-लमिणं ॥ २६ ॥

अर्थ–[एअं] ए प्रकारे [पउमजिणेसर-सूरिवयणगुंफरम्मिअं] पद्म जिनेश्वर सूरिना वचननी रचनावडे करीने रमणिक एवी [वि-उलं] विस्तीर्ण (इणं) आ [उवएसमालं] उपदेशमालाने [नवजणो] नव्य जन [कं-ठगयं] कंठगत [वहउ] वहन करो अर्थात कंठे धारण करो. ॥ २६ ॥ इति ॥

॥ इति उपदेशरत्नकोशः समाप्तः ॥



प्रभो विज्ञपयामि किंचित् ॥ २ ॥

अर्थ-(जगत्त्रयाधार] त्रण जगत्ना आधारभूत एवा वळी (कृपावतार) कृपाने माटे छे अवतार एटले जन्म जेनो एवा वळी (दुर्वारसंसारविकारवैद्य) दुःखे करी वारी शकाय एवा संसारना विकारनो नाश करवामां वैद्य समान वळी [विज्ञ] विशेष ज्ञानवंत एवा [श्रीवीतरागप्रभो] हे वीतराग प्रभु ! [त्वयि] तमारे विषे (मुग्धभावात्) मुग्धपणा थकी [किंचित्] कांईक [विज्ञपयामि] हुं विनंति करुं छुं ॥ २ ॥

किं बाललीलाकलितो न बालः, पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः । तथा यथार्थं कथयामि नाथ, निजाशयं सानुशयस्तवाग्रे ॥ ३ ॥

अर्थ-(बाललीलाकलितः) बालकनी क्रीडाए करीने युक्त अने (निर्विकल्पः) विकल्प रहित एवो [बालः] बालक [पित्रोः] मा बापनी [पुरः] पासे सत्य वचनने (किं) शुं

दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो, दुष्टेन लोभाख्यमहोरगेण । ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण माया-जालेन बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वाम् ॥ ५ ॥

अर्थ–हुं [क्रोधमयेन] क्रोध रूपी [अग्निना] अग्निवडे [दग्धः] बळेलो [अस्मि] छुं. वली [दुष्टेन] दुष्ट एवा (लोभाख्यमहोरगेण) लोभ नामना मोटा सर्पवडे [दष्टः] डंखाएलो छुं. वली (अभिमानाजगरेण)अभिमान रूपी अजगरवडे [ग्रस्तः] गळाएलो छुं. वली (मायाजालेन) माया रूपी जाळवडे (बद्धः) बंधायेलो छुं. तेथी [त्वां] तमने (कथं) शी रीते [भजे] हुं भजुं ? ॥ ५ ॥

कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि लोकेश सुखं न मेऽभूत् । अस्मादृशां केवलमेव जन्म, जिनेश जज्ञे भवपूरणाय ॥ ६ ॥

अर्थ–(लोकेश) हे लोकना ईश! (मया) में [अमुत्र] परलोकने विषे [च] तथा [इह] आ [लोकेऽपि] लोकने विषे पण [हितं] हि-

कारी कार्य [न कृतं] कर्युं नथी, तेथी [मे] मने [सुखं] सुख (न अजूत) न थयुं. तो [जिनेश] हे जिनेश ! [अस्मादृशां] अमारा जेवानो (जन्म) जन्म [केवलं) केवळ (जवपूरणाय एव) जवोने पूरण करवा माटे ज (जज्ञे) थयो छे. ॥ ६ ॥

मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्त, त्वदास्यपीयूषमयूखलाजात्। द्रुतं महानंदरसं कठोर,-मस्मादृशां देव तदश्मतोऽपि ॥ ७ ॥

अर्थ–[मनोज्ञवृत्त] सुंदर छे आचरण जेनुं एवा (देव) हे देव ! (यत्) जे कारण माटे [अस्मादृशां] अमारा जेवानुं (मनः) मन (त्वदास्यपीयूषमयूखलाजात्) तमारा मुखरूपी चंद्रना लाजथी (महानंदरसं) मोटा आनंदना रसने [न द्रुतं] द्रव्युं नहीं [तत्] ते कारण माटे अमारुं मन (अश्मतोऽपि) पत्थरथी पण (कठोरं) कठोर छे एम (मन्ये) हुं मानुं छुं. ॥ ७ ॥

त्वत्तः सुदुष्प्राप्यमिदं मयाप्तं, रत्नत्रयं भूरिभवभ्रमेण । प्रमादनिद्रावशतो गतं तत्, कस्याग्रतो नायक ! पूत्करोमि ॥ ८ ॥

अर्थ–(मया) मे (भूरिभवभ्रमेण) घणा भवमां भ्रमण करवाए करीने (त्वत्तः) तमारा थकी (इदं) आ [सुदुष्प्राप्यं] अति दुष्प्राप्य (रत्नत्रयं) रत्नत्रयीने (आप्तं) मेळवी हती (तत्) ते (प्रमादनिद्रावशतः) प्रमाद अने निद्राना वशथी (गतं) जती रही तो (नायक) हे नायक ! (कस्य) कोनी [अग्रतः] आगळ (पूत्करोमि) हुं पोकार करुं ? ॥ ८ ॥

वैराग्यरंगः परवंचनाय, धर्मोपदेशो जनरंजनाय । वादाय विद्याध्ययनं च मेऽभूत, कियद्ब्रुवे ? हास्यकरं स्वमीश ! ॥९॥

अर्थ–(मे) मारो (वैराग्यरंगः) वैराग्यनो रंग (परवंचनाय) परने ठगवा माटे (धर्मोपदेशः) धर्मनो उपदेश (जनरंजनाय) लोकने रंजन करवा माटे (च) अने (विद्याध्ययनं)

विद्यानो अभ्यास (वादाय) वाद विवादने माटे (अभूत्) थयो. (ईश) हे ईश! [खं] मारुं-पोतानुं [हास्यकरं] हास्यकारक-कृत्यादिक (कियत्) केटलुंक [ब्रुवे] कहुं? ॥ ए ॥

परापवादेन मुखं सदोषं, नेत्रं परस्त्रीजन-वीक्षणेन। चेतः परापायविचिंतनेन, कृतं जविष्यामि कथं विभोऽहम् ॥ १० ॥

अर्थ–में (परापवादेन) परनिंदावमे (मुखं) मुखने, [परस्त्रीजनवीक्षणेन] परनी स्त्रीओने जोवावडे (नेत्रं) नेत्रने, (परापायविचिंतनेन) परनुं मातुं चिंतववावमे (चेतः) चित्तने [सदोषं] दोषवाळुं (कृतं) कर्युं, तो (विभो) हे विभो! [अहं] हुं (कथं) शी रीते (जविष्यामि) थईश?--मारुं शुं थशे? ॥ १० ॥

विमंवितं यत्स्मरघस्मरार्ति,—दशावशास्त्वं विषयान्धलेन। प्रकाशितं तद्भवतो ह्रियेव, स-र्वज्ञ! सर्वं स्वयमेव वेत्सि ॥ ११ ॥

अर्थ–(विषयांधलेन) विषयोमां अंध

थयेला एवा में (स्मरघस्मरातिदशावशात्) कामदेव रुपी जन्तकनी पीडानी दशाना वशथी (यत्) जे (स्वं) मारा आत्माने [विडंबितं] विडंबना पमाडी (तत्) ते [नवतः] आपनी पासे (ह्रिया एव) लज्जाथी ज [प्रकाशितं] में प्रकाश कर्युं छे. केमके (सर्वज्ञ) हे सर्वज्ञ! (स्वयमेव) तमे पोते ज [सर्वं] सर्व (वेत्सि) जाणो छो. ॥ ११ ॥

ध्वस्तोऽन्यमंत्रैः परमेष्ठिमंत्रः, कुशास्त्रवाक्यै-र्निहतागमोक्तिः । कर्तुं वृथा कर्म कुदेवसंगा-द-वांछि ही नाथ मति भ्रमो मे ॥ १२ ॥

अर्थ–में (अन्यमंत्रैः) बीजा मंत्रोए करीने [परमेष्ठिमंत्रः] परमेष्ठि मंत्र (ध्वस्तः) नाश पमाड्यो–अवगणना करी, (कुशास्त्रवाक्यैः) कुशास्त्रनां वाक्योये करीने [आगमोक्तिः] आगमनां वचनो [निहता] हणी नांख्यां ढांकी दीधां अर्थात् न सांजल्यां अने [कुदेवसंगात्] कुदेवना संगथी (कर्म) कर्मने (वृथा) फोगट (कर्तुं) करवाने (अवांछि)

थांछयुं, ते सर्व [नाथ] हे नाथ ! (मे) मारो (मतिभ्रमः) मतिनो विभ्रम थयो छे [हि] निश्चे.

विमुच्य दृग्लक्ष्यगतं भवंतं, ध्याता मया मूढधिया हृदन्तः । कटाक्षवक्षोजगभीरनाभी,-कटीतटीयाः सुदृशां विलासाः

अर्थ–(मूढधिया) मूढ बुद्धिवाळा (मया) में [दृग्लक्ष्यगतं] दृष्टि लक्ष्यमां आवेला एवा (भवन्तं) आपने [विमुच्य] मूकीने (हृदन्तः) हृदयमां (सुदृशां) स्त्रीयोना (कटाक्षवक्षोजग-भीरनाभीकटीतटीयाः) कटाक्ष, स्तन, गंभीर नाभी तथा कटी तटना (विलासाः) विलासोनुं (ध्याताः) ध्यान कर्युं छे. ॥ १३ ॥

लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन, यो मानसो रागलवो विलग्नः । न शुद्धसिद्धांतपयोधि-मध्ये, धौतोऽप्यगात्तारक ! कारणं किम् ? ॥१४॥

अर्थ–(लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन) चपल नेत्रवाळी स्त्रीयोनां मुख जोवाथी (मानसो) मन संबंधि [यः] जे (रागलवः) रागनो

किं वा मुधाऽहं बहुधा सुधाभुक्, पूज्य त्वदग्रेचरितं स्वकीयम् । जल्पामि यस्मात्त्रिजगत्स्वरूप, निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ॥२४॥

अर्थ–(वा) अथवा तो (सुधाभुक्पूज्य) हे देवोना पूज्य ! अथवा हे देव ! हे पूज्य ! [त्वदग्रे] तमारी पासे (अहं) हुं (स्वकीयं) मारुं पोतानुं (चरितं) चरित्र (बहुधा) बहु प्रकारे (मुधा) फोगट (किं) शुं (जल्पामि) कहुं ? (यस्मात्) जे कारण माटे [त्वं] तमे [त्रिजगत्स्वरूपनिरूपकः] त्रण जगतना स्वरूपनुं निरूपण करनारा छो, अथवा हे त्रण जगतना स्वरुपवाळा ! सर्वज्ञ छो, तेथी (अत्र) अहि–तमारे विषे (एतद्) आ–मारुं चरित्र (कियत्) शुं मात्र छे ? ॥२४॥

दीनोद्धारधुरंधरस्त्वदपरो नास्ते मदन्यः कृपा–पात्रं नात्र जने जिनेश्वर तथाप्येतां न याचे श्रियम् । किं त्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिवं, श्रीरत्नाकर! मंगलैकनिलय! श्रेयस्करं प्रार्थये ॥२५॥

अर्थः-(जिनेश्वर) हे जिनेश्वर ! (त्वदपरः) तमाराथी बीजो कोइ (दीनोद्धारधुरंधरः] दीन लोकनो उद्धार करवामां धुरंधर (नास्ते) नथी, अने (मदन्यः) माराथी बीजो कोई (अत्र) आ (जने) लोकमां (कृपापात्रं) कृपानुं पात्र (न) नथी, (तथापि) तो पण (एतां) आ-प्रत्यक्ष (श्रियं] लक्ष्मी धनने [न याचे) हुं मागतो नथी. (किं तु) परंतु (श्री रत्नाकर) हे मोक्ष लक्ष्मीना सागर समान अने (मंगलैकनिलय) मंगलना अद्वितीय स्थान रूप एवा (अहो अर्हन्) हे अर्हन् देव ! (केवलं) फक्त (इदं) आ [शिवं] मोक्ष फळ आपनार अने (श्रेयस्करं) कल्याणकारी (सद्बोधिरत्नं) सारा बोधि रत्न-सम्यक्त्वनी (एव] ज (प्रार्थये) हुं प्रार्थना करूंछुं. आ श्लोकमां "श्री रत्नाकर" शब्दवडे स्तुति कर्त्ताए पोतानुं " रत्नाकर सूरि " एवुं नाम पण सूचव्युं छे.

॥ इति श्रीरत्नाकरपञ्चविंशतिका समाप्ता ॥

शुद्धिपत्रिका.

पृष्ठाङ्क.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३७	१०	चार शुइ एटले	चार शुइ अथवा
५५	६	अप्पडिहयवराण	अप्पडिहयवरना
७५	१३	वीरथुइ	वीरथुई
११३	४	ग बीअं	दुगि बीअं
१४२	८	तेन	तेने
१५५	१९	उड्डपप्कोड	उड्डपप्फोड
१६६	१५	षद्द	षद
१६६	१७	बुद्धिये	बुद्धिये
१७२	१४	तिछयराण	तित्थयराण
१८८	७	बाहिर्दिशी	बाहिर्दिशीथी
१८९	१२	पाण	पाणी
१९६	१	सज्झाओ	सज्झाओ
२०५	६	ते शिक्षाव्रता—	ते गुणव्रत शिक्षाव्रता
२०८	११	चउविहार ममुख करीये,	अनशन करिये,
२२५	७	द्विविधाहार	द्विविधाहार
२७८	९	जलल्लपासिय	जलल्लप्पासिय
३०२	१६	भागामांहेथी	भांगामांहेथी
”	”	मागे	भांगे
३०७	५	मल	मूल
३११	१६	सुरेंद्रदत्तना	समुद्रदत्तना
३१२	१	माता छुं	माता कमलानामे छुं
३१६	१४	कथा	गाथा
३२६	१८	सिचारं	सिचारं